नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 325, नई दिल्ली, शनिवार 24 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन में वही व्यक्ति दुखी है जो ख़ाली है काम मैं व्यस्त रहो और मस्त रहो।

02 व्यक्ति का संयमित जीवन और स्वास्थ्य

06 वाइफ स्वैपिंग' और हमारे रिश्तों की टूटती नींव: समाज का आईना

08 झारखंड की फर्जी कंपनी मनीष इंटरप्राइज ने की 39 करोड़ रू की टैक्स की चोरी

अब नहीं थकाएगा सफर... आनंद विहार नमो भारत स्टेशन पर मिलेंगी प्रीमियम सुविधाएं

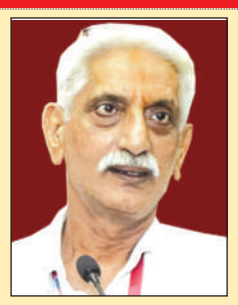

लेखक:- संजय कुमार बाठला
परिवहन नीति और सार्वजनिक हित मामलों पर विशेषज्ञ पत्रकार। पिछले एक दशक से सड़क सुरक्षा, स्वच्छ परिवहन और तकनीकी नवाचार से जुड़ी नीतियों पर गहन विश्लेषण और रिपोर्टिंग करते हैं।

एनसीआर ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन आनंद विहार नमो भारत स्टेशन पर यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाएं विकसित कर रहा है। इसमें 30 पॉड्स वाला पॉड होटल, प्रीमियम डाइनिंग रेस्टोरेंट, फूड आउटलेट और अन्य व्यावसायिक सुविधाएं शामिल होंगी। यह पहल व्यस्त मल्टी-मॉडल ट्रांजिट हब पर यात्रियों को आराम और सुविधा प्रदान करेगी, खासकर लंबी दूरी की यात्रा करने वालों के लिए। इससे समय और मेहनत दोनों की बचत होगी।

परिवहन विशेष न्यूज

पूर्वी दिल्ली। एनसीआर ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन (एनसीआरटीसी) ने दिल्ली-मेरठ नमो भारत कारिडोर के आनंद विहार स्टेशन पर यात्री सुविधाओं को और बेहतर बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। स्टेशन परिसर में आधुनिक पाड होटल, फाइन डाइनिंग रेस्टोरेंट और अन्य यात्री-केंद्रित कमर्शियल सुविधाएं विकसित की जाएंगी।

इस योजना के अंतर्गत स्टेशन के भीतर 30 पाड्स की क्षमता वाला अत्याधुनिक पाड होटल बनाया जाएगा। यह होटल विशेष रूप से उन यात्रियों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है जो यात्रा के दौरान कुछ समय आराम करना चाहते हैं।

आनंद विहार जैसे अत्यधिक व्यस्त मल्टी-माडल ट्रांजिट हब पर यह सुविधा यात्रियों के लिए काफी उपयोगी साबित होगी। मेरठ से नमो भारत ट्रेन द्वारा दिल्ली पहुंचने वाले और आगे लंबी दूरी की ट्रेन पकड़ने वाले यात्री स्टेशन परिसर में ही आराम कर सकेंगे, जिससे समय और मेहनत दोनों की बचत होगी।

प्रीमियम डाइनिंग रेस्टोरेंट भी बनेगा

परियोजना के तहत लगभग 4,000 वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र को प्रापर्टी डेवलपमेंट के लिए लाइसेंस पर दिया गया है। यह क्षेत्र स्टेशन के विभिन्न लेवल पर चार अलग-अलग स्थानों में फैला होगा, ताकि यात्रियों की आवाजाही वाले हिस्सों में सुविधाओं का बेहतर एकीकरण किया जा सके।

पाड होटल के अलावा यहां एक प्रीमियम डाइनिंग रेस्टोरेंट विकसित करने की योजना है। साथ ही फूड रिटेल आउटलेट, आफिस स्पेस, कपड़ों के शोरूम और अन्य कमर्शियल सुविधाएं भी प्रस्तावित हैं।

आनंद विहार नमो भारत स्टेशन एनसीआर का प्रमुख मल्टी-माडल ट्रांजिट हब है, जहां दिल्ली मेट्रो की पिंक और ब्लू लाइन, आनंद विहार रेलवे स्टेशन और दो अंतर्राज्यीय बस टर्मिनल सीधे जुड़े हुए हैं।

दिल्ली MCD को मिला नया कमिश्नर, संजीव खिरवार नियुक्त

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली नगर निगम (MCD) को नया कमिश्नर मिल गया है। 1994 बैच के आईएएस अधिकारी संजीव खिरवार को दिल्ली नगर निगम का नया कमिश्नर नियुक्त किया गया है। वे इस पद पर अश्विनी कुमार की जगह कार्यभार संभालेंगे। संजीव खिरवार इससे पहले विभिन्न प्रशासनिक पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। वर्ष 2022 में वे प्रयागराज स्टेडियम में कुत्ता टहलाने से जुड़े एक विवाद के कारण चर्चा में आए थे, जिसके बाद उनका तबादला कर दिया गया था।

अब संजीव खिरवार के सामने दिल्ली नगर निगम से जुड़ी प्रशासनिक और विकासात्मक चुनौतियों को संभालने की बड़ी जिम्मेदारी होगी। उनसे नगर निगम की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने की उम्मीद की जा रही है।

यातायात नियमों को प्रति जागरूकता के लिए छात्रों द्वारा निकाली गई रैली

परिवहन विशेष न्यूज

यातायात नियमों के प्रति सड़क पर चलते समय रहे जागरूक रहें वाहन चालक, एआरटीओ सतेंद्र कुमार सिंह

स्काउट गाइड का बैंड रहा आकर्षण का केंद्र मथुरा सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा माह 2026 के अंतर्गत आज जैन चौरासी इंटर कॉलेज मथुरा के छात्र-छात्राओं के द्वारा लोगों में यातायात नियमों के प्रति जागरूकता लाने की उद्देश्य से रैली निकाली गई।

इस रैली का शुभारंभ एआरटीओ सतेंद्र कुमार सिंह (प्रवर्तन) मथुरा के द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। रैली डेविल नगर, हरी नगर, कृष्णा नगर, कृष्णा नगर मार्केट से होते हुए जैन चौरासी इंटर कॉलेज मथुरा पर समाप्त हुई।

रैली में स्काउट गाइड के बच्चों के द्वारा बैंड के साथ लोगों में जागरूकता लाने के उद्देश्य से गगन भेदी नारों के साथ बैनर पोस्टर लेकर हाथों में चल रहे थे। एआरटीओ सतेंद्र कुमार सिंह (प्रवर्तन) ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा हमारे देश में हर साल यातायात नियमों के पालन न करने पर सड़क हादसों में लाखों लोगों की जान चली जाती हैं किसी के साथ ऐसा ना हो उसके लिए आप अपने परिवार को भी जागरूक रखें और इस रैली के माध्यम से लोगों को भी जागरूक करे।

यह अभियान आपके द्वारा लगातार चलना चाहिए जिससे सड़क हादसों में कमी लाई जा सके। जैन चोरासी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य निखिल अग्रवाल ने कहा है आज के समय में हर व्यक्ति को यातायात नियमों का पालन करना चाहिए जिससे सड़क पर चलते समय अपने आप को सुरक्षित करने के साथ दूसरे लोगों को भी सुरक्षित रखा जा सके।

रैली के आयोजक बृज यातायात एवं पर्यावरण समिति के संस्थापक अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने कहा बच्चों के द्वारा आज निकलवाई गई रैली के माध्यम से आम जनमानस को इस अभियान से जोड़ा गया है। जब भी वह सड़क पर चले यातायात नियमों के पालन के साथ जागरुक होकर चलें जिससे सड़क हादसों में किसी की जान माल का नुकसान ना हो आगे भी इस तरह के अभियान समय-समय पर चलाए जाएंगे। रैली में बजेश शर्मा, गुंजन चौवे, अर्जुन कुमार, रहे मुख्य रूप से शामिल।

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

बेजुबानों पर जुल्म और सभ्यता की कसौटी- तेलंगाना में आवारा कुत्तों की हत्याएं,कानून,करुणा और भारतीय लोकतंत्र की आत्मा पर सवाल

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर ईश्वर, अल्लाह,गॉड नाम भिन्न हो सकते हैं, लेकिन सृष्टि का मूल भाव एक है,जीवन। भारतीय दर्शन में कहा गया है कि सृष्टि में 84 लाख योनियाँ हैं और प्रत्येक योनि का अपना एक विशिष्ट उद्देश्य, संतुलन और महत्व है। मानव को इस सृष्टि में सबसे बुद्धिजीवी प्राणी इसलिए माना गया क्योंकि उसे सोचने,समझने निर्णय लेने और करुणा दिखाने की क्षमता दी गई। किंतु जब यही मानव अपनी सुविधा,भय यास्वार्थ के लिए अन्य जीवों के जीवन का अंत करने लगे,तब सवाल केवल कानून का नहीं, बल्कि सभ्यता,नैतिकता और मानवता का बन जाता है पिछले कुछ दिनों से तेलंगाना, विशेष रूप से हैदराबाद और यादाराम गांव से सामने आ रही आवारा कुत्तों की सामूहिक हत्याओं की घटनाएं केवल पशु क्रूरता का मामला नहीं हैं, बल्कि यह भारतीय समाज के भीतर बढ़ती असहिष्णुता, प्रशासनिक विफलता और संवेदनहीनता का भयावह संकेत हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि प्रकृति में कोई भी जीव अनावश्यक नहीं है।कुत्ते,बिल्ली हाथी,घोड़े ये सभी केवल पालतू या आवारा प्राणी नहीं,बल्कि जैविक संतुलन की महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं।कुत्ते चूहे जैसे रोग वाहक जीवों की संख्या नियंत्रित करते हैं, इलाके की सुरक्षा का संकेत देते हैं और मनुष्य के सबसे पुराने साथी रहे हैं।विडंबना यह है कि जो मानव प्रकृति कारक्षक होना चाहिए था,वही आज सबसे बड़ा भक्षक बनता जा रहा है।जनवरी २०२६ से अब तक तेलंगाना में ५०० से अधिक कुत्तों की हत्या की खबरें सामने आ चुकी हैं।ताजा मामलों में यादाराम गांव में लगभग100 कुत्तों को जहर देकर मार दिया गया,जबकि इससे पहले भी कई इलाकों में सामूहिक मौतें रिपोर्ट की गई थीं।पशु चिकित्सा विशेषज्ञों ने स्ट्राइकिन इंजेक्शन के उपयोग का संदेह जताया है, एक ऐसा न्यूरोटॉक्सिन, जो कुछ ही मिनटों में कुत्ते को भीषण ऐंठन, असहनीय पीड़ा और श्वसन विफलता के जरिए मौत की ओर धकेल देता है। यह तरीका न केवल अमानवीय है, बल्कि गैरकानूनी और आपराधिक भी है।

साथियों बात अगर हम भारत में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम, 1960 के तहत स्ट्राइकिन का उपयोग पूर्णत:प्रतिबंधित है, इसको समझने की करें तो इसके बावजूद यदि यह जहर खुलेआम इस्तेमाल हो रहा है,तो सवाल उठता है, क्या यह केवल कुछ व्यक्तियों की क्रूरता है या प्रशासनिक मिलीभगत और लापरवाही ?किसी भी पंचायत, सरपंच या स्थानीय निकाय को कुत्तों को मारने का अधिकार नहीं है।यदि ऐसा किया गया है, तो यह सीधा-सीधा क्रिमिनल एक्ट है। साथियों बातें कर हम बच्चे पर हमला:भय बनाम समाधान की राजनीति इसको समझने की करें तो हैदराबाद के सुराराम मार्केट मस्जिद के पास एक गली में आवारा कुत्तों द्वारा पांच वर्षीय बच्चेपर हमला हुआ, बच्चा घायल हुआ,उसेअस्पताल ले जाया गया। यह घटना गंभीर और चिंताजनक है और इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता।लेकिन प्रश्न यह है,क्या एक घटना का समाधान 100 कुत्तों को मार देना है ?क्या भय का जवाब जहर और हत्या हो सकता है ?सभ्य समाज में समाधान भावनात्मक उन्माद से नहीं, बल्कि वैज्ञानिक, कानूनी और मानवीय नीति से निकलता है। साथियों बात अगर हम सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी और राज्यों की जवाबदेही को समझने की करें तो 13 जनवरी को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वह राज्यों की जवाबदेही तय करेगा,आवारा कुत्तों को खाना खिलाने वालों की भूमिका पर भी विचार करेगा पीड़ितों को मुआवजा देने के निर्देश दे सकता है।न्यायालय ने यह भी माना कि पिछले पांच वर्षों में एनिमल बर्थ कंट्रोल नियमों का बेहद खराब क्रियान्वयन हुआ है। यानी समस्या कुत्तों की नहीं,शासन की असफलता की है।

साथियों बात अगर हम इस मुद्दे पर कानूनी स्थिति: क्या कुत्तों को मारना वैध है ? इसको समझने की करें तो स्पष्ट और निर्विवाद उत्तर नहीं।किसी भी स्वस्थ कुत्ते को मारना अपराध है,केवल गंभीर रूप से बीमार या रेबीज-ग्रस्त कुत्तों को ही,पशु चिकित्सक की सलाह से मानवीय इच्छामृत्यु दी जा सकती है इसके अलावा हर हत्या पशु क्रूरता निवारण अधिनियम और भारतीय न्याय संहिता के तहत दंडनीय अपराध है।यादाराम मामला:लोकतंत्र के नाम पर हिंसा-यादाराम गांव में आरोप है कि सरपंच ने चुनावी वादे निभाने के लिए कुत्तों को जहर दिलवाया। यह घटना लोकतंत्र की आत्मा पर तमाचा है। यदि जनप्रतिनिधि ही कानून तोड़ेंगे, तो आम नागरिक से संवेदनशीलता की उम्मीद कैसे की जा सकती है ?पुलिस द्वारा सरपंच, सचिव और अन्य पर केस दर्ज होना स्वागतयोग्य कदम है, लेकिन सवाल यह है,क्या यह कार्रवाई मिसाल बनेगी या केवल औपचारिकता रह जाएगी ? सुप्रीम कोर्ट और केंद्र सरकार दोनों ने स्पष्ट किया है कि एनिमल बर्थ कंट्रोल ही एकमात्र समाधान है इसके अंतर्गतकुत्तों की नस, बंदीरेबीज टीकाकरण इलाके में वापस छोड़ना यह मॉडल न केवल कुत्तों की संख्या नियंत्रित करता है, बल्कि मानव-पशु संघर्ष को भी कम करता है।दुनियाँ के कई देशों में यह मॉडल सफलता पूर्वक लागू है।

साथियों बात अगर हम डॉग लवर्स नहीं, डॉग राइट्स एक्टिविस्ट इसको समझने की करें तो अक्सर डॉग लवर्स शब्द को व्यंग्य की तरह इस्तेमाल किया जाता है, जबकि सच यह है कि ये लोग कानून और करुणा के रक्षक हैं। यही कार्यकर्ता हत्याओं को उजागर कर रहे हैं,पुलिस में शिकायत दर्ज करा रहे हैं,सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दायर कर रहे हैं यदि ये आवाज़ें न हों, तो बेजुबानों की चीखें कभी दर्ज ही न हों। साथियों बात अगर हम इस विषय को अंतरराष्ट्रीय नजरिए से देखकर समझने की करें तो भारत की छवि पर असर पड़ता है।जब भारत विश्व गुरु, मानवाधिकार और करुणा आधारित सभ्यता की बात करता है, तब ऐसी घटनाएं हमारी वैश्विक छवि को गहरा नुकसान पहुंचाती हैं।संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय पशु अधिकार संगठन पहले से ही ऐसे मामलों पर नज़र रखते हैं।यह केवल कुत्तों का मामला नहीं है, यह सवाल है कि हम किस तरह का समाज बनना चाहते हैं अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार रिपोर्ट शैली तेलंगाना राज्य में जनवरी २०२६ से अब तक ५०० से अधिक आवारा कुत्तों की कथित सामूहिक हत्या मानवाधिकार और पशु कल्याण मानकों के गंभीर उल्लंघन को दर्शाती है। विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त सिद्धांत यह मानते हैं कि पशुओं के साथ किया गया संगठित और क्रूर व्यवहार सामाजिक हिंसा के व्यापक पैटर्न की चेतावनी होता है। रिपोर्टों के अनुसार, कुत्तों को प्रतिबंधित न्यूरोटॉक्सिन स्ट्राइकिन के माध्यम से मारा गया, जो भारत के घरेलू कानूनों के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय पशु कल्याण मानदंडों का भी उल्लंघन है। यह घटनाएं ऐसे समय पर सामने आई हैं जब भारत का सर्वोच्च न्यायालय आवारा पशुओं के मानवीय प्रबंधन, राज्य की जवाबदेही और पीड़ितों के मुआवजे पर विचार कर रहा है। इन मामलों में निर्वाचित स्थानीय प्रतिनिधियों की कथित संलिप्तता लोकतांत्रिक शासन, जवाबदेही और कानून के शासन पर गंभीर प्रश्न खड़े करती है, जो अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए भी चिंता का विषय है। अत:अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बेजुबानों की हत्या,इंसानियत की हार,तेलंगाना में जो हुआ, वह केवल 500 कुत्तों की मौत नहीं है,यह संविधान के मूल्यों, कानून के शासन और मानवीय करुणा की हत्या है।यदि हम आज बेजुबानों के लिए नहीं बोले,तो कल जब अन्याय किसी और पर होगा,तो आवाज उठाने वाला कोई नहीं बचेगा।सभ्यता की पहचान यह नहीं कि वह ताकतवर को कैसे बचाती है, बल्कि यह है कि वह सबसे कमजोर के साथ कैसा व्यवहार करती है।

-संकलनकर्ता लेखक- कर विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए (एटीसी)

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : आज के साइबर सुरक्षा विचार में हम क्रिप्टोकरेंसी चोरी—उसकी संरचना, प्रभाव और भारत में बढ़ते ख़तरे पर चर्चा करेंगे

पिंकी कुंडू

क्रिप्टोकरेंसी चोरी क्या है

क्रिप्टोकरेंसी चोरी का अर्थ है

* डिजिटल संपत्तियों (जैसे बिटकॉइन, एथेरियम, कार्डानो) का अवैध अधिग्रहण।
* पारंपरिक वित्तीय धोखाधड़ी से अलग,
* क्रिप्टो चोरी अपरिवर्तनीय होती है,
* ब्लॉकचेन पर सार्वजनिक रूप से दिखाई देती है, और
* अक्सर सीमाओं के पार अनट्रेस होती है।
* पीड़ित अपने चोरी हुए फंड को दूसरे वॉलेट में देख सकते हैं, लेकिन उन्हें वापस नहीं पा सकते।
* खुले अंकों में अपने चोरी हुए क्रिप्टो को देखना एक मनोवैज्ञानिक यातना बन जाता है।

ऑफशोर लॉन्डरिंग का अर्थ है क्रिप्टोकरेंसी या अन्य डिजिटल संपत्तियों को विदेशी (ऑफशोर) एक्सचेंजों और खातों के माध्यम से घुमाकर उनकी असली पहचान छिपाना।

यह तरीका अपराधियों को भारतीय कानून और नियामक एजेंसियों की पकड़ से बचने में मदद करता है।

केस उदाहरण

* हाल ही में एक दंपति — हेलेन और रिचर्ड (यूके) — जिन्होंने 7 वर्षों तक कार्डानो (ADA) में निवेश किया था, उनके लगभग $315,000 (₹2.6 करोड़) की चोरी हो गई। हैकर्स ने उनके क्लाउड स्टोरेज से वॉलेट की जानकारी चुरा ली। "वे अपने पैसे को ब्लॉकचेन पर देखते हैं, लेकिन उसे वापस पाने का कोई तरीका नहीं है।"

भारत में क्रिप्टो धोखाधड़ी का विस्फोट (2023–2025)

* मापदंड FY 2023–24, अप्रैल – नवंबर 2025
रिपोर्टेड धोखाधड़ी मामले 1,343 11,720
* सबसे अधिक प्रभावित आयु वर्ग — 20–40 वर्ष (82%)
* VDA उपयोगकर्ता — 3.4 करोड़
* कुल संपत्ति — ₹24,800 करोड़
* ऑफशोर निवेश — 41%

रुझान: दो वर्षों में धोखाधड़ी रिपोर्टों में 9 गुना वृद्धि।

* चिंता: ऑफशोर प्लेटफ़ॉर्म भारतीय अधिकार क्षेत्र से बाहर।

नियामक कदम: मार्च 2023 से सभी VDA सेवा प्रदाताओं को FIU के साथ PMLA के तहत पंजीकरण करना अनिवार्य।

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव

* पीड़ितों को दृश्य नुकसान का सामना करना पड़ता है: चोरी हुए फंड ब्लॉकचेन पर दिखते रहते हैं।
* अपरिवर्तनीयता और कानूनी उपायों की कमी से मानसिक आघात बढ़ता है।
* युवा निवेशक (20–40 वर्ष) सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

अपराधियों के सामान्य तरीके, तरीका विवरण

* क्लाउड हैकिंग क्लाउड/ईमेल में रखी वॉलेट जानकारी चोरी।
* फ़िशिंग और नकली ऐप्स उपयोगकर्ताओं को धोखा देकर जानकारी लेना।
* SIM स्वैपिंग मोबाइल नंबर हाइजैक कर 2FA को बायपास करना।
* मैलवेयर और की-लॉगर डिवाइस संक्रमित कर वॉलेट एक्सेस लेना।
* म्यूल अकाउंट्स फंड को ₹50–₹100 की सूक्ष्म ट्रांज़ैक्शन में बांटना।
* क्रिप्टो कन्वर्ज़न चोरी की संपत्ति को बिटकॉइन या प्राइवेसी कॉइन में बदलना।
* ऑफशोर लॉन्डरिंग फंड को विदेशी प्लेटफ़ॉर्म से गुजारना।

नागरिकों के लिए सुरक्षा उपाय

* दीर्घकालिक निवेश के लिए हार्डवेयर वॉलेट का उपयोग करें।
* वॉलेट की जानकारी कभी भी क्लाउड/ईमेल में न रखें।
* सभी खातों पर मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन सक्षम करें।
* केवल FIU-पंजीकृत प्लेटफ़ॉर्म पर निवेश करें।
* अज्ञात लिंक या ऐप्स से बचें।
• सॉफ़्टवेयर अपडेट और मैलवेयर स्कैन नियमित रूप से करें।

युवाओं को क्रिप्टो जोखिमों के बारे में शिक्षित करें।

संस्थागत उपाय

* म्यूल अकाउंट पैटर्न (₹50–₹100 ट्रांज़ैक्शन) की निगरानी करें।
* संदिग्ध NGO, कंसल्टेंसी, ट्रैवल एजेंसी खातों को चिन्हित करें।
* FIU और ब्लॉकचेन फॉरेंसिक फर्मों से समन्वय करें।
* क्रिप्टो-टू-कैश कन्वर्ज़न पॉइंट्स पर नज़र रखें।
* NCRP और CFCFRMS पोर्टल का उपयोग कर रिपोर्टिंग और फंड रिकवरी सुनिश्चित करें।

पीड़ितों के लिए प्रतिक्रिया प्रोटोकॉल

1. तुरंत NCRP (www.cybercrime.gov.in) पर रिपोर्ट करें।
2. साक्ष्य सुरक्षित रखें: वॉलेट एड्रेस, ट्रांज़ैक्शन हैश, स्क्रीनशॉट।
3. ब्लॉकचेन फॉरेंसिक विशेषज्ञों से संपर्क करें।
4. यदि फंड किसी एक्सचेंज पर पहुँचता है तो तुरंत अलर्ट करें।
5. किसी भी रिकवरी स्कैम से बचें।

जागरूकता संदेश

• "Crypto Visible ≠ Crypto Recoverable"
• "क्लाउड में वॉलेट = खतरा"
• "क्रिप्टो चोरी अपरिवर्तनीय है। रोकथाम ही सुरक्षा है।"

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

व्यक्ति का संयमित जीवन और स्वास्थ्य

पिंकी कुंडू

व्यक्ति का स्वस्थ्य जीवन इस बात का सूचक है कि भाग्य ने उसे एक अभिशाप से मुक्त रखा है।

बीमारी ऐसी विपत्ति है, जिसे सहता एक है, पर भोगते सारे पारिवारिक लोग हैं।

जीवन', से तो व्यक्ति का मोह प्राण के कण्ठगत होने पर भी जुड़ा रहता है, क्योंकि रोगग्रस्त, दीन-हीन रहने पर भी वह अपने जीवन से टूटना नहीं चाहता हैं।

यदि वह आहार और आचार - विचार में संयमी व संतुलन शील रहे, तो ग्रहों का दोष उसके सदाचार व सदाहार से ही कम हो जाते हैं।

इसके साथ यदि अनिष्टकर ग्रहों को प्रभावहीन करने के लिए वह सहज उपाय करने लग जाय, तो भी विपत्ति से एक सीमा तक बचा जा सकता है।

क्योंकि ग्रहों के तत्व दोष के तथ्यों पर विचार ही ज्योतिष का मर्म व सार्थकता है।

मृत्यु तो देह धर्म है, प्रकृति है, लेकिन इसके सम्बन्ध में निर्णय करना एक नाजुक काम है और जटिल,

फिर भी यह नहीं है कि हम किसी निर्णय पर पहुँच ही नहीं सकते।

ज्योतिष शास्त्रों का अध्ययन - मनन और अनुभव के द्वारा उसका प्रत्यक्षीकरण कुण्डली में स्थित ग्रहों के बलाबल को देखकर किया जा सकता है।

कई बार ऐसा भी देखने में आया है कि व्यक्ति का मारकेश उसके पुत्र के पितृकारक ग्रह योग की प्रबलता के आगे हल्का पड़ जाता है, इसका आशय यह है कि इस विषय पर कोई भी निर्णय करने के पहले सभी सम्बन्धित पक्षों पर विचार करके उसकी स्थितियों और ग्रहों की सापेक्षता एवं उसके बलाबल का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

रोगों के अध्ययन में षष्ठ भाव केन्द्र व आधार स्थल है और मृत्यु का विचार आठवें स्थान से किया जाता है।

त्रिक स्थान में कोई भी ग्रह हो या किसी

ग्रह से त्रिक स्थान में दूसरा ग्रह हो तो प्रायः अशुभ फल करते हुए उस भाव की हानि ही किया करते है, जिसका उपाय करना जरूरी होता है।

बुढ़ापा नापने का थर्मामीटर...???

पिंकी कुंडू

1. दोस्त बुलाये पर, जानें का दिल न करे, समझ लो बूढ़े हो गए।

2. नए कपड़े खरीदनें की, इच्छा कम हो रही हो, समझना बूढ़े हो चले

3. रेस्टोरेंट में खाना खाते वक़्त, घर के खाने की याद आने लगे, समझना बूढ़े हो चले।

4. बारिश हो रही हो और, पकौड़े की जगह छाता याद आये, समझो बूढ़े हो चले।

5. हर बात पर युवाओं के, फैशन पर टिप्पणी करनें लगे हो, समझना बूढ़े हो चले।

6. मौज - मस्ती वाली फिल्मों की आलोचना करनें लगे हो,समझना बूढ़े हो चले।

7. मस्त-महफ़लि सजी हो और उस दौरान मशवरा देने लग जाओ,

तो समझना बूढ़े हो चले।

8. फूल पर गुनगुनाते भंवरे को देख रोमांटिक गाना न याद आये, समझना बूढ़े हो चले।

9. बेफिक्री छोड़ सर पर चिंता की टोकरी उठा ली हो, समझना बूढ़े हो चले।

10. घर से बाहर नहीं निकलने के बहाने बढ़ गए, तो समझो बूढ़े हो गए।

11. इस पोस्ट को पढ़ने के बाद वाह-वाह करने की इच्छा नहीं है, समझो बूढ़े हो गए हो।

डायबिटीज में दवा नहीं, डाइट सबसे बड़ी ताकत

पिंकी कुंडू

डायबिटीज़ में सही खान-पान क्यों ज़रूरी है?

क्या आप जानते हैं कि डायबिटीज़ में खाने-पीने में कौन-से बदलाव सच में असरदार होते हैं और जिन्हें अपनाकर ब्लड शुगर को बेहतर तरीके से कंट्रोल किया जा सकता है।

सबसे पहले यह समझना ज़रूरी है कि डायबिटीज़ को कंट्रोल करने में खाने की सही मात्रा, बैलेंस्ड डाइट और खाने का तरीका बहुत अहम भूमिका निभाता है।

डायबिटीज़ में अगर गलत चीज़ें खा ली जाएँ, तो तुरंत शुगर स्पाइक हो सकता है, इसलिए हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि ऐसा खाना चुना जाए जिससे खाने के बाद शुगर अचानक न बढ़े।

कार्बोहाइड्रेट को पूरी तरह बंद करना सही नहीं है, बल्कि सही तरह के कार्बोहाइड्रेट चुनना ज़रूरी है। होल ग्रेन और हाई फाइबर वाले कार्बोहाइड्रेट जैसे चोकर-युक्त गेहूं, ब्राउन राइस और मिलेट्स (ज्वार, बाजरा, रागी) शुगर को धीरे-धीरे बढ़ाते हैं और स्पाइक नहीं करते।

इसी तरह छिलके वाली दालें भी फाइबर से भरपूर होती हैं और शुगर कंट्रोल में मदद करती हैं।

सुबह की शुरुआत कैसे करें? अगर आप अपने दिन की शुरुआत चाय या कॉफी से करते हैं, तो

* फीकी चाय - कॉफी के साथ बिस्किट, रस्क या नमकीन लेने से बचें। इसकी जगह आप

* नट्स जैसे बादाम, अखरोट और पिस्ता ले सकते हैं। इसके साथ

* एक गिलास दूध या एक बड़ी कटोरी दही शामिल की जा सकती है।

* हाई-फाइबर अनाज जैसे दलिया, ओट्स या जौ को नमकीन दलिया के रूप में खाया जा सकता है। इसके अलावा

* रोटी, बेसन का चीला, दाल का चीला, ओट्स का चीला और स्प्राउट्स जैसे विकल्प भी अच्छे रहते हैं।

* प्लेट मेथडः डायबिटीज़ में सही खाने का तरीका सबसे ज़रूरी बात यह है कि खाने की शुरुआत हमेशा सब्ज़ियों से करें।

* अपनी प्लेट का आधा हिस्सा सब्ज़ियों से भरें।

* इन्हें सलाद के रूप में या हल्का सॉटे करके या पकी हुई सब्ज़ियों के रूप में लिया जा सकता है, खासकर उन लोगों के लिए जिन्हें कच्ची सब्ज़ियां सूट नहीं करतीं। इसके बाद

* प्लेट का एक-चौथाई हिस्सा प्रोटीन के लिए रखें।

* प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं — दाल, चना, राजमा, छोले, दही और पनीर।

* अगर आप नॉन-वेज खाते हैं, तो उबला या ग्रिल्ड चिकन और अंडे भी शामिल कर सकते हैं।

* प्लेट का आखिरी एक-चौथाई हिस्सा अनाज के लिए रखें, जिसमें रोटी, दलिया या ब्राउन राइस जैसे विकल्प चुनें।

* रोटी के लिए चोकर-युक्त गेहूं का आटा इस्तेमाल करें।

* अगर आप चावल खाना चाहते हैं, तो एक रोटी कम करके उसकी जगह आधी कटोरी पके हुए चावल ले सकते हैं।

* मील टाइमिंग और पोर्शन कंट्रोल डायबिटीज़ में रेगुलर इंटरवल पर खाना, मील स्किप न करना और पोर्शन कंट्रोल बेहद ज़रूरी है, क्योंकि बहुत ज्यादा खाने से शुगर बढ़ सकती है और बहुत कम खाने से शुगर गिर सकती है।

* हेल्दी स्नैक्स क्या हों? अगर खाने के बीच में स्नैक्स लेने की ज़रूरत हो, तो हेल्दी विकल्प चुनें जैसे

* एक छोटा मौसमी फल या एक कटोरी

कटा हुआ फल,

* वेजिटेबल सूप, चिकन सूप (सब्ज़ियों के साथ),

* भुना चना, स्प्राउट्स या पनीर को सब्ज़ियों के साथ हल्का सॉटे करके।

* पैकेज्ड फूड, बेकरी प्रोडक्ट्स, मैदे से बनी चीज़ें जैसे पास्ता, मैगी और बेकरी आइटम्स का सेवन जितना हो सके कम करें।

* प्रोसेस्ड फूड की बजाय ताज़ा और नेचुरल फूड चुनें, क्योंकि ये फाइबर और ज़रूरी न्यूट्रिएंट्स का बेहतर स्रोत होते हैं।

* "शुगर-फ्री" लेबल और अल्कोहल को लेकर सावधानी "शुगर-फ्री", "फैट-फ्री" या "डायबिटीज़-फ्रेंडली" जैसे लेबल देखकर बिना समझे स्नैक्स न खरीदें और हमेशा लेबल पढ़ें।

* अल्कोहल का सेवन भी सीमित मात्रा में करें, क्योंकि ज्यादा मात्रा में लेने से ब्लड शुगर प्रभावित हो सकता है।

हेल्दी डाइट का मतलब यह नहीं है कि आप बाहर खाना बिल्कुल नहीं खा सकते, बल्कि बाहर खाने की फ्रीक्वेंसी और पोर्शन कंट्रोल पर ध्यान देना ज़रूरी है।

डायबिटीज़ में फल खाने का सच फ्रूट्स को लेकर अक्सर भ्रम रहता है कि डायबिटीज़ में फल नहीं खाने चाहिए, जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। अमरूद, संतरा, मौसंबी, पपीता और अनार जैसे फाइबर-युक्त फल सीमित मात्रा में खाए जा सकते हैं।

घर के खाने को डायबिटीज़-फ्रेंडली कैसे बनाएं? घर की सामान्य रेसिपीज़ को भी थोड़े बदलाव के साथ डायबिटीज़ - फ्रेंडली बनाया जा सकता है, जैसे पुलाव में कम तेल, ज्यादा सब्ज़ियाँ और ब्राउन राइस का इस्तेमाल, इडली में सब्ज़ियाँ मिलाना या मिलेट्स से मल्टीग्रेन इडली बनाना।

* रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट, पैकेज्ड जूस, मीठी ड्रिंक्स और कोल्ड ड्रिंक्स से बचना चाहिए।

* मीठे के लिए सीमित मात्रा में शुगर-फ्री या स्टेविया का उपयोग किया जा सकता है।

फैट और पानी का सही संतुलन फैट को पूरी तरह हटाना सही नहीं है — नट्स और सीड्स जैसे अलसी, चिया, पंपकिन सीड्स अच्छे फैट का स्रोत हैं।

कुकिंग के लिए सरसों का तेल, मूंगफली का तेल, ऑलिव ऑयल या नारियल तेल सीमित मात्रा में उपयोग करें।

साथ ही नियमित अंतराल पर पानी पीते रहना भी बहुत ज़रूरी है।

क्या डायबिटीज़ रिवर्स हो सकती है? डायबिटीज़ को लेकर यह समझना ज़रूरी है कि यह कोई लाइलाज बीमारी नहीं, बल्कि गलत खान-पान से जुड़ा एक डायटरी डिसऑर्डर है।

डायबिटीज़ में फल खाने का सच फ्रूट्स को लेकर अक्सर भ्रम रहता है कि डायबिटीज़ में फल नहीं खाने चाहिए, जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। अमरूद, संतरा, मौसंबी, पपीता और अनार जैसे फाइबर-युक्त फल सीमित मात्रा में खाए जा सकते हैं। घर के खाने को डायबिटीज़-फ्रेंडली कैसे बनाएं? घर की सामान्य रेसिपीज़ को भी थोड़े बदलाव के साथ डायबिटीज़ - फ्रेंडली बनाया जा सकता है, जैसे पुलाव में कम तेल, ज्यादा सब्ज़ियाँ और ब्राउन राइस का इस्तेमाल, इडली में सब्ज़ियाँ मिलाना या मिलेट्स से मल्टीग्रेन इडली बनाना।

सही खान-पान इसका समाधान है। अगर आप 3 महीने पूरी ईमानदारी से सही डाइट और अनुशासन फॉलो करते हैं, तो फर्क साफ दिखाई देता है।

कद्दू, करेला, नट्स-सीड्स, भिंडी, मिलेट्स, ओट्स और सलाद जैसे खाद्य पदार्थ डायबिटीज़ कंट्रोल और रिवर्स करने में बहुत प्रभावी हैं।

खाने से पहले सलाद लेने से शुगर का अवशोषण धीमा होता है।

फूड 1: पेठा / कद्दू (सीताफल) कद्दू डायबिटीज के लिए बेहद फायदेमंद सब्जी है। इसमें मौजूद कुछ विशेष यौगिक ब्लड शुगर को प्राकृतिक रूप से कम करते हैं। रिसर्च के अनुसार, कद्दू इंसुलिन रेजिस्टेंस को कम करने में मदद करता है।

* कद्दू की सब्जी में डाला जाने वाला मेथी दाना अपने-आप में एंटी-डायबिटिक है।

* कद्दू के बीज (Pumpkin Seeds) कभी न फेंकें — ये ब्लड शुगर कम करने में बेहद प्रभावी हैं।

* हरे कद्दू को छिलके सहित पकाना ज्यादा फायदेमंद होता है।

सब्जी बनाते समय चीनी बिल्कुल न डालें।

फूड 2: करेला करेला आयुर्वेद में डायबिटीज की दवा माना जाता है। यह इंसुलिन के उत्पादन को बढ़ाता है और पैंक्रियाज की कार्यक्षमता सुधारता है।

करेले का जूस कैसे पिएं: 1 करेला + अदरक + पानी + नींबू + काला नमक

या करेला + लौकी + पुदीना + जीरा

इसे नाश्ते से 30 मिनट पहले या लंच के 2 घंटे बाद पिएं। बीज न निकालें, क्योंकि उनमें भी पोषक तत्व होते हैं।

फूड 3: नट्स और सीड्स भूख लगने पर बिस्किट, नमकीन या जंक फूड की जगह नट्स और सीड्स लें।

मखाना (घी में हल्का भुना हुआ) फल + नट्स (जैसे केला + काजू, सेब + मूंगफली) चिया सीड्स, फ्लैक्स सीड्स, सब्जा सीड्स

ये सभी ब्लड शुगर को बढ़ने नहीं देते, बल्कि कम करने में मदद करते हैं।

फूड 4: भिंडी भिंडी में मौजूद प्राकृतिक यौगिक ब्लड शुगर को कम करने में सहायक होते हैं। रिसर्च बताती है कि भिंडी के बीज विशेष रूप से एंटी-डायबिटिक होते हैं।

हफ्ते में 2–3 बार सरसों के तेल में बनी भिंडी जरूर खाएं।

फूड 5: मिलेट्स (छोटे अनाज) मिलेट्स डायबिटीज रिवर्स करने में सबसे शक्तिशाली खाद्य पदार्थों में से हैं।

बेहतर मिलेट्स:

* रागी
* ज्वार
* बाजरा
* कोदो मिलेट
* फॉक्सटेल मिलेट - कँगनी

इनका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम और फाइबर बहुत ज्यादा होता है। 6 घंटे भिगोकर पकाएं। गेहूं-चावल की जगह इन्हें अपनाएं।

टिप: रागी या ज्वार की रोटी नरम बनाने के लिए आटे में उबलता पानी डालकर गूंथें।

फूड 6: ओट्स ओट्स में सॉल्युबल और इनसॉल्युबल फाइबर दोनों होते हैं, जो ब्लड शुगर को नियंत्रित करते हैं।

नाश्ते में सब्जियों के साथ ओट्स का दलिया लें।

फूड 7: सलाद खाने से पहले सलाद खाना डायबिटीज में गेम-चेंजर साबित होता है।

लंच से पहले खीरा, ककड़ी, पत्ता गोभी

डिनर से पहले कच्चा प्याज

सलाद फाइबर की परत बनाकर शुगर के अवशोषण को धीमा करता है और पेट देर तक भरा रखता है

1-दिन का सैंपल डाइट प्लान

सुबह: करेले का जूस या भीगा मेथी दाना

नाश्ता: सब्जियों वाला ओट्स दलिया

लंच से पहले: सलाद

लंच: रागी/ज्वार रोटी + दाल + भिंडी/कद्दू

शाम: फल + नट्स

डिनर से पहले: प्याज का सलाद

डिनर: मिलेट खिचड़ी या हल्की रोटी-सब्जी

निष्कर्ष कुल मिलाकर, सही डाइट, नियमितता और अनुशासन के साथ डायबिटीज को कंट्रोल ही नहीं बल्कि रिवर्स भी किया जा सकता है — ज़रूरत सिर्फ लगातार सही आदतों को अपनाने की है।

हड़जोड़, जिसे आयुर्वेद में "अस्थि संहारक" कहा गया है।

हमारी धरती पर ऐसी कई दुर्लभ औषधियाँ पायी जाती हैं, जो किसी वरदान से कम नहीं होतीं। उन्हीं में से एक है हड़जोड़, जिसे आयुर्वेद में ₹अस्थि संहारक" कहा गया है। हजारों वर्षों से इसका उपयोग हड्डियों, जोड़ों और मांसपेशियों से जुड़ी समस्याओं के उपचार में किया जाता रहा है।

हड़जोड़ का वैज्ञानिक नाम Cissus quadrangularis है। यह एक बेलनुमा, चौकोर तने वाला पौधा होता है, जिसे भारत के कई हिस्सों में हड़जोड़, हड्डी जोड़, वज्रवल्ली जैसे नामों से जाना जाता है। इसकी जड़, तना और पत्तियाँ—तीनों ही औषधीय गुणों से भरपूर होती हैं।

हड़जोड़ (अस्थि संहारक) के औषधीय उपयोग —

हड्डी जोड़ने में लाभकारी :- हड़जोड़ टूटी हुई हड्डियों को प्राकृतिक रूप से जोड़ने में मदद करता है। यह हड्डी बनाने वाली कोशिकाओं को सक्रिय करता है, जिससे फ्रैक्चर जल्दी भरता है और सूजन व दर्द में राहत मिलती है।

जोड़ों के दर्द और आर्थराइटिस में सहायक :- इसमें मौजूद सूजनरोधी गुण जोड़ों की सूजन, जकड़न और दर्द को कम करते हैं। बुजुर्गों में होने वाली हड्डियों की कमजोरी और ऑस्टियोपोरोसिस में भी यह उपयोगी माना जाता है।

मांसपेशियों और चोटों की रिकवरी में सहायक :- मोच, खिंचाव या खेलकूद से लगी चोटों में हड़जोड़ रिकवरी प्रक्रिया को तेज करता है। इसके पत्तों की हल्की गर्म सिकाई से दर्द में आराम मिलता है।

पाचन तंत्र के लिए फायदेमंद :- हड़जोड़ गैस, अपच, पेट फूलना और कब्ज जैसी समस्याओं में लाभ देता है। यह पाचन अग्नि को मजबूत करता है और भूख बढ़ाने में मदद करता है।

अस्थमा व श्वसन रोगों में उपयोगी :- यह फेफड़ों को मजबूत करता है और सांस की समस्या में सहायक माना जाता है।

ब्लड शुगर व वजन नियंत्रण में सहायक :- हड़जोड़ ब्लड शुगर को संतुलित रखने में मदद करता है और मेटाबॉलिज्म सुधारकर वजन नियंत्रण में भी सहायक हो सकता है।

महिलाओं के लिए लाभकारी :- यह मासिक धर्म के दौरान होने वाले पेट दर्द और ऐंठन को कम करने में मदद करता है तथा हार्मोनल संतुलन को सपोर्ट करता है।

सावधानियाँ — हड़जोड़ एक शक्तिशाली आयुर्वेदिक औषधि है। इसका अधिक मात्रा में या गलत तरीके से सेवन नुकसानदायक हो सकता है। हृदय रोगियों, गर्भवती महिलाओं और गंभीर रोगों से पीड़ित व्यक्तियों को इसका सेवन आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह से ही करना चाहिए।

छाछ एक हेल्दी, नेचुरल और रिफ्रेशिंग ड्रिंक है, जो खासकर भारत में पॉपुलर है

1. डाइजेशन को बेहतर बनाता है: प्रोबायोटिक्स (अच्छे बैक्टीरिया) से भरपूर। डाइजेशन में मदद करता है और एसिडिटी, गैस और कब्ज से बचाता है।

2. शरीर को ठंडा रखता है गर्ममौसम में शरीर को ठंडा रखता है। गर्मी से जुड़ी समस्याओं से बचाता है।

3. हड्डियों को मजबूत बनाता है: इसमें कैल्शियम और विटामिन B12 होता है।

छाछ हमारे डाइजेस्टिव सिस्टम के लिए वरदान है। छाछ में मौजूद हेल्दी बैक्टीरिया और लैक्टिक एसिड डाइजेशन में मदद करते हैं और हमारे मेटाबॉलिज्म को बेहतर बनाते हैं।

पीने का सबसे अच्छा समय

*खाने के बाद या दिन में।

*एक्स्ट्रा फायदे के लिए जीरा, करी पत्ता, अदरक या नमक मिलाएं।

क्या हाथ-पैर में झनझनाहट और कमजोरी रहती है?

पिंकी कुंडू

यूट्रिशनल यीस्ट लेने से शरीर को

* विटामिन B (खासकर B12 सपोर्ट) मिलता है

* नसों की कमजोरी घटती है और

* झनझनाहट धीरे-धीरे कम होने लगती है।

सही तरीका (How to Use)

* 1 चम्मच न्यूट्रिशनल यीस्ट रोज

* दूध / दही / सूप / सब्जी में मिलाकर

* लगातार 30–45 दिन लेने से फर्क दिखता है।

फायदे (Benefits)

* Vitamin B कॉम्प्लेक्स सपोर्ट

* नसों को मजबूती

* हाथ-पैर की झनझनाहट कम

* थकान में राहत

* कमजोरी धीरे-धीरे घटती है।

ठ

* अगर यूरिक एसिड/गाउट ज्यादा है तो सीमित मात्रा लें

* पेट में गैस/फुलाव हो तो ½ चम्मच से शुरू करें

* B12 की कमी बहुत ज्यादा हो तो टेस्ट कराकर डॉक्टर की सलाह लें

विशेष टिप सुबह धूप + दूध/दही के साथ लेने से नर्व और बॉडी एनर्जी दोनों में जल्दी सपोर्ट मिलता है।

जीवन में कामना पूर्ति हेतु विभिन्न श्राद्ध

पिंकी कुंडू

हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार केवल पितृ पक्ष में ही नहीं बल्कि अन्य अवसरों यथा विवाह के समय भी पितरों का श्राद्ध किया जाता है।

धर्म के अनुसार श्राद्ध के बहुत प्रकार बताए गए हैं।

जैसे एक साल की 12अमावस्या, 4पूर्णदी तिथियां, 14मनवादी तिथियां, 12संक्रतियां, 12 वैद्वति योग, 12व्यतीपत योग, 15पितृपक्ष, 5अस्टका श्राद्ध तथा 5पुरवेद्यु श्राद्ध आदि आदि।

इसके अलावा हमारे धर्म ग्रंथों में भी श्राद्ध कर्म के अनेक भेद बताए गए हैं, यथा

* मत्स्य पुराण में तीन प्रकार के श्राद्ध,

* यमस्मृति में पांच प्रकार तथा भविष्य

* पुराण में 12 प्रकार के श्राद्ध कर्म का वर्णन है ।

1. नित्य श्राद्ध रोज किया जाने वाला तर्पण, भोजन से पहले गौ ग्रास निकालना।

2. नैमेत्तिक श्राद्ध पितृ पक्ष में किया जाने वाला तर्पण।

3. काम्य श्राद्ध अपनी कामना पूर्ति के लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

4. वृद्धि या नंदिमुख श्राद्ध मुंडन, उपनयन, विवाह आदि के अवसर पर किया जाने वाला श्राद्ध।

5. पावर्ण श्राद्ध अमावस्या तिथि या किसी पर्व के दिन किया जाने वाला श्राद्ध।

6. सपिंदन श्राद्ध मृत्यु के बाद प्रेत गति से मुक्ति के लिए मृतक के पिंड को पितरों के पिंड में मिलने के लिए किया गया श्राद्ध।

7. गोष्ठी श्राद्ध गौशाला में वंश वृद्धि के लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

8. शुद्धयर्थ श्राद्ध प्रायश्चित के रूप में अपनी शुद्धि के लिए ब्राम्हणों को भोजन कराना।

9. कर्मांग श्राद्ध गर्भाधान, सीमंत, पुंसवन संस्कार के समय किया जाने वाला श्राद्ध।

10. दैविक श्राद्ध सप्तमी तिथि को हविस्यन्-से देवताओं के लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

11. यात्रार्थ श्राद्ध तीर्थ यात्रा पर जाने से पहले और वहां पर किया जाने वाला श्राद्ध।

12. पुष्ट यर्थ श्राद्ध अपने वंश और व्यापार आदि की वृद्धि के लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

जीवन ऊर्जा...

पिंकी कुंडू

_३मौनं सर्वार्थ साधनं३ मौन सभी साधनाओं का आधार है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि अत्यधिक, अर्थहीन एवं अनर्गल वार्तालाप से हमारे शरीर की आंतरिक ऊर्जा का ह्रास होता है। इस ऊर्जा को मौन साधना से बचाया जा सकता है।

मौन रहकर आंतरिक ऊर्जा व आध्यात्मिक ऊर्जा में वृद्धि की जा सकती है। मन, विचार एवं वाणी पर संयम रखकर जब हम मौन रहते हैं तो आत्मा से सीधे जुड़ते हैं। मौन आत्मा के साथ संवाद का सबसे सशक्त माध्यम है। मौन ध्यान की एक अनिवार्य शर्त है मौन रहकर ही हम एकचित ध्यान कर पाते हैं।

इस ध्यान से ही हम मन के सभी द्वंद्वों, विकारों, आवेशों एवं आवेगों पर विजय पाकर उस अवस्था में पहुंचते हैं जब हमें निःशब्द शांति के साथ अनंत की ऊर्जा एवं आनंद का अनुभव होता है। यही मौन की सार्थकता है।_

॥ सदैव प्रसन्न और आशावान रहिए,

जिसका मन मस्त है उसके पास समस्त है

जो प्राप्त है पर्याप्त है ॥

मानव शरीर में सप्तचक्रों के प्रभाव का रहस्य

पिंकी कुंडू

1. मूलाधारचक्र: यह शरीर का पहला चक्र है। गुदा और लिंग के बीच 4 पंखुरियों वाला यह 'आधार चक्र' है। 99.9% लोगों की चेतना इसी चक्र पर अटकी रहती है और वे इसी चक्र में रहकर मर जाते हैं। जिनके जीवन में भोग, संभोग और निद्रा की प्रधानता है उनकी ऊर्जा इसी चक्र के आसपास एकत्रित रहती है।

मंत्र : लं

चक्र जगाने की विधि : मनुष्य तब तक पशुवत है, जब तक कि वह इस चक्र में जी रहा है इसीलिए भोग, निद्रा और संभोग पर संयम रखते हुए इस चक्र पर लगातार ध्यान लगाने से यह चक्र जाग्रत होने लगता है। इसको जाग्रत करने का दूसरा नियम है - यम और नियम का पालन करते हुए साक्षी भाव में रहना।

प्रभाव : इस चक्र के जाग्रत होने पर व्यक्ति के भीतर वीरता, निर्भीकता और आनंद का भाव जाग्रत हो जाता है। सिद्धियां प्राप्त करने के लिए वीरता, निर्भीकता और जागरूकता का होना जरूरी है।

2. स्वाधिष्ठानचक्र - यह वह चक्र है, जो लिंग मूल से 4 अंगुल ऊपर स्थित है जिसकी 6 पंखुरियां हैं। अगर आपकी ऊर्जा इस चक्र पर ही एकत्रित है तो आपके जीवन में आमोद-प्रमोद, मनोरंजन, घूमना-फिरना और मौज-मस्ती करने की प्रधानता रहेगी। यह सब करते हुए ही आपका जीवन कब व्यतीत हो जाएगा आपको पता भी नहीं चलेगा और हाथ फिर भी खाली रह जाएंगे।

मंत्र : वं

कैसे जाग्रत करें : जीवन में मनोरंजन जरूरी है, लेकिन मनोरंजन की आदत नहीं। मनोरंजन भी व्यक्ति की चेतना को बेहोशी में धकेलता है। फिल्म सच्ची नहीं होती लेकिन उससे जुड़कर आप जो अनुभव करते हैं वह आपके बेहोश जीवन जीने का प्रमाण है। नाटक और मनोरंजन सच नहीं होते।

प्रभाव : इसके जाग्रत होने पर क्रूरता, गर्व, आलस्य, प्रमाद, अवज्ञा, अविश्वास आदि दुर्गणों का नाश होता है। सिद्धियां प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि उक्त सारे दुर्गुण समाप्त हों तभी सिद्धियां आपका द्वार खटखटाएंगी।

3. मणिपुरचक्र : नाभि के मूल में स्थित यह शरीर के अंतर्गत मणिपुर नामक तीसरा चक्र है, जो 10 कमल पंखुरियों से युक्त है। जिस व्यक्ति की चेतना या ऊर्जा यहां एकत्रित है उसे काम करने की धुन-सी रहती है। ऐसे लोगों को कर्मयोगी कहते हैं। ये लोग दुनिया का हर कार्य करने के लिए तैयार रहते हैं।

मंत्र : रं

कैसे जाग्रत करें : आपके कार्य को सकारात्मक आयाम देने के लिए इस चक्र पर ध्यान लगाएंगे। पेट से श्वास लें।

प्रभाव : इसके सक्रिय होने से तृष्णा, ईर्ष्या, चुगली, लज्जा, भय, घृणा, मोह आदि कषाय-कल्मष दूर हो जाते हैं। यह चक्र मूल रूप से आत्मशक्ति प्रदान करता है। सिद्धियां प्राप्त करने के लिए आत्मवान होना जरूरी है। आत्मवान होने के लिए यह अनुभव करना जरूरी है कि आप शरीर नहीं, आत्मा हैं। आत्मशक्ति, आत्मबल और आत्मसम्मान के साथ जीवन का कोई भी लक्ष्य दुर्लभ नहीं।

4. अनाहतचक्र - हृदयस्थल में स्थित द्वादश दल कमल की पंखुड़ियों से युक्त द्वादश स्वर्णाक्षरों से सुशोभित चक्र ही अनाहत चक्र है। अगर आपकी ऊर्जा अनाहत में सक्रिय है तो आप एक सृजनशील व्यक्ति होंगे। हर क्षण आप कुछ न कुछ नया रचने की सोचते हैं। आप चित्रकार, कवि, कहानीकार, इंजीनियर आदि हो सकते हैं।

मंत्र : यं

कैसे जाग्रत करें : हृदय पर संयम करने और ध्यान लगाने से यह चक्र जाग्रत होने लगता है। खासकर रात्रि को सोने से पूर्व इस चक्र पर ध्यान लगाने से यह अभ्यास से जाग्रत होने लगता है और सुषुम्ना इस चक्र को भेदकर ऊपर गमन करने लगती है।

प्रभाव : इसके सक्रिय होने पर लिप्सा, कपट, हिंसा, कुतर्क, चिंता, मोह, दंभ, अविवेक और अहंकार समाप्त हो जाते हैं। इस चक्र के जाग्रत होने से व्यक्ति के भीतर प्रेम और संवेदना का जागरण होता है। इसके जाग्रत होने पर व्यक्ति के समय ज्ञान स्वतः ही प्रकट होने लगता है। व्यक्ति अत्यंत आत्मविश्वस्त, सुरक्षित, चारित्रिक रूप से जिम्मेदार एवं भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्तित्व बन जाता है। ऐसा व्यक्ति अत्यंत हितैषी एवं बिना किसी स्वार्थ के मानवता प्रेमी एवं सर्वप्रिय बन जाता है।

5. विशुद्धचक्र - कंठ में सरस्वती का स्थान है, जहां विशुद्ध चक्र है और जो 16 पंखुरियों वाला है। सामान्य तौर पर यदि आपकी ऊर्जा इस चक्र के आसपास एकत्रित है तो आप अति शक्तिशाली होंगे।

मंत्र : हं

सक्रिय है तो ऐसा व्यक्ति बौद्धिक रूप से संपन्न, संवेदनशील और तेज दिमाग का बन जाता है लेकिन वह सब कुछ जानने के बावजूद मौन रहता है। इसे बौद्धिक सिद्धि कहते हैं।

मंत्र : उ

कैसे जाग्रत करें : भृकुटी के मध्य ध्यान लगाते हुए साक्षी भाव में रहने से यह चक्र जाग्रत होने लगता है।

प्रभाव : यहां अपार शक्तियां और सिद्धियां निवास करती हैं। इस आज्ञा चक्र का जागरण होने से ये सभी शक्तियां जाग पड़ती हैं और व्यक्ति सिद्धपुरुष बन जाता है।

7. सहस्त्रारचक्र : सहस्त्रार की स्थिति मस्तिष्क के मध्य भाग में है अर्थात जहां चोटी रखते हैं। यदि व्यक्ति यम, नियम का पालन करते हुए यहां तक पहुंच गया है तो वह आनंदमय शरीर में स्थित हो गया है। ऐसे व्यक्ति को संसार, संन्यास और सिद्धियों से कोई मतलब नहीं रहता है।

मंत्र : ॐ

कैसे जाग्रत करें : मूलाधार से होते हुए ही सहस्त्रार तक पहुंचा जा सकता है। लगातार ध्यान करते रहने से यह चक्र जाग्रत हो जाता है और व्यक्ति परमहंस के पद को प्राप्त कर लेता है।

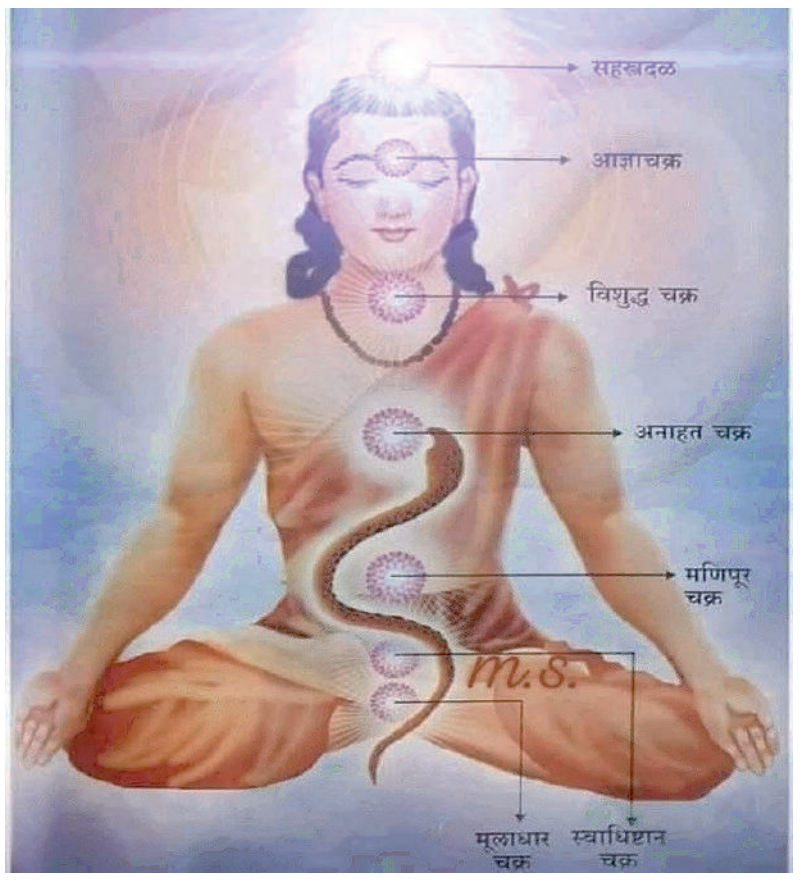

स्त्री अगर शिष्य हो, तो उससे श्रेष्ठ शिष्य खोजना मुश्किल है

पिंकी कुंडू

स्त्री का शिष्यत्व श्रेष्ठतम है। कोई पुरुष उसका मुकाबला नहीं कर सकता है। क्योंकि समर्पण की जो क्षमता उसमें है, वह किसी पुरुष में नहीं है।

जिस संपूर्ण भाव से वह अंगीकार कर लेती है, ग्रहण कर लेती है, उस तरह से कोई पुरुष कभी अंगीकार नहीं कर पाता, ग्रहण नहीं कर पाता।

जब कोई स्त्री स्वीकार कर लेती है,

तो फिर उसमें रंचमात्र भी उसके भीतर कोई विवाद नहीं होता है,

कोई संदेह नहीं होता है; उसकी आस्था परिपूर्ण है।

अगर वह मेरे विचार को या किसी के विचार को स्वीकार कर लेती है,

तो वह विचार भी उसके गर्भ में

प्रवेश कर जाता है।

वह उस विचार को भी, बीज की तरह, गर्भ की तरह अपने भीतर

पोसने लगती है।

पुरुष अगर स्वीकार भी करता है, तो बड़ी जद्दो-जहद करता है, बड़े संदेह खड़ा करता है, बड़े प्रश्न उठाता है।

और अगर झुकता भी है, तो वह यही कह कर झुकता है कि आधे मन से झुक रहा हूँ, पूरे से नहीं।

शिष्यत्व की जिस ऊंचाई पर स्त्रियां

पहुंच सकती हैं, पुरुष नहीं पहुंच सकते।

क्योंकि निकटता की जिस ऊंचाई पर

स्त्रियां पहुंच सकती हैं, पुरुष नहीं पहुंच सकता स्वीकार की, समर्पण की।और चूंकि स्त्रियां बहुत अदभुत रूप से, गहन रूप से, श्रेष्ठतम रूप से, शिष्य बन सकती हैं, इसलिए

गुरु नहीं बन सकतीं।

क्योंकि शिष्य का जो गुण है,

वही गुरु के लिए बाधा है।

गुरु का तो सारा कृत्य ही आक्रमण है। वह तो तोड़ेगा,

मिटाएगा, नष्ट करेगा; क्योंकि पुराने को न मिटाए, तो नए का जन्म

नहीं हो सकता है। तो गुरु तो

अनिवार्य रूप से विध्वंसक है;

क्योंकि उसी से सृजन लाएगा। वह आपकी मृत्यु न ला सके, तो आपको

नया जीवन न दे सकेगा।

स्त्री की वह क्षमता नहीं है। वह आक्रमण नहीं कर सकती,

समर्पण कर सकती है।

समर्पण उसे शिष्यत्व में तो बहुत

ऊंचाई पर ले जाता है।लेकिन

स्त्री कितनी ही बड़ी

शिष्या हो जाए,

वह गुरु नहीं बन सकती।

उसका शिष्य होने का जो गुणधर्म है,

जो खूबी है, वही तो बाधा बन जाती है कि वह गुरु नहीं हो सकती है।

ओशो, (समाधि के सप्त द्वार:)

देवी धूमावती; (गुप्त नवरात्रि साधना)

पिंकी कुंडू

1-दुर्भाग्य, दरिद्रता, अस्वस्थता, कलह की देवी, महाविद्या धूमावती। महाविद्या धूमावती अकेली स्वः नियंत्रक हैं, इनके स्वामी रूप में कोई नहीं हैं। भगवान शिव की विधवा हैं। दस महाविद्याओं की श्रेणी में देवी धूमावती सातवें स्थान पर अवस्थित हैं। उग्र स्वभाव वाली अन्य देवियों के सामान ही उग्र तथा भयंकर हैं।देवी का सम्बन्ध ब्रह्माण्ड के महाप्रलय के पश्चात उस स्थिति से हैं, जहां वे अकेली होती हैं अर्थात समस्त स्थूल जगत के विनाश के कारण शून्य स्थिति रूप में अकेली विराजमान रहती हैं। महाप्रलय के पश्चात मात्र देवी की शक्ति ही चारों ओर विद्यमान रहती हैं; देवी का स्वरूप धुएं के समान हैं। तीव्र क्षुधा हेतु इन्होंने अपने पति भगवान शिव का ही भक्षण किया था, जिसके पश्चात शिवजी धुएं के रूप में देवी के शरीर से बाहर निकले थे; देवी धुएं के रूप में हैं।

2-देवी दरिद्रों के गृह में दरिद्रता के रूप में विद्यमान रहती हैं तथा अलक्ष्मी नाम से विख्यात हैं। अलक्ष्मी जो कि देवी लक्ष्मी की बहन हैं, परन्तु गुण तथा स्वभाव से पूर्णतः विपरीत हैं। देवी धूमावती की उपस्थिति, सूर्य अस्त पश्चात रहती हैं अर्थात अंधकारमय स्थानों की स्वामिनी हैं। देवी का सम्बन्ध स्थाई अस्वस्थता से भी हैं फिर वह शारीरिक हो या मानसिक। देवी के अन्य नामों में निऋति भी हैं, जिनका सम्बन्ध मृत्यु, क्रोध, दुर्भाग्य, सड़न, अपूर्ण अभिलाषाओं जैसे नकारात्मक विचारों तथा तथ्यों से हैं।

देवी कुपित होने पर समस्त अभिलषित मनोकामनाओं, सुख, धन तथा समृद्धि का नाश कर देती हैं, देवी कलह प्रिया हैं, अपवित्र स्थानों में वास करती हैं। रोग, दुर्भाग्य, कलह, निर्धनता, दुःख के रूप में देवी विद्यमान हैं। देवी धूमावती का स्वरूप अत्यंत ही कुरूप हैं, भद्दे एवं विकट दन्त पंक्ति हैं, एक वृद्ध महिला के समान देवी दिखाई देती हैं। विधवा होने के कारण देवी श्वेत वस्त्र धारण करती हैं, श्वेत वर्ण ही इन्हें प्रिय हैं, तीन नेत्रों से युक्त भद्दी छवि युक्त हैं, देवी धूमावती।

3-देवी रुद्राक्ष की माला आभूषण रूप में धारण करती हैं, इनके हाथों में एक सूप हैं; माना जाता हैं देवी जिस पर कुपित होती हैं उसके समस्त सुख इत्यादि अपने सूप पर ही ले जाती हैं। इन्होंने ही अपने शरीर से उग्र-चंडिका को प्रकट किया हैं। असुरों के कच्चे मांस का सेवन करके भी इनकी क्षुधा का निवारण नहीं हो पाया हैं। ये अतृप्त हैं। संसार बंधन से विरक्त होने की शक्ति देवी ही प्रदान करती हैं, जो साधक के योग की उच्च अवस्था तथा मोक्ष प्राप्त करने हेतु सहायक होती हैं।देवी धूमावती धुएं के स्वरूप में विद्यमान है तथा पार्वती के भयंकर और उग्र स्वभाव का प्रतिनिधित्व करती हैं। ज्येष्ठ माह में शुक्ल पक्ष की अष्टमी 'धूमावती जयंती' होती है, इसी तिथि में देवी का प्रादुर्भाव हुआ था। देवी ने एक बार प्रण किया था ! कि जो मुझे युद्ध में परास्त करेगा, वही मेरा पति-स्वामी होगा, मैं उसी से विवाह करूँगी परन्तु ऐसा नहीं हुआ कि इन्हें युद्ध में कोई परास्त कर सके, परिणामस्वरूप देवी अकेली हैं।नारद पंचरात्र के अनुसार, देवी धूमावती ने ही उग्र चण्डिका, उग्र तारा जैसे उग्र तथा भयंकर प्रवृति वाली देवियों को अपने शरीर से प्रकट किया; उग्र स्वभाव, भयंकरता, क्रूरता इत्यादि देवी धूमावती ने ही इन देवियों को प्रदान की हैं। देवी की ध्वनि, हजारों गीदड़ों के एक साथ चिल्लाने जैसी हैं, जो महान भय-दायक हैं। देवी धूमावती, भगवान शिव की विधवा के रूप में विद्यमान हैं; अपने पति भगवान शिव को निगल जाने के कारण देवी विधवा हैं। देवी का

भौतिक स्वरूप क्रोध से उत्पन्न दुष्परिणाम तथा पश्चाताप को भी इंगित करता हैं।

देवी धूमावती की उत्पत्ति से सम्बंधित कथा ;-

1-देवी धूमावती के प्रादुर्भाव से सम्बंधित दो कथाएँ प्राप्त होती हैं। प्रथम प्रजापति दक्ष के यज्ञ से सम्बंधित हैं। सती अपने पिता दक्ष से उनके यज्ञानुष्ठान स्थल में घोर अपमानित हुई। दक्ष ने अपनी पुत्री सती को स्वामी शिव सहित खूब उलटा सीधा कहा। परिणामस्वरूप, देवी अपने तथा स्वामी (शिव) के अपमान से तिरस्कृत हो, सम्पूर्ण यजमानों के सामने देखते ही देखते अपनी आहुति यज्ञ कुंड में दे दी; जिस कारण देवी की मृत्यु हो गई। यज्ञ स्थल में हाहाकार मच गया, सभी अत्यंत भयभीत हो गए। उस समय यज्ञ-कुंड से देवी सती, धुएं के रूप में बाहर निकली। यज्ञ कुंड से निसर्ग धुएं को ही देवी धूमावती माना जाता हैं।स्वतंत्र तंत्र के अनुसार, एक समय देवी पार्वती भगवान शिव के साथ, कैलाश में बैठी हुई थी। तीव्र क्षुधा से ग्रस्त होने के कारण उन्होंने शिवजी से भोजन प्रदान करने का निवेदन किया। भगवान शिव ने प्रतीक्षा करने के लिया कहा। कुछ समय पश्चात उन्होंने पुनः भोजन हेतु निवेदन किया परन्तु शिवजी ने उन्हें कुछ क्षण और प्रतीक्षा करने को कहा। बार-बार भगवान शिव द्वारा इस प्रकार आश्वासन देने पर, देवी धैर्य खो, क्रोधित हो गई और अपने पति को ही उठाकर निगल लिया। देवी के शरीर से एक धूम्र राशि निकली, उस धूम्र राशि ने उन्हें पूरी तरह से ढक दिया।

2-भगवान शिव, देवी के शरीर से बाहर आये

तथा कहा ! आपकी यह सुन्दर आकृति धुएं से ढक जाने के कारण धूमावती नाम से प्रसिद्ध होगी। अपने पति (भगवान शिव) को खा (निगल) लेने के परिणामस्वरूप देवी विधवा हैं। चूंकि देवी ने क्रोध वश अपने ही पति को खा लिया, देवी का सम्बन्ध दुर्भाग्य, अपवित्र, बेडौल, कुरूप जैसे नकारात्मक तथ्यों से हैं। देवी, श्मशान तथा अंधेरे स्थानों में निवास करने वाली है, समाज से बहिष्कृत है तथा अपवित्र स्थानों पर रहने वाली हैं।भगवान शिव ही धुएं के रूप में देवी धूमावती में विद्यमान है तथा अपने पति (भगवान शिव) से कलह करने के कारण देवी कलह प्रिया भी हैं। प्रत्येक कलह में देवी शक्ति ही उत्पात मचाती हैं, क्लेश करती हैं। देवी, चराचर जगत के अपवित्र प्रणाली के प्रतीक स्वरूपा है, चंचला, गलिताम्बरा, विरल-दंता, मुक्त केशी, शूर्प हस्ता, काक ध्वजिनी, रक्षा नेत्रा, कलह प्रिया इत्यादि देवी के अन्य प्रमुख नाम हैं। देवी का सम्बन्ध पूर्णतः अशुभता तथा नकारात्मक तत्वों से हैं, देवी की आराधना अशुभता तथा नकारात्मक विचारो के निवारण हेतु की जाती हैं।

3-देवी धूमावती की उपासना विपत्ति नाश, स्थिर रोग निवारण, युद्ध विजय, एवं घोर कर्म मारण, उच्चाटन इत्यादि में की जाती हैं। देवी के कोप से शोक, कलह, क्षुधा, तृष्णा मनुष्य के जीवन से कभी जाती ही नहीं हैं, स्थिर रहती हैं। देवी, प्रसन्न होने पर रोग तथा शोक दोनों विनाश कर देती है और कुपित होने पर समस्त भोग रहे कामनाओं का नाश कर देती हैं। आगम ग्रंथों के अनुसार, अभाव, संकट, कलह, रोग इत्यादि को दूर रखने हेतु देवी के आराधना की जाती हैं।देवी धूमावती, लक्ष्मीजी के छोटी बहन अलक्ष्मी या ज्येष्ठा हैं, जो समुद्र मंथन से प्राप्त हुई थीं और जिसका विवाह दुसह ऋषि के साथ हुआ था। मनुष्यों के गृह में स्थिर दरिद्रता तथा दुर्भाग्य के रूप में देवी ज्येष्ठा ही वास करती हैं और अपवित्र तथा अन्धकार में वास करती हैं, अंततः नाश का कारण बनती हैं।

संक्षेप में देवी धूमावती से सम्बंधित मुख्य तथ्य।

मुख्य नाम : धूमावती।

अन्य नाम : चंचला, गलिताम्बरा, विरल-दंता, मुक्त केशी, शूर्प-हस्ता, काक ध्वजिनी, रक्षा नेत्रा, कलह प्रिया।

भैरव : विधवा, काल भैरव ।

भगवान के 24 अवतारों से सम्बद्ध : भगवान मत्स्य अवतार।

कुल : श्री कुल।

दिशा : ईशान कोण।

स्वभाव : सौम्य-उग्र।

कार्य : अपवित्र स्थानों में निवास कर, रोग, समस्त प्रकार से सुख को हरने, दरिद्रता, शत्रुों का विनाश करने वाली।

शारीरिक वर्ण : काला।

साधना;-

हर प्रकार की द्ररिद्रता के नाश के लिए, तंत्र – मंत्र के लिए, जादू – टोना, बुरी नजर और भूत - प्रेत आदि समस्त भयों से मुक्ति के लिए, सभी रोगो के लिए, अभय प्रप्ति के लिए, साधना मे रक्षा के लिए, जीवन मे आने वाले हर प्रकार के दुखो को नष्ट करने वाली देवी है। इसे अलक्ष्मी भी कहा जाता है तो इसके निवारण के लिए धूमावती देवी की साधना करनी चाहिए ।मोती की माला या काले हकीक की माल का प्रयोग मंत्र जप में करें और कम से कम नौ माला मंत्र जप करें।

मंत्र- "ॐ धूं धूं धूमावती देव्यै स्वाहाः"

माँ धूमावती मंत्र;-इस मंत्र का पुरश्चरण एक लाख जप है। जप का दशांश तिल मिश्रित घृत से होम करना चाहिए।

"ऊं धूं धूं धूमावती स्वाहा"

अन्य मंत्र;-

1. (7 Syllables Mantra) ॐ धूं धूमावती स्वाहा ॥

2. (8 Syllables Mantra) ॐ धूं धूं धूमावती स्वाहा

3. (10 Syllables Mantra) ॐ धूं धूं धूं धूमावती स्वाहा ॥

4. (14 Syllables Mantra) ॐ धूं धूं धुर धुर धूमावती क्रों फट् स्वाहा ॥

5. (15 Syllables Mantra) ॐ धूं धूमावती देवदत्त धावति स्वाहा ॥

6. ॐ धूं धूं धूमावती ठः ठः स्वाहा

7. ॐ धूमावत्यै विद्महे संहारिण्यै धीमहि तन्नो धूमा प्रचोदयात॥

नेताजी का जीवन राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा का प्रतीक : धनखड़

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 जनवरी। महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पराक्रम दिवस के रूप में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रमों का आयोजन कर नेताजी के राष्ट्र के प्रति अद्वितीय योगदान को स्मरण किया गया तथा उनके आदर्शों को आत्मसात करने का आह्वान किया गया।

भाजपा के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व मंत्री औमप्रकाश धनखड़ ने बादली विधानसभा क्षेत्र के गांव बाढ़सा में आयोजित विकसित भारत – जी राम जी कार्यक्रम में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि नेताजी का जीवन त्याग, साहस और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा का प्रतीक है। आज का दिन हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलकर एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दें। उन्होंने कहा कि नेताजी का "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा" का नारा आज भी युवाओं में जोश और ऊर्जा भर देता है।

-इंडिया गेट पर स्थापित नेता जी की प्रतिमा राष्ट्र के गौरव के प्रतीक

गांव बाढ़सा में आयोजित कार्यक्रम में नेता जी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर नमन करते भाजपा के राष्ट्रीय सचिव औममप्रकाश धनखड़

पूर्व मंत्री श्री धनखड़ ने कहा कि देश लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इंडिया गेट पर वर्ष 2022 में नेता जी प्रतिमा स्थापित की। नेता जी की भव्य प्रतिमा पूरे देशवासियों को प्रेरित करती है।नेताजी के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज में हरियाणा के बहादुर सैनिकों का विशेष योगदान रहा है। आजाद हिंद फौज की बहादुरी से उस समय दुनिया बड़ी ताकत अंग्रेजी हुकूमत घबरा गई थी। नेता जी ने सबसे पहले आजादी का डंका बजाते हुए अंडमान निकोबार में तिरंगा फहराया तो अंग्रेज बैकफुट आए और भारत से बोरिया बिस्तरा बांधने की सोचने लगे । कार्यक्रम में काफी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और ग्रामीण मौजूद रहे।

वहीं झज्जर में नगर परिषद चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

बहादुरगढ़ में नगर परिषद की चेयरपर्सन सरोज राठी ने शहर के गणमान्य नागरिकों के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि नेताजी का संघर्षपूर्ण जीवन आज की पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है।

कार्यक्रमों के दौरान उपस्थित लोगों ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आदर्शों को अपनाने और देश की एकता, अखंडता व विकास के लिए निरंतर कार्य करने का संकल्प लिया। जिलेभर में आयोजित कार्यक्रमों में देशभक्ति का माहौल देखने को मिला।

हरियाणा बागवानी नर्सरी एक्ट नर्सरियों में गुणवत्ता मानकों को करेगा सुनिश्चित : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 जनवरी। हरियाणा सरकार किसानों की आय बढ़ाने, बागवानी को प्रोत्साहित करने और कृषि को लाभकारी बनाने के लिए निरंतर दूरदर्शी और किसान हितैषी नीतियां लागू कर रही है। प्रदेश सरकार द्वारा हरियाणा बागवानी नर्सरी एक्ट-2025 को लागू किया गया है, जिसका उद्देश्य फलों, फूलों, सब्जियों, औषधीय पौधों एवं अन्य बागवानी फसलों के उच्च गुणवत्ता वाले पौधे किसानों और उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराना है।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा बागवानी नर्सरी एक्ट-2025 नर्सरियों में गुणवत्ता मानकों को सुनिश्चित करेगा और किसानों को बागवानी की ओर आकर्षित करेगा, जिससे उनकी आमदनी में वृद्धि होगी। उन्होंने बताया कि इसी तरह मुख्यमंत्री बागवानी बीमा योजना (एम.बी.बी.वाई.) लागू है की हुई है जिसका उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं, प्रतिकूल मौसम और जलवायु असंतुलन से होने वाले नुकसान से किसानों की फसलों को सुरक्षा प्रदान करना है। इस योजना के अंतर्गत राज्य में अधिकांश बागवानी फसलें शामिल हैं। फलों और सब्जियों के लिए 750 रूपए से एक हजार रुपए प्रति एकड़ प्रीमियम लिया जाता है, जबकि नुकसान की स्थिति में सब्जियों व मसाला फसलों के लिए 30 हजार रुपए तथा फलों के लिए 40 हजार रुपए तक मुआवजा दिया जाता है। डीसी ने बताया कि हरियाणा सरकार ने बागवानी के सतत विकास के लिए जाइका (जे.आई.सी.ए.) सहायता प्राप्त परियोजना को भी मंजूरी दी है। यह परियोजना 9 वर्षों में दो चरणों में लागू की जाएगी और इससे प्री-हार्वेस्ट तथा पोस्ट-हार्वेस्ट प्रबंधन सहित संपूर्ण बागवानी आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत किया जाएगा। इन पहलों के माध्यम से हरियाणा सरकार किसानों की आय बढ़ाने, कृषि को लाभकारी बनाने और राज्य को कृषि नवाचार का केंद्र बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

नेत्र जांच शिविर में 180 चालकों ने कराई आखों की जांच

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 जनवरी। एसडीएम एवं जिला परिवहन अधिकारी अंकित कुमार चौकसे (आईएएस) की अध्यक्षता में शुक्रवार को झज्जर स्थित बस स्टैंड परिसर में नेत्र जांच एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य बस चालकों के स्वास्थ्य की जांच कर सड़क सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ करना रहा।

शिविर के दौरान 180 बस चालकों की आंखों तथा सामान्य स्वास्थ्य की जांच की गई। जांच के उपरांत जिन चालकों को आवश्यकता पाई गई, उन्हें निशुल्क चश्मे भी उपलब्ध करवाए गए। इस पहल की चालकों द्वारा सराहना की गई।

कैंप में स्वास्थ्य विभाग की टीम के साथ-साथ आरोग्यम अस्पताल, जुलाना से आए डॉ. योगेश नांदल ने चालकों की आंखों की विस्तृत जांच के साथ-साथ जनरल बॉडी चेकअप किया। चिकित्सकों ने चालकों को आंखों की नियमित जांच कराने, संतुलित आहार लेने और पर्याप्त विश्राम करने की सलाह दी, ताकि लंबी दूरी की यात्राओं के दौरान किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य समस्या से बचा जा सके।

एसडीएम एवं जिला परिवहन अधिकारी अंकित कुमार चौकसे ने कहा कि चालकों का स्वस्थ रहना सड़क सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविर भविष्य में भी आयोजित किए जाएंगे, ताकि यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके और दुर्घटनाओं की संभावनाओं को कम किया जा सके।

अखिल भारतीय सिविल सेवा खेल ट्रायल में भाग लें झज्जर के अधिकारी : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 जनवरी। अखिल भारतीय सिविल सेवा अधिकारियों के लिए विभिन्न खेलों के ट्रायल 27 जनवरी से 2 फरवरी 2026 तक खेल विभाग द्वारा हरियाणा के विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए जाएंगे। उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिला झज्जर के पात्र महिला एवं पुरुष सिविल सेवा अधिकारियों से इन ट्रायल में भाग लेने का आह्वान किया है।

उपायुक्त ने बताया कि अखिल भारतीय सिविल सेवा खेल प्रतियोगिताओं के अंतर्गत कैरम, कबड्डी, शतरंज, फिजिकल, क्रिकेट एवं बैडमिंटन खेलों के लिए ट्रायल आयोजित किए जा रहे हैं। इन प्रतियोगिताओं में हरियाणा राज्य का

प्रतिनिधित्व करने के लिए खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा।

उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि कबड्डी खेल के लिए पुरुष अधिकारियों का ट्रायल 27 जनवरी तथा महिला अधिकारियों का ट्रायल 28 जनवरी को सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम, पलवल में आयोजित किया जाएगा। क्रिकेट खेल के लिए 29 जनवरी को करण खेल स्टेडियम, करनाल में ट्रायल लिया जाएगा। इसी दिन शतरंज प्रतियोगिता का ट्रायल ताऊ देवी लाल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, पंचकूला में तथा फिजिकल खेल का ट्रायल छोटूराम स्टेडियम, रोहतक में आयोजित होगा।

इसके अतिरिक्त, बैडमिंटन खेल के ट्रायल 2 फरवरी को ताऊ देवी लाल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, पंचकूला में तथा कैरम खेल के ट्रायल 2 फरवरी को कर्ण स्टेडियम, करनाल में आयोजित किए जाएंगे।

उपायुक्त ने कहा कि जिला झज्जर के इच्छुक एवं पात्र सिविल सेवा अधिकारी निर्धारित तिथि व स्थान पर पहुंचकर ट्रायल में भाग लें तथा राज्य एवं जिले का नाम रोशन करें।

27 जनवरी को जिला के सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में होंगे सूर्य नमस्कार कार्यक्रम

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 जनवरी। जिलेभर में आयुष विभाग, हरियाणा योग आयोग एवं जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में आयुष शिविर, सूर्य नमस्कार अभ्यास जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रमों का उद्देश्य नागरिकों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ देशभक्ति और सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना रहा।

जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. संगीता हुड्डा ने बताया कि उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के मार्गदर्शन में जिलेभर में विभिन्न योग एवं धार्मिक संस्थाओं के सहयोग से सूर्य नमस्कार अभियान निरंतर जारी है। उन्होंने जानकारी दी कि आगामी 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में सूर्य नमस्कार अभ्यास को विशेष रूप से शामिल किया जाएगा। इसके अतिरिक्त 27 जनवरी को जिला झज्जर के सभी नागरिक अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी), प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) एवं सब-सेंटर्स पर सभी स्टाफ सदस्यों को सूर्य नमस्कार का अभ्यास करवाया जाएगा।

जिला योग संयोजक डॉ. पवन कुमार ने बताया कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती व बसंत पंचमी के अवसर पर झज्जर और बेरी में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। झज्जर स्थित ग्रीन फील्ड स्कूल में आयुष विभाग की ओर से बलदेव हरमेश एवं नवीन कुमार ने विद्यार्थियों को सूर्य नमस्कार का अभ्यास कराया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल के प्रधानाचार्य महेंद्र सिंह गोलिया ने बतौर मुख्य अतिथि दीप पूजन कर किया। इस दौरान विद्यार्थियों द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों की वेशभूषा पर आधारित फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसने सभी का ध्यान आकर्षित किया।

शहर के छावनी मोहल्ले में शुक्रवार को आयोजित आयुष चिकित्सा शिविर में रोगियों की स्वास्थ्य जांच करते चिकित्सक

बेरी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर परिसर में आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों को यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाते आयुष विभाग के योग सहायक।

वहीं बेरी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल में समाजसेवी पीतांबर गौड़ ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। यहां आयुष विभाग के योग सहायक गीता, सपना, जसवीर एवं डिंपल ने बारी-बारी से सूर्य नमस्कार एवं अन्य यौगिक क्रियाओं का अभ्यास कराया। कार्यक्रम के दौरान फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता के साथ-साथ हवन एवं पौधारोपण भी किया गया। इस अवसर पर राजेंद्र, अनिल कुमार एवं इंद्र सिंह सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

छावनी मोहल्ला में आयुष चिकित्सा शिविर में मरीजों ने कराई जांच

उधर, बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में शहर के छावनी मोहल्ला स्थित शिव मंदिर परिसर में आयुष विभाग द्वारा आयुष चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. संगीता हुड्डा ने किया। शिविर में डॉ. जितेंद्र, डॉ. प्रमोद एवं डॉ. काजल ने आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के तहत तथा डॉ. मनोज ने होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के अनुसार रोगियों की जांच कर निःशुल्क दवाएं वितरित कीं।

इस अवसर पर आयुष विभाग से नरेंद्र सिंह कुमार, नवीन, गौतम, दीपक, कर्ण, सर्वोदय जनहित समाज कल्याण समिति के प्रधान प्रदीप शर्मा, कौशल्या वर्मा, सूरजभान, अनिल कुमार, अमित, निरंजन, राज सिंह सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

अरुण शर्मा "लक्की हिन्दुस्तानी" अमॅच्योर जीत कुनो डो एसोसिएशन ऑफ दिल्ली के सर्वसम्मति से चुने गए

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

नईदिल्ली। जीत कुनो डो मार्शल आर्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया एवं अमॅच्योर जीत कुनो डो एसोसिएशन ऑफ दिल्ली (रजि.) के तत्वावधान में एक भव्य एवं अत्यंत गरिमामय नियुक्ति समारोह एवं वार्षिक आम सभा का आयोजन किया गया ।यह कार्यक्रम खेल, समाज और राष्ट्रनिर्माण की भावना से ओतप्रोत रहा। वार्षिक आम सभा में फेडरेशन के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने राष्ट्रीय महासचिव विकास गिहरा के नेतृत्व तथा चुनाव अधिकारी की उपस्थिति में अरुण शर्मा, जिन्हें लोकप्रिय रूप से "लक्की हिंदुस्तानी" के नाम से जाना जाता है। उन्हें सर्वसम्मति से दिल्ली राज्य अध्यक्ष चुना।

इस अवसर पर फेडरेशन के पदाधिकारियों ने अपने संबोधन में खेलों के विकास की विस्तृत एवं दूरदर्शी रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि नवनियुक्त माननीय दिल्ली राज्य अध्यक्ष अरुण शर्मा "लक्की हिंदुस्तानी" के नेतृत्व में आने वाले समय में युवाओं को खेलों से जोड़ने, मार्शल आर्ट्स एवं भारतीय पारंपरिक खेलों को बढ़ावा देने तथा राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाओं को निखारने के लिए ठोस, योजनाबद्ध एवं प्रभावी कदम उठाए जाएंगे। दिल्ली राज्य अध्यक्ष चुने जाने के बाद अपने संबोधन में अरुण शर्मा "लक्की हिंदुस्तानी" ने समारोह में उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों, फेडरेशन के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं जनसमूह का हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार एवं दिल्ली सरकार द्वारा खेलों के विकास हेतु संचालित खेलो इंडिया, फिट इंडिया सहित अन्य विभिन्न सरकारी योजनाओं की सराहना करते हुए कहा कि फेडरेशन आगामी दिनों में इन योजनाओं की जानकारी प्रत्येक खिलाड़ी तक पहुँचाने के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। साथ ही उन्होंने भारतीय पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहित करने एवं उन्हें सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त खेलों की श्रेणी में शामिल करवाने के लिए निरंतर प्रयास करने का संकल्प भी दोहराया। उल्लेखनीय है कि अरुण शर्मा "लक्की हिंदुस्तानी" विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों में अग्रणी भूमिका निभाते हुए लंबे समय से राष्ट्र एवं समाज हित में निरंतर सक्रिय रूप से कार्यरत रहे हैं। उनकी नियुक्ति को खेल जगत में

एक सकारात्मक, प्रेरणादायी एवं दूरगामी कदम के रूप में देखा जा रहा है ।कार्यक्रम के दौरान पंजाबी सभा के चेयरमैन नरेन्द्र मेहता (पप्पी) एवं प्रधान प्रवीण मदान के नेतृत्व में सभा के सदस्यों अनिल खुराना, अजय सचदेवा, कमल बाली, पवन शर्मा, मनीष ग्रोवर, नितिन लखनपाल, बी.एस. मक्कड़, अजीत मक्कड़, सुशील खन्ना, तरुण अरोड़ा द्वारा अरुण शर्मा का भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इसके अलावा विभिन्न खेल संगठनों एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया गया ।समारोह में पंडित भोलानाथ शुक्ला, पवन सचदेवा, अश्वनी मल्होत्रा, विवेक गौर, दीपक भारद्वाज, सागर माथुर, चिरायु सिंह त्रेहन, मधु दास, अंजू तोमर, सतीश शर्मा, जगदीश ठेकेदार, विपुल खण्डेलवाल, विक्रम कपूर, दीपक झा, मीनू सागर, राम कुमार गुप्ता अजय मेहरा, वी. के. शर्मा, सुभाष व्यास, सुषमा शर्मा, धीरज पांडेय, सपना, पुनीत गांधी, राज कुमार दुबे, महावीर, अरुण मल्होत्रा, गौरव गोयल, जिनेश जैन, रामचंद्र ठाकुर, कनिका टंडन, विवेक टंडन, आशु गुप्ता आदि के अलावा देश के अनेक प्रतिष्ठित अतिथियों एवं विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति विशेष रही।

इसके साथ ही अमॅच्योर जीत कुनो डो एसोसिएशन ऑफ दिल्ली (रजि.) एवं जीत कुनो डो मार्शल आर्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के पदाधिकारियों एवं सदस्यों में नीरज सूद, सुमन चौधरी, ज्वलंत कुमार, जगदीश प्रसाद, परी शर्मा, खुशी, वाणी शर्मा, वैभव अरोड़ा, इब्राहिम ख़ान, सविता, पर्व, मुन्नवर, अखिल ख़ान, योगेश, मृदुल चौहान एवं पीयूष पाल की सक्रिय एवं सराहनीय सहभागिता रही।

पुलिस की मिलीभगत से थाने की बगल में वन माफियाओं ने काट डालें पीपल के हरे वृक्ष जिम्मेदार बेखबर।

परिवहन विशेष न्यूज

बुलंदशहर अहमदगढ़ थाने की बगल में लकड़ कट्टों ने काट डाले ऑक्सीजन देने वाले पीपल के हरे पेड़। एक तरफ जहां सरकार प्रति वर्ष लाखों करोड़ों खर्च कर पौधे लगाकर उन्हें सीचने का काम कर रही है वहीं वन माफिया विभाग व पुलिस की मिलीभगत से थाने की बगल में लगे ही हरे पेड़ों पर आरा चला दिया। वन माफियाओं ने अहमदगढ़ थाने की दीवार से सटे हुए पीपल के हरे पेड़ काट डाले और थाना पुलिस चुप्पी साधे हुए हैं। इस संबंध में कई बार वन विभाग के संबंधित अधिकारीयों से वन माफियाओं के खिलाफ कार्रवाई करने के बारे जानकारी ली गई तो वन विभाग के अधिकारी और कर्मचारियों ने कार्रवाई करने के नाम पर टाल-मटोल करते नजर आए। क्षेत्रीय वन अधिकारी आदित्य सिंह ने बताया कि टीम भेजी गई हैं दो लोगों को हिरासत में लिया गया हैं उचित कार्रवाई की जायेगी। पुलिस व वन विभाग के कार्रवाई नहीं करने के इसी नचीलेपन को देखकर यह लग रहा है कि वन विभाग और पुलिस की साठगांठ प्रतीत हो रही है जिससे वन माफियाओं के हौसले बुलंद हैं। अहमदगढ़ थाना पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल खड़ा होता है कि बगल में बिना परमिशन हरे पेड़ काट डालें और पुलिस देखती रही आखिर क्यूँ। जबकि पुलिस और वन विभाग का रौब देखने को मिलता हैं जब कोई गरीब किसान अपना कोई गिरा हुआ भी पेड़ कटवा लें तो पुलिस की गाड़ी चंद मिनटों में मौके पर पहुंचकर कार्रवाई करने को लेकर डरातीं हैं और जब आज थाने की दीवार से लगें पीपल व नीम के दर्जन पेड़ काट डाले फिर भी पुलिस और विभाग चुप्पी साधे हुए हैं। अब देखना यह है कि अवैध कटान में सम्मिलित थाना पुलिस और वन विभाग के सम्बंधित अधिकारियों पर उच्च अधिकारी जांच कर कार्रवाई करते हैं या यह मामला कार्रवाई के नाम पर भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जायेगा?

नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की 130वीं जयंती फ्रीडम फाइटर सक्सेसर ऑर्गनाइजेशन पंजाब की तरफ से भंडारी ब्रिज पर बड़ी धूमधाम से मनाई गई।

अमृतसर 23 जनवरी (साहिल बेरी)

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता ज्ञान सिंह सग्गू प्रेसिडेंट और करमजीत सिंह केपी जनरल सेक्रेटरी ने की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्पीकर्स ने कहा कि आजादी का जो सपना देखा गया था, वह पूरा नहीं हुआ है। युवाओं में करप्शन, बेरोजगारी और नशाखोरी फैली हुई है। नेताजी की मूर्ति और फोटो पर फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर सुरिंदर सिंह आहूजा, रविंदर कौर, राज कुमार, सरोज नंदा, अमरजीत सिंह भाटिया, सुरिंदर कुमार, नरेश कुमार, प्रिंसिपल विनोद कपूर, प्रभजोत सिंह, हरविंदर सिंह, कमल भल्ला, इंदर कौर, सरबजीत सिंह, सुरिंदर बोक्सर, अवतार मुच्छल, निर्मलजीत सिंह आदि ने श्रद्धा के फूल चढ़ाकर नेताजी को महान देशभक्त बताया। आए हुए फ्रीडम फाइटर्स को सम्मानित किया गया।

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय खिचड़ीपुर में 'ऑपरेशन सिंदूर' विषय पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय खिचड़ीपुर में परीक्षा पे चर्चा–2026 (पी पी सी–2026) के अंतर्गत 'ऑपरेशन सिंदूर' विषय पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता में कुल 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिन्हें दो वर्गों कक्षा VI से VIII एवं कक्षा IX से XII में विभाजित किया गया। कार्यक्रम में कुल 10 विद्यालयों के विद्यार्थियों ने सहभागिता की, जिनमें मेजबान विद्यालय सहित समीपवर्ती केन्द्रीय विद्यालय, राज्य सरकार के विद्यालय एवं सीबीएसई से संबद्ध विद्यालय शामिल थे।

कार्यक्रम को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना के साथ संपन्न किया गया। 'वोकल फॉर लोकल' एवं 'आत्मनिर्भर भारत' की भावना को प्रोत्साहित करते हुए सभी प्रतिभागियों को पुस्तकें प्रदान की गईं तथा शीर्ष तीन विजेताओं को पुस्तकों एवं अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। माध्यमिक वर्ग (कक्षा IX से XII) में पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय खिचड़ीपुर शिफ्ट–2 के मास्टर प्रांजल कुमार द्विवेदी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

वहीं मिडिल वर्ग (कक्षा VI से VIII) में पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय एनएफसी विज्ञान विहार की कुमारी कर्तीसा देशवाल एवं पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय खिचड़ीपुर शिफ्ट–1 के मास्टर अतुल कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य श्री अरविंद कुमार ने विद्यार्थियों को परीक्षा पे चर्चा में अधिक से अधिक संख्या में सहभागी बनने का आह्वान किया तथा विजेता विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं।

कार्यक्रम में श्री सुबोध झा, श्रीमती पूजा बिष्ट, श्रीमती प्रियंका यादव, श्री अब्दुल वहाब सहित अन्य शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

बदायूं की इशिका सक्सेना ने सीएम युवा योजना की मदद से Odilia The Pearl Town की शुरुआत की

परिवहन विशेष न्यूज

घर से शुरू हुए इस ज्वेलरी ब्रांड ने महिलाओं को घर बैठे काम और आत्मनिर्भरता का रास्ता दिखाया. उत्तर प्रदेश के बदायूं की प्रोफेसर कॉलोनी में रहने वाली इशिका सक्सेना ने छोटे से प्रयोग को नामचीन ब्रांड बना दिया है.

उन्होंने Odilia The Pearl Town की शुरुआत घर से की. यह एक हैंडक्राफ्टेड ज्वेलरी ब्रांड है, जो मोतियों के हार बनाने के लिए जाना जाता है. खास बात यह है कि यह काम स्थानीय महिलाओं को घर बैठे रोज़गार देने का जरिया भी बना है. इशिका ने वाराणसी से फैशन और ज्वेलरी डिजाइन में तीन साल का डिप्लोमा किया. पढ़ाई के दौरान ही उन्हें पार्ट टाइम काम करने की अनुमति मिली. उन्होंने एक बड़ी ज्वेलरी कंपनी में ट्रेनी डिजाइनर के रूप में काम शुरू किया.

शुरुआती दिनों में उन्हें झटका भी लगा. उनके बनाए करीब एक दर्जन स्केच कंपनी ने यह कहकर खारिज कर दिए कि उन्हें ब्रांड की डिजाइन भाषा समझनी होगी.

यह अनुभव उनके लिए सीख बन गया. सिर्फ एक हफ्ते में उन्होंने नए सिरे से डिजाइन तैयार किए. इस बार उनके काम को मंजूरी मिल गई. इशिका बताती हैं कि यही वह पल था, जब उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने खुद पर भरोसा करना सीखा. यह अनुभव उनके लिए सीख बन गया. सिर्फ एक हफ्ते में उन्होंने नए सिरे से डिजाइन तैयार किए. इस बार उनके काम को मंजूरी मिल गई. इशिका बताती हैं कि यही वह पल था, जब उनका आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने खुद पर भरोसा करना सीखा.

दिसंबर २०२३ में इशिका ने नौकरी छोड़ दी और अपना काम शुरू करने का फैसला लिया. शुरुआत बहुत साधारण थी. सफेद कांच की बीड्स से बने हार और ब्रेसलेट, जिनमें साधारण वेन और बेसिक फिनिशिंग होती थी. धीरे धीरे उन्होंने कच्चे माल की गुणवत्ता बेहतर की. पॉलिशिंग सुधारी. रंगों की रेंज बढ़ाई. फिर मोतियों पर आधारित कलेक्शन के साथ साथ कुंदन, फैब्रिक, जूट और टेराकोटा ज्वेलरी पर भी काम शुरू किया.आज Odilia The Pearl Town एक छोटे लेकिन व्यवस्थित सिस्टम पर चलता है. इशिका खुद हर नए डिजाइन का सैंपल तैयार करती हैं. इसके बाद यह काम घर से काम करने वाली महिलाओं को दिया जाता है. महिलाएं पीस रेट पर ज्वेलरी असेंबल करती हैं. काम की जटिलता के हिसाब से उन्हें प्रति पीस पांच से बीस रुपये तक मिलते हैं.बल्क ऑर्डर आमतौर पर तीन से पांच दिनों में पूरे हो जाते हैं. हर कारीगर को बीड्स, धागे और जरूरी सामान का एक किट दिया जाता है. साथ में एक तैयार सैंपल भी होता है, ताकि डिजाइन में एकरूपता बनी रहे. काम पूरा होने के बाद हर पीस की फिनिशिंग और पॉलिशिंग चेक की जाती है. जो पीस मानक पर खरे उतरते हैं, उन्हीं पर भुगतान होता है.

इस मॉडल से महिलाओं को घर और काम के बीच संतुलन बनाने में मदद मिलती है. इशिका कहती हैं कि यही उनके ब्रांड की असली ताकत है.आज Odilia The Pearl Town अपने काम को स्थिर करने की दिशा में बढ़ रहा है. इशिका का फोकस गुणवत्ता बनाए रखने पर है. ऑर्डर जल्दी पूरे हों, इस पर ध्यान है. वह धीरे धीरे और महिलाओं को इस नेटवर्क से जोड़ना चाहती हैं. उनका लक्ष्य साफ है. ऐसा काम खड़ा करना, जो महिलाओं को घर बैठे सम्मानजनक और टिकाऊ आमदनी दे सके.

इशिका सक्सेना की यह कहानी बताती है कि सही ट्रेनिंग, धैर्य और छोटे कदम मिलकर बड़े सपनों की नींव बन सकते हैं।

वृन्दावन के परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर में धूमधाम से मनाया गया बाबू गुलाब राय का 138 वां जयंती समारोह

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन।गौशाला नगर स्थित परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर में हिन्दी के सुविख्यात साहित्यकार बाबू गुलाब राय का 138 वां जयंती समारोह बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया गया।समारोह का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं बाबू गुलाब राय के चित्रपट पर माल्यार्पण करके किया गया।तत्पश्चात प्रख्यात साहित्यकार रयूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी की अध्यक्षता में विचार गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ।

जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पधारे ठाकुर श्रीराधा रमण मन्दिर के सेवाधिकारी वैष्णवाचार्य श्रीवत्स गोस्वामी ने बाबू गुलाब राय का स्मरण करते हुए कहा कि बाबू गुलाब राय के स्मृति उत्सव में शामिल होना गौरव की बात है। उन जैसा साहित्यकार, न्यायाधीश होना मुश्किल है। उनके कृतित्व की सुगंध ऐसी है,कि उनके ग्रंथों का उच्चारण मात्र से ही हम सभी अभिभूत हो जाते हैं। संस्कृति की परवाह करने वाले थे बाबूजी। उन्होंने अज्ञान और अंधकार को मिटा कर भारतीय संस्कृति और साहित्य के भी पुष्पों को पल्लवित किया।

मुख्य वक्ता साहित्यकार डॉ. अतुल प्रभाकर ने कहा कि बाबू गुलाब राय का व्यक्तित्व आकाश की तरह विशाल था। उनका साहित्य गद्य था, उसमें भी निबंध और समीक्षा प्रमुख थीं। नई पीढ़ी को उनके समग्र साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। उनके लेखन की भाषा सरल और रोचक थी।

जयंती समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात साहित्यकार रयूपी रत्नर डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि बाबू गुलाब राय हिंदी साहित्य आकाश के एक ऐसे जाजुल्यमान नक्षत्र हैं,जो लोगो को अपने साहित्य के द्वारा हमेशा प्रेरणा देते रहेगें।

हिंदी साहित्य के मनीषी डॉ. प्रताप पाल शर्मा ने कहा किआचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे साहित्यकारों की तरह बाबू गुलाब राय का नाम लिया जाता है। वे साहित्यकारों का मार्गदर्शन करने वाले रहे।

बाबू गुलाब राय स्मृति संस्थान, आगरा के अध्यक्ष एवं विख्यात कवयित्री डॉक्टर शशि तिवारी ने प्रारंभ में सरस्वती मां की वंदना की।साथ ही पिछले वर्षों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

आर.बी.एस. कॉलेज की पूर्व प्राचार्य एवं साहित्यकार डॉ. सुषमा सिंह ने बाबू गुलाब राय को देश का अनुपम साहित्यकार बताते हुए उनके साहित्य पर अनुसरण करने की बात कही।

कार्यक्रम में संत प्रवर स्वामी महेशानंद सरस्वती महाराज,ठाकुर श्रीराधा रमण मन्दिर सेवायत आचार्य पद्मनाभ गोस्वामी, डॉक्टर कृष्ण चंद्र गोस्वामी, डॉक्टर चंद्र प्रकाश शर्मा, डॉ. राजेश शर्मा, डॉक्टर मधुर बिहारी गोस्वामी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम के अन्तर्गत आगरा से आए शरद गुप्ता ने काव्य पाठ किया। साथ ही समारोह में गुलाब राय के जीवन पर एक वृत्त चित्र भी दिखाया गया।जिसकी व्याख्या डॉ. सुबोध कुमार गुप्ता ने की। संचालन डॉ. बृजभूषण चतुर्वेदी एवं गोपाल कृष्ण दुबे ने संयुक्त रूप से किया।धन्यवाद ज्ञापन व आभार व्यक्त कार्यक्रम की संयोजक डॉक्टर दीपशिखा इंजीनियर ने किया।

इस अवसर पर राकेश कुमार राजीव गुप्ता भारतेंदु गुप्ता विपुल गुप्ता, डॉ. वर्तिका किशोर, डॉ. तन्मय किशोर, डॉक्टर विनय इंजीनियर, डॉक्टर गौरांगी किशोर, वरिष्ठ पत्रकार व साहित्यकार आदर्श नंदन गुप्ता (आगरा), संजय राय, राजेंद्र शर्मा, हेमंत कुमार द्विवेदी, चंद्रप्रकाश द्विवेदी, प्रतिभा शर्मा एडवोकेट, प्रमुख समाजसेवी महेश खंडेलवाल, सत्यदेवी गर्ग विद्यालय के प्रधानाचार्य नरेन्द्र दत्त शर्मा, श्रीमती निधि गर्ग, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।समारोह का समापन स्वरूचिपूर्ण भोज के साथ हुआ।

रामस्वरूप रावतसरे

एनएसए अजीत डोभाल ने ऐसा क्या कहा कि कुछ लोग तिलमिलाने लगे!

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल ने 10 जनवरी 2026 को कहा कि भारत की स्वतंत्रता आसानी से नहीं मिली बल्कि इसके पीछे पीढ़ियों तक चला दर्द, अपमान और विनाश छिपा हुआ है। विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग के उद्घाटन समारोह में अजीत डोभाल ने युवाओं से अपील की कि वे इतिहास के कड़वे सबक को समझें और उससे ताकत लेकर देश के पुनर्निर्माण में जुटें।

उन्होंने कहा कि आजाद भारत में अक्सर लोग यह भूल जाते हैं कि पिछली पीढ़ियों ने इस स्वतंत्रता के लिए कितने बड़े बलिदान दिए। आज यह देश जितना आजाद दिखता है, वह हमेशा ऐसा नहीं था। हमारे पूर्वजों ने इसकी भारी कीमत चुकाई है। डोभाल ने सदियों तक चले विदेशी शासन के दौर का जिक्र करते हुए बताया कि उस समय लोगों को फाँसी, गाँवों के विनाश और सांस्कृतिक विरासत के नष्ट होने जैसी भयानक यातनाएँ झेलनी पड़ीं।

अजीत डोभाल के अनुसार भारत के अतीत को सिर्फ दुख के साथ याद नहीं किया जाना चाहिए बल्कि उससे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि इतिहास में कई लोगों को फाँसी दी गई, गाँव जला दिए गए, हमारी सभ्यता को नुकसान पहुँचाया गया। मंदिर लूटे गए और लोग बेबस होकर यह सब होते देखते रहे। उनके अनुसार, यह दर्दनाक इतिहास हर युवा के भीतर एक आग जगा देना चाहिए। उनके अनुसार, बदला शब्द सुनने में कठोर लग सकता है लेकिन इस संदर्भ में इसका अर्थ बहुत गहरा है। डोभाल ने कहा, "बदला एक आदर्श शब्द नहीं है लेकिन यह एक मजबूत ताकत है। हमें अपने इतिहास का बदला लेना होगा। इसका मतलब हिंसा नहीं है बल्कि अपने मूल्यों, अधिकारों और विश्वासों पर आधारित एक मजबूत और आत्मविश्वासी भारत का निर्माण करना ही असली बदला है।''

डोभाल ने कहा कि भारत ने कभी दूसरे देशों पर हमला नहीं किया, न ही उनके मंदिर तोड़े या उनकी संपत्ति लूटी जबकि उस दौर में दुनिया के कई हिस्से अभी विकास की शुरुआती अवस्था में थे। हालाँकि, उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि इतिहास में भारत की सबसे बड़ी गलती अपनी सुरक्षा से जुड़े खतरों को नजरअंदाज करना रही। उन्होंने कहा, "हम अपने लिए पैदा हो रहे खतरों को पहचान नहीं पाए और इतिहास ने हमें इसकी सजा दी।" डोभाल ने जोर देकर कहा कि इन सबक को भूल जाना आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे बड़ा नुकसान होगा।

डोभाल के अनुसार भारत ने इतिहास में कई बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की हैं। हम कभी विज्ञान, अर्थव्यवस्था और तकनीक के शिखर पर थे, लेकिन समय के साथ गिरावट भी आई, क्योंकि कुछ भी स्थायी नहीं होता। उन्होंने कहा कि एक मजबूत राष्ट्र बने रहने के लिए लगातार प्रयास करना पड़ता है। राष्ट्र और राष्ट्रभाव एक निरंतर संघर्ष है, जो कभी खत्म नहीं होता।

नतीजतन एनएसए को सोशल मीडिया पर सांप्रदायिक, नफरत फैलाने वाला, देश को बाँटने वाला व इनसिक्योर बताकर सेकुलर भारत के लिए खतरा बताया जा रहा है। उन्हें घेरने वालों में इस्लामी पत्रकारिता के लिए कुख्यात आरफा खानम, अलगाववादियों का समर्थन करने वाली जम्मू-कश्मीर की पूर्व सीएम महबूबा मुफ्ती जैसों के नाम हैं।

महबूबा मुफ़्ती ने ट्वीट किया, "यह बहुत दुखद है कि डोभाल जैसे उच्च पद के अधिकारी, जिनका काम देश को अंदरूनी और बाहरी खतरों से बचाना है, उन्होंने नफरत फैलाने वाली सांप्रदायिक विचारधारा को अपनाया और मुसलमानों के खिलाफ हिंसा को सामान्य बनाने की कोशिश की। गरीब और अशिक्षित युवाओं को एक पहले से ही परेशान और लक्ष्य बन रही अल्पसंख्यक समुदाय पर हमला करने के लिए उकसाता है।" वहीं आरफा खानम, कंचना यादव और स्वाति चतुर्वेदी का भी यही पैटर्न है। वह अच्छे से जान-समझ रही हैं कि डोभाल ने क्या बोला है, लेकिन उनकी बात चूँकि वामपंथी एजेंडे पर सही नहीं बैठ रही, इसलिए उन्होंने उस बयान के खुद ही मायने गढ़ लिए।

डोभाल के बयान से साफ है कि वो कहीं भी 'बदले' शब्द को हिंसा से जोड़कर नहीं बोल रहे थे बल्कि एक मजबूत और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण की बात कर रहे हैं। उन्होंने इतिहास से सीख लेकर राष्ट्र को पुनर्निर्मित करने की बात कही, न कि किसी समुदाय के खिलाफ हिंसा भड़काने की। उनका मकसद अपने श्रोता युवाओं में देशभक्ति जगाने का था, द्वेष फैलाने का नहीं।

हालाँकि, उनके बयान को वामपंथी और कट्टरपंथी अपने एजेंडे के अनुसार तोड़-मरोड़कर पेश कर रहे हैं। उन्हें शायद डर है कि कहीं सच में लोग उस इतिहास को लेकर सजग न हो जाएँ जहाँ देश को तोड़ने वालों और संपत्तियों को लूटने वालों का जिक्र है। इनकी दिक्कतें इसलिए हैं क्योंकि जिन्होंने भारत को समय-समय पर नष्ट करने का प्रयास किया वो ही इनके पसंदीदा 'नायक' हैं।

ऐसे 'बुद्धिजीवी' वर्ग लोगों को समझने की जरूरत है कि इतिहास को इनके हिसाब से पेश करने का एक दौर बीत चुका है। अब वो समय नहीं है कि इस्लामी आक्रांताओं के कुकृत्यों को महिमामंडन करने का काम हो। इतिहास का अर्थ वही होता है जो बीते समय का सच हो। अगर उसे बताने से एक समुदाय पर सवाल उठ रहे हैं, तो समस्या उस रिलिजन में है न कि इतिहास में।

आज अगर देश को लूटे जाने के इतिहास को गहराई से पढ़ने पर 'लुटेरे' इस्लामी आक्रांता ही निकलकर आ रहे हैं तो इसमें इतिहास बताने वाले की क्या गलती है? गलती उसकी है जिसने ये किया, गलती उसकी है जिसने हमेशा ये समझा कि दुनिया वही इतिहास पढ़ेगी जो वो पढ़ाना चाहेंगे। गलती उस वर्ग की है जिसे लगा कि उन्होंने कह दिया तो अकबर हमेशा 'महान' बना रहेगा और औरंगजेब को लोग हमेशा 'मंदिर का निर्माण' कराने वाले के तौर पर जानेंगे।

जानकारों के अनुसार डोभाल के बयान को विकृत ढंग से पेश करने के चक्कर में ये लोग खुद ही इसको स्वीकार कर बैठे कि देश के मंदिर को लूटने वाली घटनाएँ बिलकुल सच हैं। महबूबा मुफ्ती के ट्वीट से स्पष्ट है कि वह मान रही हैं कि 21वीं सदी से पहले ये घटनाएँ हुईं थीं लेकिन फिर भी वो इससे मुँह इसलिए मोड़ रही हैं क्योंकि वो नहीं चाहती इतिहास को बार-बार उकेरा जाए जिससे पता चले सच क्या था।

श्री राम जी के द्वितीय वार्षिकोत्सव उत्सव पर मोहनेश्वर महादेव मित्र मंडल द्वारा भजन कीर्तन का आयोजन किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

मोहनेश्वर महादेव मित्र मंडल द्वारा श्री राम जी के द्वितीय वार्षिकोत्सव उत्सव पर्व पर बी एस ए कालेज स्थित हनुमान बगीची में हनुमान चालीसा पाठ एवं श्री राम स्तुति और भजन कीर्तन का आयोजन किया गया मीडिया प्रभारी विकास खत्री ने बताया कि धार्मिक आयोजनों से भाईचारा बढ़ता है और वातावरण शुद्ध रहता है क्योंकि हनुमान जी कलयुग के जाग्रत देव हैं इनकी पूजा करने से श्री राम जी का आशीर्वाद प्राप्त होता है मोहनेश्वर महादेव मित्र मंडल द्वारा हनुमान चालीसा पाठ करने से भूत प्रेत भय नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है सभी साथियों ने मिलकर भजन प्रस्तुत किए मेरे मन है राम तेरे तन में है राम, नगरी हो अयोध्या सी, मेरी किस्मत के भाग खुल जाएंगे राम आएंगे, राम से बड़ा राम का नाम जैसे, भजन प्रस्तुत किए उसके बाद प्रसाद वितरण किया गया इस अवसर पर, विष्णु शर्मा, योगेश चौरसिया, वंशी सिंह, विकास खत्री, पंडित जी, ओमप्रकाश सिंह, पप्पू ठाकुर, एवं अन्य भक्तगण उपस्थित रहे।

दर्द से जन्मी मेरी कविता

अदिति कुशवाहा
बैकुंठपुर (कोरिया), छत्तीसगढ़

दो हजार पच्चीस के प्रारम्भ में,
मैंने नई उमंगें संजोई थीं।
नए सपनों की एक शुरुआत,
नन्ही आँखों में बोई थीं।
पर उसी आरंभिक मोड़ पर,
ज़िंदगी ने ऐसा मोड़ लिया—
सिर से पिता का साया,
पल भर में उठ गया।
कुछ समझ पाती उससे पहले,
हर राह ने मुझे अकेला छोड़ दिया।
अंदर से पूरी तरह टूट गई थी मैं,
गिरकर भी खुद को संभाला।

आँसुओं के सैलाब में दबकर,
खामोशी से दर्द को पाला।
फिर उन्हीं टूटे क्षणों के बीच,
मैंने हिम्मत को फिर पहचाना—
जीने का अर्थ तलाशा,
खुद को दोबारा जाना।
इसी अँधेरे सफ़र में,
पिता की आवाज़ आई—
"बेटी!" अपने मन को लिखो,
अपने दिल की सुनवाई।
कोरे पन्नों को भिगो दो,
कोमल हृदय की करुणा से,

दर्द को शब्दों में ढालो,
सच की पूरी सरुणा से।
तभी कविता मेरी साथी बनी,
पीड़ा ने रचना सिखलाई।
हृदय के घावों से निकले शब्दों ने,
मुझे मेरी पहचान दिलाई।
दो हजार पच्चीस भले ही दुखद रहा,
पर इसी ने मेरी आवाज़ जगाई।
अब चाहती हूँ, इस वर्ष के अंत में,
मेरा सृजन मेरी स्वर बने।
दर्द से जन्मी मेरी कविता,
किसी और की ताक़त बने।

विश्व आर्थिक मंच पर भारतीय ट्रेड कूटनीति के मायने

● कमलेश पांडेय

दावोस में चली विश्व आर्थिक मंच (WEF) की बैठक में भारत ने अपनी मजबूत कूटनीतिक और आर्थिक उपस्थिति दर्ज कराई है। यहां पर भारतीय ट्रेड कूटनीति ने जो पॉलिसी नैरेटिव सेट किए और ग्लोबल इमेज विकसित किया, वह यहां कई मायने में अहम है। सबसे बड़ी बात तो यह कि यहां पर भारत ने वैश्विक निवेशकों के सामने खुद को चीन का वैकल्पिक हब के रूप में प्रस्तुत किया और विकसित भारत होने का स्थायी नजरिया पेश किया।

दरअसल, इस अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत ने जिस आर्थिक स्थिरता, वैश्विक लोकतंत्र और 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना पर बल दिया, उससे वैश्विक नीति-निर्धारण में इंडिया की भूमिका और अधिक मजबूत हुई। जब संयुक्त राष्ट्र संघ की कीमत पर अमेरिका नई विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने हेतु एक से बढ़कर एक जोखिम भरे दांव चल रहा हो, उस दौर में भी भारत की यह अहम उपस्थिति बहुत कुछ चुगली करती है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत को उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने के मोदी सरकार के इरादे स्पष्ट हैं जिसे भरपूर दुनियावी समर्थन भी मिल रहा है। इसके अहम आर्थिक व कूटनीतिक मायने हैं।

देखा जाए तो इस महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय बैठक में भारत के विभिन्न केंद्रीय मंत्रियों, कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों और प्रमुख उद्योगपतियों के बड़े प्रतिनिधिमंडल ने जिस तैयारी के साथ शिरकत की और निजी वैश्विक निवेश आकर्षित करने पर जोर दिया, उसका रणनीतिक महत्व है। इस दौरान देखा गया कि दावोस में भारत का प्रतिनिधिमंडल रेल, आईटी, ऊर्जा और उद्योग जैसे मंत्रालयों के मंत्रियों के साथ महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र प्रदेश, असम, मध्य प्रदेश, तेलंगाना और झारखंड जैसे राज्यों के मुख्यमंत्रियों तक फैला हुआ था जबकि रिलायंस, टाटा, महिंद्रा, इंफोसिस जैसे अंतर्राष्ट्रीय कॉरपोरेट दिग्गजों की भागीदारी ने निजी क्षेत्र में भारत की अहम ताकत दिखाई।

इससे नानाविध लाभ मिला और निवेश समझौते हुए, जैसे महाराष्ट्र के लिए हजारों करोड़ के एमओयू पर हस्ताक्षर होना। इससे दावोस में भारत पर चर्चा का केंद्र बना रहा। चर्चा भी वह कि क्या भारत मैन्युफैक्चरिंग और निवेश का नया हब बन सकता है, खासकर दिन ब दिन बदलते भू-राजनीतिक तनावों के बीच। सबसे खास बात यह कि वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (WEF) के अध्यक्ष ने भारत को सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था बताते हुए पीएम मोदी के सुधारों और ग्लोबल साउथ की आवाज की भरपूर सराहना की। इससे भारत-ईयू व्यापार समझौते पर भी सकारात्मक इनपुट के संकेत मिले।

इस तरह से देखा जाए तो दावोस (WEF 2026) की मौजूदा बैठक से भारत को सीधेसीधे दो तरह के बड़े फायदे मिलते दिखाई दे रहे हैं– पहला, निवेश व व्यापार के ठोस मौके, और दूसरा, भारत की छवि व कूटनीतिक प्रभाव में बढ़त। वहीं, निवेश और जॉब के बेशुमार मौके मिलने की बात अलग है। कहना न होगा कि भारत का पवेलियन और अलगअलग राज्य (खासतौर पर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र आदि) दावोस में निवेश आकर्षित करने के लिए आक्रामक तरीके से रोडशो, मीटिंग और एमओयू साइन कर रहे हैं, जिनका फोकस मैन्युफैक्चरिंग, हरित ऊर्जा, डेटा सेंटर व डिजिटल इकोनॉमी पर है।

दरअसल पिछले सालों के ट्रेंड के आधार पर दावोस प्लेटफॉर्म से भारत को अरबों डॉलर के निवेश आश्वासन मिलते रहे हैं, जो बाद में प्लांट, इंफ्रास्ट्रक्चर और स्टार्टअप फंडिंग के रूप में नौकरियां और उत्पादन क्षमता बढ़ाते हैं।

वहीं इस बार की खास बात यह है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दावोस में भारतीय बड़े उद्योगपतियों और कॉरपोरेट लीडर्स के साथ विशेष बैठक कर रहे हैं, जिसे संभावित भारतअमेरिका व्यापार समझौते की दिशा में सकारात्मक संकेत माना जा रहा है। यदि यहां किसी प्रकार की रूपरेखा या राजनीतिक सहमति बनती है तो आगे चलकर टैरिफ, मार्केट एक्सेस और टेक्नोलॉजी/डिफेंस कोऑपरेशन में भारत के लिए बेहतर शर्तें निकल सकती हैं।

एक खिलाड़ी से राष्ट्र तक: मुस्तफिजुर प्रकरण और टूटा विश्वास

क्रिकेट का मैदान केवल खेल का स्थल नहीं होता, वह राष्ट्रों की भावनाओं, आकांक्षाओं और आपसी विश्वास का प्रतिबिंब भी होता है। जब इसी मैदान से किसी देश की अनुपस्थिति की घोषणा होती है, तो वह केवल खिलाड़ियों की कमी नहीं दर्शाती, बल्कि विचारों और संबंधों के टूटने का संकेत भी देती है। भारत में होने वाले टी20 विश्व कप से बांग्लादेश का बहिष्कार इसी टूटन की घोषणा है। यह फैसला खेल भावना से अधिक राजनीति की भाषा बोलता है। जिस विश्व कप को वैश्विक एकता, प्रतिस्पर्धा और उत्सव का प्रतीक होना चाहिए था, वह अब संदेह, टकराव और कूटनीति का अखाड़ा बनता जा रहा है। यह घटना बताती है कि आधुनिक क्रिकेट अब केवल बल्ले और गेंद का खेल नहीं रहा, बल्कि सत्ता और अस्मिता का माध्यम बन चुका है।

इस पूरे प्रकरण की शुरुआत एक खिलाड़ी से हुई, लेकिन उसका विस्तार पूरे राष्ट्र तक पहुंच गया। मुस्तफिजुर रहमान का आईपीएल से बाहर होना एक पेशेवर निर्णय था, जैसा हर लीग में होता है, किंतु बांग्लादेश ने इसे सम्मान और सुरक्षा से जोड़कर देखा। यहीं से खेल निर्णय राजनीतिक मुद्दा बन गया। बीसीबी द्वारा मैच भारत से हटाकर श्रीलंका में कराने की मांग, आईसीसी का इनकार और फिर सीधा बहिष्कार, यह सब इस बात का प्रमाण है कि फैसले खेल तर्क से नहीं, बल्कि राजनीतिक दबाव में लिए गए। खेल सलाहकार और सरकारी नेतृत्व के तीखे बयान यह स्पष्ट करते हैं कि यह निर्णय क्रिकेट बोर्ड का नहीं, बल्कि सत्ता संरचना का था। परिणामस्वरूप संवाद की संभावना समाप्त हो गई और टकराव ने जगह ले ली।

भारत और बांग्लादेश के क्रिकेट संबंध ऐतिहासिक रूप से जटिल लेकिन सौहार्दपूर्ण रहे हैं। दोनों देशों ने संघर्ष और सहयोग, दोनों के उदाहरण पेश किए हैं। उनके बीच खेले गए मुकाबले केवल अंक तालिका की लड़ाई नहीं थे, बल्कि साझा इतिहास और क्षेत्रीय पहचान की अभिव्यक्ति भी थे। लेकिन हालिया राजनीतिक घटनाओं ने इस संतुलन को तोड़ दिया है। बांग्लादेश के भीतर भारत विरोधी भावनाएं तेज हुई हैं और क्रिकेट उनका सबसे प्रभावी मंच बन गया है। मुस्तफिजुर प्रकरण को राष्ट्रीय अपमान के रूप में प्रस्तुत कर सरकार ने जनभावनाओं को संगठित किया। ऐसे वातावरण में पीछे हटना राजनीतिक कमजोरी माना जाता है। यही कारण है कि क्रिकेट अब खेल कम और भावनात्मक राजनीति का औजार अधिक बनता जा रहा है।

इस बहिष्कार का सबसे गहरा और प्रत्यक्ष प्रभाव स्वयं बांग्लादेश क्रिकेट पर पड़ेगा। आर्थिक नुकसान केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं होता, वह पूरी खेल संरचना को प्रभावित करता है। आईसीसी से मिलने वाली राजस्व हिस्सेदारी, प्रायोजक अनुबंध, मैच फीस और पुरस्कार राशि का नुकसान बोर्ड को वर्षों पीछे धकेल सकता है। खिलाड़ियों के लिए विश्व कप केवल एक टूर्नामेंट नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय पहचान और करियर निर्माण का मंच होता है। वहां से बाहर होना उनके भविष्य की दिशा बदल सकता है। अनुभवी खिलाड़ियों के साथ-साथ युवा प्रतिभाओं के सपने भी अधर में लटक गए हैं। सुरक्षा के नाम पर लिया गया यह फैसला अंततः खिलाड़ियों से सबसे बड़ी कीमत वसूल करता दिखाई देता है।

भारत के लिए यह स्थिति पहली नजर में सहज प्रतीत हो सकती है, लेकिन इसके दूरगामी परिणाम कहीं अधिक गंभीर हैं। कमजोर प्रतिद्वंद्वी की अनुपस्थिति से प्रतियोगिता की गुणवत्ता प्रभावित होगी। अंतरराष्ट्रीय मंच पर आईसीसी और मेजबान देश की निष्पक्षता पर सवाल उठेंगे। यदि अन्य देश भी इसी मार्ग पर चलते हैं, तो विश्व कप की विश्वसनीयता कमजोर हो जाएगी। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड का समर्थन इस बात का संकेत है कि यह संकट सीमित नहीं रहेगा। दर्शक क्रिकेट को रोमांच और प्रतिस्पर्धा के लिए देखते हैं, राजनीतिक रणनीति के लिए नहीं। यदि यह संतुलन टूटा, तो दर्शकों का विश्वास भी धीरे-धीरे कम होता जाएगा। क्रिकेट और राजनीति का संबंध नया नहीं है, लेकिन उसका यह खुला और आक्रामक स्वरूप अत्यंत चिंताजनक है। जब सरकारें खेल निर्णयों में हस्तक्षेप करने लगती हैं, तब खिलाड़ी केवल प्रतीक बनकर रह जाते हैं। खेल संघों की स्वायत्तता कमजोर होती है और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं दबाव में आ जाती हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच पहले हुए बहिष्कारों ने चेतावनी दी थी, लेकिन उनसे कोई ठोस सबक नहीं लिया गया। यदि हर राजनीतिक असहमति का उत्तर बहिष्कार होगा, तो विश्व कप का वैश्विक स्वरूप समाप्त हो जाएगा। आईसीसी को अब केवल तटस्थ रहने के बजाय स्पष्ट और कठोर नीति बनानी होगी।

यह बहिष्कार किसी एक टूर्नामेंट तक सीमित घटना नहीं है, बल्कि वह मोड़ है जो क्रिकेट के भविष्य की दिशा तय कर सकता है। वर्षों की साझी मेहनत से बनी एशियाई क्रिकेट की एकता आज स्पष्ट रूप से दरकती दिखाई दे रही है। यदि राजनीति लगातार खेल पर हावी होती रही, तो आने वाली पीढ़ियों को एक ऐसा क्रिकेट विरासत में मिलेगा जो विभाजित होगा, अधूरा होगा और अपने मूल उद्देश्य से भटका हुआ होगा। खेल का जन्म राष्ट्रों को जोड़ने के लिए हुआ था, न कि उनके बीच की खाइयों को और गहरा करने के लिए। क्रिकेट की आत्मा प्रतिस्पर्धा में बसती है, विरोध और वैमनस्य में नहीं। जब सीमाएं खेल के मैदान में दीवार बन जाएं, तब आत्ममंथन केवल आवश्यक नहीं, बल्कि अनिवार्य हो जाता है।

फिर भी, संकट के इस दौर में आशा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। संवाद, पारदर्शिता और आपसी सम्मान ही इस टकराव से बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता हैं। बीसीबी, बीसीसीआई और आईसीसी को राजनीतिक दबावों से ऊपर उठकर खेल के व्यापक हित में निर्णय लेने होंगे। क्रिकेट को शक्ति प्रदर्शन का माध्यम नहीं, बल्कि विश्वास और संवाद का सेतु बने रहना चाहिए। यदि आज खेल को राजनीति की गिरफ्त से मुक्त नहीं किया गया, तो भविष्य में केवल विवादों की श्रृंखला बचेगी, उपलब्धियों की नहीं। मैदान पर संघर्ष बल्ले और गेंद से तय होना चाहिए, विचारधाराओं और सत्ता समीकरणों से नहीं। क्रिकेट की एकता की रक्षा करना अनिवार्य है, क्योंकि यही इस खेल की सबसे बड़ी पहचान भी है और उसकी सबसे बड़ी विजय भी।

-प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

सशक्त बालिका, समर्थ राष्ट्र: विकास की नई उड़ान

हर साल 24 जनवरी को भारत में राष्ट्रीय बालिका दिवस (नेशनल गर्ल चाइल्ड डे) मनाया जाता है। इसका उद्देश्य बालिकाओं के अधिकारों, शिक्षा, स्वास्थ्य और समान अवसरों के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाना है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह दिन समाज में लड़कियों के प्रति भेदभाव को मिटाने (समाज से लैंगिक भेदभाव को खत्म करने), बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं और कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने और उन्हें समाज में समान अधिकार दिलाने के लिए समर्पित है। कहना ग़लत नहीं होगा कि लड़कियों को समान अवसर देकर ही समृद्ध, सुरक्षित और समतावादी समाज बनाया जा सकता है। वास्तव में, यह दिन हमें याद दिलाता है कि आज की बालिका ही देश का उज्जवल भविष्य है। बहुत कम लोग जानते हैं कि यह दिन 24 जनवरी को इसलिए चुना गया क्योंकि इसी दिन 1966 में इंदिरा गांधी ने भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। यह महिलाओं की शक्ति और नेतृत्व का प्रतीक है। वास्तव में इस दिवस को मनाने की शुरुआत सबसे पहले वर्ष 2008 में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा की गई थी। हरियाणा के एक छोटे से गांव बीबीपुर (जींद जिला) से शुरू हुआ यह अभियान (सेल्फी विद डॉटर) अब राष्ट्रीय बालिका दिवस का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। हर वर्ष इस दिवस की एक थीम रखी जाती है और पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 2025 की थीम 'एमपावरिंग गर्ल्स फोर आ ब्राइट फ्यूचर' यानी कि 'उज्ज्वल भविष्य के लिए लड़कियों को सशक्त बनाना' रखी गई थी। इसमें लड़कियों के कौशल विकास और उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया गया था। इस साल यानी कि वर्ष 2026 के लिए संभवतः केंद्र और राज्य सरकारें बालिकाओं की शिक्षा, कौशल, सुरक्षा, बालिकाओं का डिजिटल सशक्तीकरण और नेतृत्व क्षमता को मजबूत बनाना जैसे संदेश पर फोकस करेंगी, ताकि हर लड़की को अपने सपनों को साकार करने का मौका मिल सके। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन का 'लापता महिलाएं' (मिसिंग विमेन) का सिद्धांत राष्ट्रीय बालिका दिवस की मूल भावना से गहराई से जुड़ा हुआ है। दरअसल, अमर्त्य सेन ने 1990 में एक चौंकाने वाला आंकड़ा दिया कि दुनिया में लगभग 10 करोड़ (100 मिलियन) महिलाएं 'लापता' हैं। इसका असली मतलब यह है कि अगर समाज में स्त्री और पुरुष को समान स्वास्थ्य, पोषण और अवसर मिलते, तो महिलाओं की संख्या आज की तुलना में 10 करोड़ ज्यादा होती। दूसरे शब्दों में कहें तो अमर्त्य सेन का 'लापता महिलाएं' सिद्धांत सीधे तौर पर उन सामाजिक बुराइयों की ओर इशारा करता है, जिन्हें खत्म करने के लिए राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। सेन के अनुसार, समाज में व्याप्त लैंगिक भेदभाव, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव और पोषण में कमी के कारण करोड़ों लड़कियां जन्म ही नहीं ले पातीं या समय से पहले मृत्यु का शिकार हो जाती हैं, जिससे जनसंख्या के आंकड़ों में उनकी संख्या पुरुषों के मुकाबले काफी कम हो जाती है। राष्ट्रीय बालिका दिवस इसी 'लापता' होने की प्रक्रिया को रोकने का एक बड़ा संकल्प है, जिसका उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या को समाप्त करना, लड़कियों की शिक्षा सुनिश्चित करना और उनके प्रति समाज की मानसिकता को बदलना है ताकि भविष्य में कोई भी बालिका संसाधनों के अभाव या भेदभाव के कारण समाज के नक्शे से ओझल न हो। यहां यह उल्लेखनीय है कि पिछले साल यानी कि वर्ष 2025 में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (बीबीबीपी) योजना की 10वीं वर्षगांठ के अवसर पर वर्ष 2025 का समारोह 22 जनवरी से 8 मार्च 2025 तक चलाया गया था, जिसका समापन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस यानी कि 8 मार्च 2025 को हुआ। पिछले ही साल सुकन्या समृद्धि योजना की भी दसवीं वर्षगांठ मनाई गई थी। गौरतलब है कि यह योजना केंद्र सरकार की 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' पहल के तहत शुरू की गई एक प्रमुख छोटी बचत योजना है, जो बालिकाओं के सुरक्षित भविष्य, शिक्षा और विवाह के लिए आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है। आज भारत सरकार और राज्य सरकारें बेटियों और महिलाओं के सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएँ चला रही हैं। इनमें क्रमशः बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ (लड़कियों के जन्म पर सकारात्मक सोच, बचपन में स्वास्थ्य सुरक्षा और शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए), सुकन्या समृद्धि योजना (बचत योजना), सबला/किशोरी शक्ति योजना (किशोरियों के पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, जीवन कौशल और कौशल प्रशिक्षण को सशक्त बनाने के लिए), प्रगति- तकनीकी शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति (एआईसीटीई-स्कीम), उड़ान योजना (सीबीएसई का मेरिट-आधारित सहायता प्रोग्राम) आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा, ग्रामीण व महिला समुदायों में जागरूकता, प्रशिक्षण और रोजगार-समर्थन के लिए महिला शक्ति केंद्र स्थापित किए गए हैं। केंद्र सरकार ही नहीं देश के विभिन्न राज्यों में आज बालिकाओं/महिलाओं के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रहीं हैं। इनमें क्रमशः पश्चिम बंगाल में कन्याश्री प्राकल्प (यह योजना 13–18 वर्ष की लड़कियों को शिक्षा जारी रखने और विवाह रोकने के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति और एक-बार की आर्थिक सहायता प्रदान करती है), मध्य प्रदेश सहित कई राज्य लाडली लक्ष्मी योजना चला रहे हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि यह योजना जन्म से लेकर 21 वर्ष की उम्र तक लड़कियों के लिए जमा/वित्तीय सहायता प्रदान करती है तथा शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक सुरक्षा को लक्ष्य बनाती है। ओडिशा में खुशी योजना एक अन्य योजना है, जो स्कूल-जाने वाली लड़कियों को निशुल्क सैनिटरी पैड प्रदान कर स्वास्थ्य और स्वच्छता सुनिश्चित करती है। इसके अलावा ओडिशा में ही सबहद्रा योजना भी चलाई जा रही है, जो 21-60 वर्ष की महिलाओं को प्रतिवर्ष वित्तीय सहायता प्रदान करने वाली बड़ी महिला-केंद्रित योजना है। वास्तव में यह योजना लड़कियों/महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देती है। इतना ही नहीं, नमो ड्रोन दीदी योजना एक आधुनिक पहल है जिसमें स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं/लड़कियों को कृषि कार्यों के लिए ड्रोन उड़ाने और उनके रखरखाव का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अंत में, राष्ट्रीय बालिका दिवस का मुख्य निष्कर्ष यह है कि समाज में बालिकाओं के प्रति दृष्टिकोण में एक बड़ा सकारात्मक बदलाव आया है। आज बालिकाएं केवल घरेलू सीमाओं तक ही सीमित नहीं रहीं हैं, बल्कि आज वे शिक्षा, खेल, अंतरिक्ष, बैंकिंग, सेना, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी जैसे हर क्षेत्र में अपनी योग्यता साबित कर रही हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज विभिन्न सरकारी योजनाओं और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से लिंगानुपात में बहुत सुधार हुआ है और बाल विवाह, कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियों में अभूतपूर्व कमी आई है। हालांकि, पूर्ण सशक्तीकरण के लिए अभी भी सुरक्षा, पोषण और उच्च शिक्षा के स्तर पर निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। अंततः, यह दिन हमें संकल्प दिलाने का माध्यम है कि एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण तभी संभव है जब बेटियों को समान अधिकार, सुरक्षा और अपनी प्रतिभा दिखाने का पूरा अवसर मिले।

-सुनील कुमार महला

संपादकीय चिंतन-मनन

वाइफ स्वैपिंग' और हमारे रिश्तों की टूटती नींव: समाज का आईना

- डॉ. प्रियंका सौरभ

कुछ विषय ऐसे होते हैं जिन पर लिखना आसान नहीं होता। वे केवल शब्दों की नहीं, बल्कि सामाजिक, मानसिक और नैतिक साहस की भी माँग करते हैं। यह विषय भी उन्हीं में से एक है, जहाँ चुनौती केवल प्रस्तुति की नहीं, बल्कि उस सच को सामने लाने की है जिसे समाज अक्सर ढककर रखना चाहता है। संस्कृति की आड़ में या आधुनिकता के नाम पर जिस चुपचाप गिरावट को स्वीकार किया जा रहा है, उस पर प्रश्न उठाना अब ज़रूरी हो गया है। आज जब परिवार की पवित्र संस्था पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं, 'वाइफ स्वैपिंग' जैसी प्रवृत्ति न केवल वैवाहिक बंधनों को चुनौती दे रही है, बल्कि पूरे समाज के मूल्यों को झकझोर रही है।

"वाइफ स्वप्पिंग" सुनते ही अधिकतर लोग इसे पश्चिमी संस्कृति या महानगरों तक सीमित मान लेते हैं। यह सोच हमें आत्मसंतोष देती है, लेकिन सच्चाई इससे कहीं अधिक असहज और व्यापक है। क्या यह प्रवृत्ति वास्तव में केवल बड़े शहरों तक सीमित है, या फिर इसकी छाया गाँवों और छोटे कस्बों तक भी पहुँच चुकी है—बस हम उसे देखने से बच रहे हैं? उत्तर प्रदेश, केरल और लद्दाख जैसे क्षेत्रों से सामने आए मामले बताते हैं कि यह समस्या ग्रामीण और शहरी दोनों स्तरों पर मौजूद है।

यह विषय सनसनी फैलाने के लिए नहीं, बल्कि समाज के भीतर बदलते रिश्तों को समझने के लिए ज़रूरी है। यह विवाह संस्था की कमजोर होती नींव, रिश्तों में बढ़ती दरार और आधुनिकता के नाम पर मूल्यों की गलत व्याख्या की ओर ध्यान दिलाता है। यह केवल शारीरिक इच्छा का प्रश्न नहीं, बल्कि असुरक्षा, मानसिक अधूरापन, संवादहीनता और सामाजिक पाखंड का परिणाम भी है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसमें भावनात्मक शोषण, ईर्ष्या और विश्वास का पूर्ण विघटन होता है।

इस तरह के संवेदनशील विषय को संतुलित और मर्यादित भाषा में रखना अत्यंत आवश्यक है, ताकि गंभीरता बनी रहे। यह भी सामने आता है कि किस प्रकार सामान्य दिखने वाले परिवार धीरे-धीरे ऐसे कुचक्र में फँस जाते हैं, जहाँ रिश्ते भावनाओं की जगह समझौते और दिखावे का रूप ले लेते हैं। बैंगलोर, हापुड़ जैसे स्थानों से सामने आए मामले इसकी पुष्टि करते हैं।

आज यह मान लेना भूल होगी कि ऐसी प्रवृत्तियाँ केवल महानगरों तक सीमित हैं। सोशल मीडिया और इंटरनेट ने जहाँ स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति के नए रास्ते खोले हैं, वहीं मूल्यों के क्षरण को भी आसान बना दिया है। आभासी दुनिया में "सामान्य" लगने वाली भाषा, व्यवहार और रिश्ते वास्तविक जीवन में परिवारों की नींव हिला रहे हैं। आईटी क्रांति, उपभोक्तावादी संस्कृति और पश्चिमी प्रभाव ने युवा वर्ग में प्रयोग की होड़ बढ़ाई है। आर्थिक असमानता, संयुक्त परिवार का विघटन और महिलाओं की आर्थिक निर्भरता इसे बढ़ावा दे रही हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से यह यौन असंतोष, ईर्ष्या और रोमांच की तलाश से उपजता है।

भारतीय संदर्भ में यह पुरुषप्रधान समाज की देन है। पत्नियाँ डर के मारे चुप रहती हैं—तलाक का कलंक, आर्थिक असुरक्षा या परिवार का विघटन। सोशल मीडिया ग्रुप्स ने इसे संगठित रूप दिया है। टियर-2 शहरों में तकनीक-साक्षर युवा इसमें लिप्त हैं। इसके प्रभाव विनाशकारी हैं। वैवाहिक स्तर पर विश्वास टूटता है, ईर्ष्या बढ़ती है, भावनात्मक लगाव नए पार्टनर से हो जाता है। बच्चों पर असर लंबे समय तक रहता है—वे असुरक्षा और रिश्तों की अस्थिरता सीखते हैं। विस्तारित परिवार समर्थन छोड़ देता है। समाज स्तर पर यह नैतिक क्षय और महिलाओं के शोषण को बढ़ावा देता है। भारत में परिवार संरचना बदल रही है, लेकिन यह विकृति नई चुनौतियाँ ला रही है।

यह विमर्श केवल प्रश्न खड़े नहीं करता, बल्कि समाधान की ओर भी संकेत करता है। परिवार स्तर पर खुला संवाद, काउंसलिंग, भावनात्मक अंतरंगता आवश्यक है। समाज स्तर पर स्कूलों में नैतिक शिक्षा, महिलाओं का सशक्तिकरण ज़रूरी है। कानूनी स्तर पर IPC धाराओं का सख्त उपयोग, परिवार परामर्श नीतियाँ बनानी चाहिए।

यह विषय अश्लीलता नहीं, बल्कि समाज का आईना है। यह पाठक को असहज करता है, सोचने पर मजबूर करता है। शायद इसी असहजता में इसका सबसे बड़ा सामाजिक महत्व निहित है—कि हम अपने रिश्तों को पुनः परिभाषित करें। समय है जागने का।

बजट स्थायित्व लाने वाला होना चाहिए

भारत का केंद्रीय बजट केवल आय व्यय का लेखा-जोखा नहीं होता बल्कि यह देश की आर्थिक सोच, नीति प्राथमिकताओं और भविष्य की दिशा का सालाना और दीर्घकालिक दोनों का औपचारिक दस्तावेज़ भी होता है। मेरा मानना है कि मौजूदा वैश्विक अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनावों, धीमी वैश्विक वृद्धि और घरेलू आर्थिक आवश्यकताओं के बीच प्रस्तुत होने वाला यह बजट किसी बड़े झटके या चौंकाने वाली घोषणाओं का मंच नहीं बल्कि स्थिरता, निरंतरता और संरचनात्मक मजबूती का संदेश देने वाला होना चाहिए। इस बजट से अपेक्षा भावनात्मक नहीं बल्कि यथार्थवादी दृष्टि से की जानी चाहिए। वित्त मंत्री के रूप में निर्मला सीतारमण द्वारा इस बार भी बजट पेश करने की निरंतरता भी यह दर्शाती है कि सरकार की नीयत इस विभाग और वित्त की नीतियों में स्थायित्व ही है.

यह बजट स्थायित्व वाला है कि नहीं, इसका सबसे पहला और बड़ा संकेत यही होगा कि सरकार किसी प्रकार के प्रयोगात्मक या लोकलुभावन रास्ते पर जा रही है नहीं। मेरा आकलन है कि यह एक कंटिन्युइटी बजट होगा जहाँ न तो बड़े कर सुधार देखने को मिलेंगे और न ही ऐसे मुफ्त उपहार जो राजकोषीय अनुशासन को खतरे में डालें। जीएसटी के सुधार त्योहारों में हो गए थे और आयकर में भी सुधार पिछली बजट में हो गया था. सरकार का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना होगा कि भारत एक पूर्वानुमेय, अनुशासित और निवेश के अनुकूल अर्थव्यवस्था है। वैश्विक निवेशकों और रेटिंग एजेंसियों के लिए यह भरोसे का संकेत अत्यंत महत्वपूर्ण है। राजकोषीय अनुशासन भी इस बजट का केंद्रीय स्तंभ बना रहेगा। सरकार एक बार फिर यह स्पष्ट करेगी कि उसका मध्यम अवधि का लक्ष्य राजकोषीय घाटे को GDP के लगभग 4.5 प्रतिशत तक लाना है। इसका अर्थ यह नहीं कि खर्च कम किया जाएगा बल्कि खर्च को अधिक गुणवत्तापूर्ण और उत्पादक बनाया जाएगा। पूंजीगत व्यय आधारित वृद्धि की रणनीति पर कोई समझौता नहीं होगा। राजस्व अनुमानों में भी यथार्थवाद दिखेगा ताकि बाद में संशोधन या असंतुलन की स्थिति न बने।

इस संदर्भ में अवसंरचना और पूंजीगत व्यय की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होगी। पिछले कुछ वर्षों में सरकार ने जिस तरह से रेलवे, राष्ट्रीय राजमार्गों, एक्सप्रेसवे, लॉजिस्टिक्स, बंदरगाहों और शहरी अवसंरचना पर निवेश बढ़ाया है, उसी प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया जाएगा। मेट्रो परियोजनाएँ, स्मार्ट सिटी से जुड़े काम, शहरी परिवहन और हरित अवसंरचना इस बजट में प्रमुख स्थान पाएँगे। खास बात यह होगी कि अब केवल बजट आवंटन नहीं बल्कि क्रियान्वयन की गति और दक्षता पर जोर रहेगा, ताकि निजी निवेश को भी आकर्षित किया जा सके। विनिर्माण क्षेत्र और 'मेक इन इंडिया' इस बजट का एक और अहम आयाम होंगे। उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजनाओं का विस्तार अंधाधुंध न होकर अधिक परिष्कृत और परिणामोन्मुख होगा। जिन क्षेत्रों में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं हुआ है, वहाँ पुनर्मूल्यांकन किया जाएगा। फोकस अब मात्र उत्पादन संख्या से हटकर मूल्यवर्धन, निर्यात क्षमता और रोजगार सृजन पर रहेगा। वैश्विक सप्लाई चेन में हो रहे बदलाव जहाँ चाइना प्लस वन की जगह चाइना प्लस मेनी का सिद्धांत उभर रहा है भारत के लिए अवसर भी हैं और चुनौती भी। यह बजट भारत को 'असेंबली इकॉनमी' से 'इंडस्ट्रियल इकॉनमी' की ओर ले जाने की सोच को मजबूत करेगा। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम तथा रोजगार सृजन को लेकर भी इस बजट से बहुत शोर-शराबे की उम्मीद नहीं करनी चाहिए लेकिन इसका महत्व कम नहीं होगा। सरकार यहाँ मुफ्त योजनाओं के बजाय संरचनात्मक सहायता पर ध्यान देगी। आसान ऋण उपलब्धता, क्रेडिट गारंटी का विस्तार, भुगतान चक्र को तेज करना और अनुपालन प्रक्रियाओं को सरल बनाना ये सभी कदम MSME सेक्टर को स्थिरता देंगे। मेरा आकलन है कि रोजगार को सीधे सब्सिडी से जोड़ने के बजाय, कौशल विकास और उत्पादकता बढ़ाने के जरिए रोजगार सृजन का रास्ता चुना जाएगा।

कर व्यवस्था के मोर्चे पर भी यही संतुलन दिखेगा। किसी बड़े टैक्स रिफॉर्म या क्रांतिकारी बदलाव की संभावना कम है। हालांकि, व्यक्तिगत आयकर में कुछ छोटे राहत उपाय, स्लैब या रिबेट में सीमित संशोधन, तथा TDS/TCS और कैपिटल गेन से जुड़ी जटिलताओं को सरल करने के संकेत मिल सकते हैं। GST को लेकर भी दरों में बड़े बदलाव के बजाय अनुपालन सरलीकरण, विवाद समाधान और प्रक्रिया सुधार पर जोर रहेगा। सरकार यह स्पष्ट संकेत देगी कि राजस्व स्थिरता उसके लिए सर्वोपरि है। डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर इस बजट का एक ऐसा पक्ष होगा जिस पर शायद बहुत शोर न हो, लेकिन दीर्घकाल में इसका प्रभाव गहरा होगा। UPI, अकाउंट एग्रीगेटर, ONDC और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के विस्तार के माध्यम से अर्थव्यवस्था को और अधिक औपचारिक बनाने की दिशा में कदम बढ़ेंगे। घरेलू बचत को भौतिक परिसंपत्तियों से वित्तीय परिसंपत्तियों की ओर मोड़ने का प्रयास भी जारी रहेगा। यह बदलाव भारत को एक डिजिटल-शासित और पारदर्शी अर्थव्यवस्था की ओर ले जाता है। सामाजिक क्षेत्र में सरकार का दृष्टिकोण विस्तारवादी नहीं बल्कि लक्षित रहेगा। डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर आधारित योजनाएँ, पोषण, महिलाओं से जुड़ी पहलें और आवास कार्यक्रमों की निरंतरता बनी रहेगी। लेकिन किसी नए बड़े अधिकार-आधारित या सार्वभौमिक कल्याण कार्यक्रम की संभावना कम है। कल्याण योजनाओं का उद्देश्य अधिक लोगों तक पहुँचना नहीं बल्कि सही व्यक्ति तक सही समय पर पहुँचना होना चाहिए। जी राम जी पर फोकस दिख सकता है क्यूंकि नाम बदलने के साथ ही सरकार इसे अब खुद के द्वारा लागू की गई योजना के रूप में प्रचारित करेगी। इस बजट से यह भी स्पष्ट समझना जरूरी है कि किन चीज़ों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। सार्वभौमिक आय योजना, बड़े पैमाने पर कृषि ऋण माफी, अचानक बड़े निजीकरण एलान या GST दरों में तीखे कट, ये सभी इस बजट के एजेंडे में नहीं होंगे। सरकार फिलहाल जोखिम उठाने के बजाय संतुलन बनाए रखने के मूड में दिख रही है। समग्र रूप से देखा जाए तो इस बजट के पीछे एक स्पष्ट आर्थिक दर्शन होगा खपत की बजाय निवेश से वृद्धि, नारों की बजाय प्रणालियों से सुधार और विस्तार की बजाय दक्षता से कल्याण। यह बजट शायद सुर्खियाँ न बनाए लेकिन भारत की दीर्घकालिक आर्थिक संरचना को मजबूत करने का काम करेगा। यही कारण है कि इससे अपेक्षा भावनाओं के आधार पर नहीं बल्कि दीर्घकालिक नीति दृष्टि के आधार पर की जानी चाहिए।

- पंकज जायसवाल

शिखरबद्ध आईमाता मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव 2 फरवरी से शुरू

परिवहन विशेष न्यूज

बेंगलूरू: सीरवी समाज जिगनी की ओर से नवनिर्मित शिखरबद्ध आईमाता मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका पूर्व लोकसभा सांसद व डेयरी अध्यक्ष डी.के. सुरेश को देकर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया।

संस्था के अध्यक्ष मांगीलाल राठौड़ ने बताया कि चार दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव सीरवी समाज के धर्मगुरु दीवान माधवसिंह व बाबा मंडली के सानिध्य में 02 फरवरी 2026 को शुरू होगा। इस अवसर पर तिलोकराम काग। डूंगाराम बर्फा ताराराम, जोराराम परिहार, मनोहर राठौड़, व जिगनी के पूर्व ग्राम सदस्य व वार्ड मेम्बर मौजूद थे।

कांग्रेस राज्यसभा चुनाव में अपने उम्मीदवार उतारेगी

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: कांग्रेस राज्यसभा चुनाव में अपने उम्मीदवार उतारेगी। PCC प्रेसिडेंट भक्त चरण दास ने इसकी जानकारी दी है। भक्त ने कहा, हारजीत डरे नहीं, हम राज्यसभा चुनाव में अपने उम्मीदवार उतारेंगे। जरूरी संख्या न होने के बावजूद 3/4 उम्मीदवारों के नाम तय हो गए हैं। पार्टी इस बारे में हाईकमान से बात करेगी कुछ कैंडिडेट पार्टी के अंदर या बाहर से नॉमिनेट किए जा सकते हैं। कांग्रेस का १४ विधायक और सीपीआई का १ विधायक है बीजेपी का २ आसन और बजद का १ आसन आसनी से जीत होगा ४ आसन द्वन्द में है। राज्यसभा चुनाव का शुरू हो गया है। देश के 10 राज्यों में खाली होने वाली 37 राज्यसभा सीटों के लिए इलेक्शन कमीशन ऑफ़ इंडिया ने प्रोसेस तेज़ कर दिया है। इलेक्शन कमीशन ने ओडिशा समेत 10 राज्यों के इलेक्शन ऑफिसर्स को लेटर लिखा है। अगले अप्रैल में 10 राज्यों की 37 सीटें खाली हो जाएंगी। महाराष्ट्र में 7, तमिलनाडु और बिहार में 6, पश्चिम बंगाल में 5-असम में 3, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और हरियाणा में 2-2 सीटें। अगर ओडिशा को देखें, तो ओडिशा में 4 और हिमाचल प्रदेश में एक सीट खाली होने वाली है। ओडिशा के 4 MPs का टर्म 2 अप्रैल को खत्म हो जाएगा। मुन्ना खान, निरंजन त्रियक, ममता महंत और सुजीत कुमार का टर्म खत्म हो

सात दिवसीय नर्मदा पुराण की कथा का समापन हुआ

हरिहर सिंह चौहान

महेश्वर मध्यप्रदेश में मां रेवा आरती समिति महेश्वर द्वारा मां नर्मदा प्राकट्य उत्सव के तहत पन्द्रह वर्ष के इस कथा पुष्प में मां नर्मदा महापुराण की सप्तम दिवसीय कथा का समापन हुआ। यहां कथा मुख्य घाट पर पंडित राकेश व्यास खेड़ी घाट मोटक्का के मुखारविंद हुई। आज मां नर्मदा महापुराण की कथा के समापन पर क्षेत्रीय विधायक राजकुमार मेव द्वारा पुजन व आरती की गई। इसके पश्चात पंडित श्री राकेश व्यास ने कहा कि मां नर्मदा के पावन तट पर पापों का क्षय व पुण्यो का उदय होता हैं और जीवन को कर्म क्षेत्र में गति मिलती है। मां रेवा का तट हमेशा सूर्य के समान उदित रहता है क्योंकि यहां सिद्ध क्षेत्र है जिसे महिष्मति साम्राज्य यही था और तपस्वी ऋषि मुनि तपस्या करते थे इस लिए हमें भी पवित्रता के आचरण पर चलने की सीख यहां की धरती देती है मां नर्मदा की महिमा और गरिमा दोनों पवित्रता में सर्वक्षेष्ठ है। कथा के समापन पर मां रेवा महिला मण्डल की मातृशक्ति बड़ी संख्या में शामिल थी। उपरांत आरती व प्रसाद वितरण के साथ समापन हुआ। विधायक जी स्वागत प्रदर्शन पी के गुप्ता, बृजलाल सोनेट, रमेश केवट और मां रेवा आरती समिति के अध्यक्ष प्रदीप शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

मनरेगा में सुधार का विरोध अनावश्यक है

मोदी सरकार ने जब से मनरेगा का नाम बदलकर जी रामजी किया है, तब से कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल इसका विरोध कर रहे हैं। इसके विरोध में कांग्रेस ने 45 दिन का विरोध आंदोलन शुरू किया था जो कि अभी भी चल रहा है। तेलंगाना, पंजाब और कर्नाटक की विधानसभा में इसके खिलाफ प्रस्ताव भी पास किया गया है। केरल, बंगाल और तमिलनाडु में भी इसका जबरदस्त विरोध किया जा रहा है। विपक्षी दलों का सबसे पहला विरोध तो मनरेगा का नाम बदलने को लेकर ही है। उनका कहना है कि इस योजना से गाँधीजी का नाम क्यों हटाया गया है। इसके अलावा योजना के स्वरूप में बदलाव का भी विरोध किया जा रहा है जिसमें मोदी सरकार ने योजना को मांग आधारित से बदलकर आपूर्ति आधारित बना दिया है। अब इस योजना पर केंद्र सरकार का नियंत्रण ज्यादा हो गया है. इसके अलावा राज्यों पर भी वित्तीय बोझ डाला गया है। विपक्षी दल इसे राज्यों की स्वायत्तता पर हमला बता रहे हैं और उनका कहना है कि सरकार ने राज्यों पर वित्तीय बोझ लाद दिया है। कुछ राज्यों द्वारा इस योजना को अदालत में भी चुनौती देने की तैयारी की जा रही है।

दूसरी तरफ केंद्र सरकार का कहना है कि उसने रोजगार गारंटी को 100 से 125 दिन कर दिया है। पहले इस योजना का सारा खर्च केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाता था, लेकिन अब राज्यों को भी 10-40 फीसदी बोझ सहन करना होगा। केंद्र सरकार का कहना है कि उसने ऐसा इसलिए किया है क्योंकि वो राज्यों की जवाबदेही तय करना चाहती है। केंद्र द्वारा सारा पैसा देने के कारण राज्य योजना पर ध्यान नहीं देते थे। सरकार ने बुवाई/कटाई के 60 दिनों के दौरान रोजगार पर रोक लगा दी है ताकि खेती के लिए मजदूर कम न पड़े। अब इस योजना में हर ग्रामीण परिवार को 125 दिन की वेतन आधारित गारंटी दी गयी है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस योजना को समग्र ग्रामीण विकास के साथ जोड़ा गया है। अब ये योजना सिर्फ पैसा बांटने तक सीमित नहीं रह गई है बल्कि इससे ग्रामीण इलाकों के विकास कार्यों को जोड़ा गया है। इस योजना के बारे में यह आम धारणा है कि इस योजना में सारे काम कागजों में किए जाते हैं, केंद्र सरकार इस धारणा को तोड़ना चाहती है। केंद्र सरकार चाहती है कि इस योजना के अंतर्गत किये गए कार्य धरातल पर दिखने चाहिए। सच तो यह है कि कागजों में काम होने की धारणा इसलिए बनी है क्योंकि इस योजना में किये गए काम धरातल पर दिखाई नहीं देते हैं।

जब से मोदी सरकार सत्ता में आई है, उसकी हर योजना और कार्यो का विरोध करना विपक्षी दलों की आदत हो गई है। अगर मोदी सरकार ने सिर्फ योजना का नाम बदला होता तो कांग्रेस का विरोध जायज ठहराया जा सकता था लेकिन सरकार ने इस योजना में बड़े बदलाव किए हैं। ऐसा लगता है कि सरकार ने जानबूझकर कर योजना के नाम में बदलाव किया है, ताकि योजना की पहचान उसके साथ जुड़ जाए। कांग्रेस यह तो देख रही है कि केंद्र सरकार ने योजना से गांधी जी का नाम हटा दिया है लेकिन वो यह नहीं देख पा रही है कि अब योजना के साथ भगवान राम का नाम जोड़ दिया गया है।

-राजेश कुमार पासी

बालिकाएं गढ़ रही हैं सफलता के नवल आयाम

परिवार एवं समाज के विकास के लिए यह अत्यावश्यक है कि स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से शिक्षा और विकास के अवसर उपलब्ध हों। स्वास्थ्य एवं पोषण के मामले में कोई भेदभावपूर्ण व्यवहार न किया जा रहा हो। हालांकि देश के पिछले कुछ दशक समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असमानता एवं गैरबराबरी के दौर से गुजरे हैं, लेकिन अब स्थिति बेहतर हो रही है जो अच्छा संकेत है। परिवार के विकास रथ का एक सबल पहिया होने के बावजूद स्त्री या बालिकाओं के प्रति समाज का नजरिया संकुचित एवं दोषपूर्ण था, जिसे भारत के लिंगानुपात से भलीभांति समझा जा सकता है। 2011 की जनगणना में पुरुष महिला लिगांनुपात 943 था। और पीछे की ओर चलें तो 933 (2001), 927 (1991), 934 (1981) रहा है, जिसका एक बड़ा कारण बालिका भ्रूण हत्या या नवजात कन्या हत्या, अशिक्षा, दहेज और पुरुष सत्तात्मक सोच थी। यदि बाल लिंगानुपात देखें तो 927 (2001) की अपेक्षा 919 (2011) घटा है। स्पष्ट है कि समाज में व्याप्त पुरुषवादी मानसिकता के कारण वंशबेल की वृद्धि हेतु पुत्र की कामना की जाती रही है और बेटी को पराया धन समझा जाता रहा है। स्त्री सशक्तिकरण की बातें तब तक बेमानी हो जाती है जब तक बालिकाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और रोजगार के समान अवसर उपलब्ध नहीं हो जाते। इसके लिए जरूरी है कि बालिकाओं के प्रति व्याप्त असमानता एवं भेदभाव पूर्ण पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवहार से सकल समाज मुक्त हो और बालक-बालिका के प्रति खान-पान एवं शिक्षा-दीक्षा के लिए समदृष्टि से एकसमान व्यवहार करे। लड़कियों द्वारा सामना की जा रही सभी प्रकार की असमानताओं और सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध जन-जागरूकता लाते हुए बालिका अधिकारों के प्रति समाज में चतुर्दिक चेतना का संचार एवं प्रचार-प्रसार करना ही एकमात्र विकल्प है। राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन इसी दिशा में उठाया गया एक सशक्त, सम्यक एवं सार्थक कदम है जिसके द्वारा समाज में जागरूकता बढ़ी है।

24 जनवरी को प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि देश में पहली बार एक स्त्री ने सरकार के नेतृत्व की कमान संभाली थी। इंदिरा गांधी पहली बार प्रधानमंत्री के रूप में 24 जनवरी, 1966 को पदारूढ़ हुई थीं। इंदिरा गांधी का नेतृत्व समाज और देश को दिशा देने वाला था और उनको एक शक्ति के रूप में याद किया जाता है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2008 में 24 जनवरी को इंदिरा गांधी को शक्ति के रूप में याद करने एवं बालिका शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण के महत्व पर बल देने हेतु राष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की थी। इस अवसर पर संपूर्ण देश में सरकारों द्वारा विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बालिका शिशु बचाने एवं बालिका लिंगानुपात बेहतर करते हुए बालिकाओं के आगे बढ़ाने के रास्ते पर आ रही चुनौतियां एवं बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान इसी दिशा में एक सशक्त प्रयास है जिसके द्वारा स्कूल जाने वाली बालिकाओं की संख्या में खासी वृद्धि हुई है और माता-पिता अभिभावक बालिका शिक्षा के महत्व से परिचित हुए हैं। बालिकाओं की शिक्षा की निरंतरता के लिए आरंभ की गई सुकन्या समृद्धि योजना से बालिकाओं की शिक्षा में आ रही रूकावटों को दूर किया गया है। इसके साथ ही विभिन्न संस्थाओं द्वारा बालिकाओं को आगे बढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाएं जाते हैं जिनसे प्रशिक्षित होकर बालिकाएं स्वरोजगार करते हुए समाज में स्त्री सशक्तिकरण के उदाहरण के रूप में देखी जा रही हैं। आज समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बालिकाओं ने न केवल पदार्पण किया है बल्कि उपलब्धियां और सफलताओं के नवल आयाम भी गढ़े हैं। अभी चंद्रयान 3 के सफल अभियान में वैज्ञानिकों की टीम में एक बड़ी संख्या महिलाओं की थी, जिससे देश का गौरव बढ़ा है। आज साहित्य, समाज सेवा, कला एवं संस्कृति, फिल्म, रंगमंच, विज्ञान, साहसिक खेल, पर्यटन, लोक साहित्य, विविध खेल, संगीत, शास्त्रीय नृत्य एवं सशस्त्र सेना आदि क्षेत्र में बालिकाएं अपनी प्रमुख भूमिका निर्वहन कर रही हैं। आज तमाम भारतीय महिलाएं बहुराष्ट्रीय कंपनियों की शीर्ष अधिकारी हैं। यह दर्शाता है कि समाज में बालक-बालिका के बीच असमान व्यवहार समाप्ति की ओर है, किंतु लक्ष्य अभी बहुत दूर है, अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। जब तक बालिकाओं के साथ छेड़खानी, बलात्कार और हिंसक अपराध समाप्त नहीं हो जाते, जब तक बालिकाओं को उनके हक नहीं मिल जाते तब तक हम चुप नहीं बैठ सकते।

स्मरण रहे, बालिकाएं समाज जीवन का निर्मल निर्झर प्रवाह हैं। बालिकाएं ऊर्जा हैं, सम्बल हैं, चेतना हैं। बालिकाएं ही राष्ट्र की प्राणधारा की संवाहिकाएं हैं। बालिकाएं युग के पृष्ठ पर शक्ति का अमिट हस्ताक्षर हैं। बालिकाएं जीवन का राग है, उत्सव हैं, फाग हैं, रचनात्मकता की आग हैं। बालिकाएं हैं तो समाज सुंदर है, सुवासित है, प्राणवान है। बालिकाएं हैं तो जीवन का अर्थ है अन्यथा सब व्यर्थ है। बालिकाएं हैं तो शांति है, समृद्धि है, संतुष्टि है। बालिका दिवस के अवसर पर हम देश की हर बालिका के विकास पथ पर ज्ञान का आलोक बिखेर सकें, नेह का सम्बल दे सकें, यही कामना करता हूं।

-प्रमोद दीक्षित मलय

जब जयहिंद संदेश तिरंगी बर्फी ने अंग्रेजी सत्ता की नींद उड़ा दी

मिठाई मन मोहती हैं, मुंह में स्वाद घोलती हैं। चाहे बच्चे-बूढ़े हों या तरुण किशोर, प्रौढ़ स्त्री-पुरुष हों या नवजवान। नौकरीपेशा अधिकारी-कर्मचारी हों या कामगार मजदूर किसान। शहरी नागरिक हों या वनवासी एवं गिरिवासी। मिठाई सभी को पसंद है और मिठाई देखते ही मुंह में पानी आने लगता है और जीभ पर विशेष स्वाद उतर आता है। मिठाई के सभी दीवाने हैं। मिठाई के बिना कोई तीज-त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ-कर्मकाण्ड, विवाह-निकाह सम्पन्न नहीं होता। जन्मदिन की पार्टी में केक के अलावा कोई और मिठाई न हो तो पार्टी फीकी हो जाती है। कार्यालयों में स्थानांतरण या सेवानिवृत्ति का विदाई समारोह हो तो मिठाई की प्लेटों की शोभा देखते ही बनती है। भगवान के भोगराग में भी मिठाई की थाली आवश्यक है। और तो और, श्मशान में मृतक की अंत्येष्टि में भी सात प्रकार की मिठाई का डिब्बा रखने की परम्परा विद्यमान है। कुल मिलाकर मिठाई समाज जीवन के दैनंदिन और विशेष आयोजनों का विशेष एवं अनिवार्य हिस्सा है जिसकी रिक्तता की पूर्ति असंभव है लेकिन क्या आप जानते हैं कि अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई में मिठाईयों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बनारस की तिरंगी बर्फी और कलकत्ता की जय हिंद संदेश बर्फी ने अंग्रेजी सत्ता की नींद उड़ा दी थी, तब उनके निर्माण एवं विक्रय पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।

लेख का शीर्षक देखकर पाठक चौंके होंगे कि क्या ऐसा सम्भव हुआ होगा किंतु यह बात सोलह आने सच और खरी है कि अंग्रेजों से भारत वर्ष की आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारियों एवं राजनीतिक नेताओ-सेनानियों की भांति हलवाइयों ने भी अपने अलग तरीके से अप्रत्यक्ष ढंग से महत्वपूर्ण योगदान दिया था। भले ही वह प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों से लोहा नहीं ले सके किंतु अपनी मिठाइयों के माध्यम से गुप्त संदेशों को न केवल क्रांतिकारियों तक पहुंचाया बल्कि क्रांतिकारियों को अपनी दुकानों में आश्रय भी दिया। किंतु दुर्भाग्यवश देश की आजादी की लड़ाई में मिठाई की दुकानों का योगदान अचर्चित एवं अलिखित रह अवश्य गया है पर बनारस, दिल्ली और कोलकाता की गलियों में उनके योगदान के मीठे किस्से आज भी हवा में तैर रहे हैं।

अगस्त 1942, महात्मा गांधी जी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन आरंभ किया। बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गये। अंग्रेजी हुकूमत ने देशभर में तिरंगा फहराने-लहराने तथा तिरंगा ध्वज साथ लेकर चलने-फिरने पर प्रतिबंध लगा दिया। साथ ही सार्वजनिक समारोहों के आयोजन करने पर भी रोक लगा दी गई। ऐसे अवसर पर आमजन में देशप्रेम की भावना उत्पन्न करने और अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन की धार को तीव्रतर बनाये रखने के लिए बनारस के देशभक्त हलवाई रघुनाथ प्रसाद ने एक तीन परतों की बर्फी बनाई, जिसे नाम दिया गया तिरंगी बर्फी। यह विशेष प्रकार की बर्फी काजू, बादाम और पिस्ता से तैयार की जाती थी तथा स्वतंत्रता सेनानियों एवं आमजन को भी मुफ्त भी खिलाई जाती थी ताकि उनके मन-मस्तिष्क में देशभक्ति का रंग और जिह्वा पर स्वाद चढ़ा रहे। इसके साथ ही जवाहर लड्डू, गांधी गौरव, सुभाष भोग, मोती पाक और वल्लभ संदेश नाम से विविध मिठाइयां बनाई जाती थीं।आज भी यह तिरंगी बर्फी बनारस के ठठेरी बाजार की उस दुकान में बनाई जा रही है हालांकि अब काजू ,बादाम एवं पिस्ता की जगह यह दूध और खोया से तैयार की जा रही है, लेकिन अपनी परंपरा का निर्वाह करते हुए यह तिरंगि बर्फी आज भी लोगों की पहली पसंद बनी हुई है.

आमतौर से स्वाधीनता दिवस तथा गणतंत्र दिवस में बहुत मांग रहती है। इसी प्रकार कोलकाता में मन्मथ दास नाम के हलवाई ने जयहिंद संदेश नाम की तीन रंगों की बर्फी तैयार की। ऊपर नारंगी रंग, बीच में मलाईदार खोवा की परत और नीचे पिस्ता से बनी हरी परत रहती थी। आपको जानकर यह आश्चर्य होगा कि तिरंगी बर्फी और जयहिंद संदेश की अत्यंत लोकप्रियता और इनसे आमजन में देशभक्ति की भावना का ज्वार उठ जाने से अंग्रेजी हुकूमत की नींद उड़ गई और अंग्रेजों ने जयहिंद संदेश तथा तिरंगी बर्फी निर्मित करने और विक्रय पर प्रतिबंध लगा दिया। बावजूद इसके यह बर्फी चोरी-छिपे बनाकर आम जनता तक पहुंचाई जाती रही।

अब मैं आपको दिल्ली की उन मिठाई की दुकानों की ओर लिए चलता हूं जहां भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद प्रभृति क्रांतिकारी न केवल गुप्त वार्ताएं करते थे बल्कि मिठाई के डिब्बों के आदान-प्रदान से एक-दूसरे तक गुप्त सूचनाएं भी पहुंचाते थे। जब अंग्रेजी सत्ता के गुप्तचर क्रांतिकारियों की टोह लेने के लिए चतुर्दिक सक्रिय रहते थे और क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम तक पहुंचने से पहले रोकने के लिए अंग्रेजी सत्ता कटिबद्ध थी तब क्रांतिकारियों ने मिठाईयां को कोड देकर महत्वपूर्ण संदेश गोपनीय ढंग से गुप्तचरों की आंखों में की धूल झोंकते हुए संबंधित क्रांतिकारी तक न केवल पहुंचाते थे बल्कि क्रांतिकारी गतिविधियां भी संपन्न करते थे। जैसे यदि मिठाई के डिब्बे में लड्डू है तो इसका आशय था कि अड्डे पर बम उतर रहे हैं, बंगाली छेना रसगुल्ला का अर्थ होता था कि विस्फोटकों की एक बड़ी खेप रास्ते पर है। इसी तरह यदि डिब्बे में बर्फी है तो पाने वाला क्रांतिकारी समझ जाता था कि कारतूस, गोला और बारूद उपलब्ध हो गया है। इन मिठाई की दुकानों की ओर अंग्रेजों का कभी ध्यान नहीं गया और न कभी छापा डाला गया। इसलिए क्रांतिकारी अंग्रेजों की नजरें बचा कर यहां बैठकर न केवल अपनी गुप्त वार्ताएं संपन्न करते थे बल्कि संकट और धरपकड़ के समय कुछ दिनों का आश्रय भी पाते थे।

भारत की आजादी के संघर्ष इतिहास का यह एक ऐसा अध्याय है जिसके पृष्ठ कोरे हैं। आवश्यकता है कि इस पर सरकार द्वारा शोध करवाकर स्वातंत्र्य समर में मिठाई की दुकानों के योगदान को अंकित किया जाये ताकि आगामी पीढ़ी परिचित हो प्रेरणा ग्रहण कर सके।

-प्रमोद दीक्षित मलय

न मुगलों ने पूछा, न अंग्रेजों ने, फिर मोदी-योगी के हिंदू शासन में धर्मदंड पर सवाल का दुस्साहस कैसे?

हिंदू प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और हिंदू मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के राज में एक ऐसे सुविख्यात हिंदू शंकराचार्य से उनके शंकराचार्य होने का सबूत मांगा गया है जिनका आशीर्वाद स्वयं मोदी ले चुके हैं। कानूनी सबूत तो शंकराचार्य ने दे दिये हैं किंतु संवैधानिक धार्मिक स्वतंत्रता, हिंदू आस्था और धर्म के मामले में इस अपमानजनक हस्तक्षेप का अधिकार मेला अधिकारियों को किसने दिया? देशभर में अपने शंकराचार्य के इस घोर अपमान से वह हिंदू आस्था आहत हुई है जो राजनीति के स्वयंभू ठेकेदारों से अलग धर्म को केवल धर्म के रूप में देखती है। कमाल है! क्या कोई सरकारी अधिकारी किसी संत से, खासकर एक शंकराचार्य से, पूछ सकता है कि ₹आप शंकराचार्य हैं, इसका सबूत दो₹? प्रयागराज मेला प्राधिकरण का वह नोटिस, जो स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को मिला है, यही पूछ रहा है। इस सवाल ने भारत के संविधान, धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार और सत्ता की मनमानी के बीच एक बड़ी लड़ाई खड़ी कर दी है। प्रयागराज प्रशासन ने यह नोटिस कैसे दे दिया? यह मामला केवल उत्तर प्रदेश सरकार का नहीं है, समूचे देश का हिंदू समाज इस नोटिस से आहत है। क्या यह नोटिस किसी अन्य पार्टी के शासन में किसी शंकराचार्य को दिया जाता, तब भाजपा चुप रहती? ऐसे देशव्यापी संवेदनशील मामले में भारत का संविधान, न्यायालय एवं आचार्य परंपरा क्या कहती है, इसका विश्लेषण आवश्यक है। माघ मेला और संगम की सदियों पुरानी पवित्र स्नान परंपरा से आस्था देशभर के हिंदुओं की जुड़ी है, लिहाजा इस गंभीर सवाल पर गहन विवेचन जरूरी है।

अकाट्य कानूनी और संवैधानिक आधार

संविधान और सुप्रीम कोर्ट का रुख यहाँ बिल्कुल स्पष्ट है:

1. संविधान का अनुच्छेद 26: यह प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय को ₹धर्म के मामलों का स्वयं प्रबंध करने का अधिकार₹ देता है। इसमें धार्मिक पदों पर नियुक्ति और उत्तराधिकार शामिल है। शंकराचार्य का पद इसी ₹प्रबंधन₹ का हिस्सा है। राज्य का इसमें हस्तक्षेप निषिद्ध है।

2. सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला – शिरूर मठ केस (1954/1980): कोर्ट ने साफ़ शब्दों में कहा था:

'A religious denomination or organization enjoys complete autonomy in the matter of deciding as to what rites and ceremonies are essential according to the tenets of the religion they hold and no outside authority has any jurisdiction to interfere with their decision in such ma1tters.'

(हिंदी अनुवाद): 'एक धार्मिक सम्प्रदाय या संगठन को यह तय करने की पूर्ण स्वायत्तता है कि उनके धर्म के सिद्धांतों के अनुसार कौन-से संस्कार और अनुष्ठान आवश्यक हैं। ऐसे मामलों में उनके निर्णय में किसी बाहरी प्राधिकारी का हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है।'

- ओंकारेश्वर पांडेय

मुक्त व्यापार समझौतों का सुकूनदेह परिदृश्य

यकीनन इस समय भारत के मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) का सुकूनदेह परिदृश्य उभरकर दिखाई दे रहा है। 21 जनवरी को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रंप ने दावोस में विश्व आर्थिक मंच की 56वीं बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मेरे करीबी दोस्त और एक सम्मानित वैश्विक नेता हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिका और भारत शीघ्र ही एक शानदार व्यापक द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) को आकार देते हुए दिखाई देंगे। इसी तरह 20 जनवरी को यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन ने दावोस में विश्व आर्थिक मंच पर अपने संबोधन में कहा कि भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) एक ऐसे ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की कगार पर हैं, जिससे दो अरब लोगों का विशाल बाजार बनेगा। यह बाजार वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग एक चौथाई हिस्सा होगा। उन्होंने इस समझौते को सभी समझौतों की जननी करार दिया है। वस्तुतः भारत और 27 देशों के ईयू के बीच एफटीए पर पिछले 18 वर्षों से जारी वार्ता अंतिम दौर में है। उम्मीद है कि 27 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित भारत-यूरोपीय शिखर सम्मेलन के दौरान यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला और यूरोपीयन परिषद के अध्यक्ष एंटोनिया कास्टा की उपस्थिति में भारत-यूरोपीय संघ के बीच एफटीए पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

गौरतलब है कि भारत और ईयू के बीच यह एफटीए एक ऐसे समय में सुनिश्चित हो रहा है, जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप भारत और यूरोपीय देशों के खिलाफ टैरिफ का इस्तेमाल करके भारत और ईयू दोनों के वैश्विक व्यापार को प्रभावित कर रहे हैं। पिछले वर्ष भारत और ईयू के बीच 135 अरब डॉलर से अधिक का व्यापार हुआ है। ऐसे में ईयू से एफटीए टेक्सटाइल व कृषि निर्यात को सबसे अधिक लाभ दे सकता है। अभी कृषि, मांस और अन्य प्रोसेस्ड उत्पादों को ईयू में निर्यात करने पर 15.2 प्रतिशत तो टेक्सटाइल व गारमेंट पर 10 प्रतिशत का शुल्क लगता है। व्यापार समझौते के बाद ईयू के बाजार में इन वस्तुओं पर शून्य शुल्क हो जाएगा और इन भारतीय उत्पादों का निर्यात ईयू के बाजार में कई गुना बढ़ जाएगा।

यह बात भी महत्वपूर्ण है कि पिछले वर्ष मार्च 2025 से भारत और अमेरिका बीच बीटीए को लेकर चली आ रही वार्ता का सातवाँ दौर 13 जनवरी से भारत में अमेरिका राजदूत सर्जियागोर की पहल पर शुरु हुआ है और अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने शीघ्र ही बीटीए के आकार लेने की बात कही है। यद्यपि 19 जनवरी को अमेरिका-भारत स्ट्रेटेजिक पाटर्नरशिप फोरम के प्रेसीडेंट मुकेश अघी ने कहा है कि अमेरिका और भारत के बीच व्यापक व्यापार समझौता आगामी तीन महीनों में संभावित है, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत के लिए बार-बार वार्ता के लक्ष्य बदले हैं। शुरुआत में ट्रंप ने कहा कि भारत अमेरिका से अधिक खरीद कर व्यापार घाटे को कम करे। उसके बाद वे रूसी तेल पर केंद्रित हो गए और पिछले दिनों यह समझौता केवल भारत द्वारा ट्रंप को खुश नहीं किए जाने से अधर में लटका हुआ बताया गया था। ऐसे में भारत के लिए उपयुक्त यही है कि वह अमेरिका के साथ व्यापार वार्ता आगे बढ़ाते हुए अमेरिका के बाजार में निर्यात मे रूकावट और ऐसे निर्यात की भरपाई के लिए नई वैकल्पिक व्यवस्था स्थापित करने की रणनीति के साथ आगे बढ़े।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि भारत के लिए पिछले वर्ष 2025 में ब्रिटेन, ओमान और न्यूजीलैंड के साथ किए गए एफटीए का इस वर्ष 2026 में कार्यान्वयन अहम होगा। विगत 22 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस्टोफर लक्सन ने भारत और न्यूजीलैंड के बीच मुक्त व्यापार समझौते की घोषणा की है। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर कहा कि भारत-न्यूजीलैंड की साझेदारी नई ऊंचाइयों पर पहुंचने वाली है। विगत 18 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और ओमान के सुल्तान हैथम बिन तारिक की मौजूदगी में मस्कट में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और ओमान के उनके समकक्ष कैस बिन मोहम्मद अल यूसुफ ने मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इस एफटीए को आधिकारिक तौर पर समग्र आर्थिक भागीदारी समझौता (सीपा) कहा गया है। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि भारत-ओमान एफटीए के तहत भारत के 98 प्रतिशत निर्यात को ओमान के बाजार में शून्य पर पहुंच मिलेगी। इसमें ओमान को होने वाले 99 प्रतिशत से अधिक निर्यात शामिल हैं। इस समझौते से भारत के कपड़ा, रत्न-आभूषण, दवाई, वाहन, कृषि उत्पाद और चमड़ा उद्योग को बड़ा फायदा होने की उम्मीद है। इसी तरह विगत वर्ष भारत और ब्रिटेन के बीच किया गया एफटीए भी महत्वपूर्ण है। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीएर स्टार्मर और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि भारत और ब्रिटेन (यूके) के बीच एफटीए से दोनों देश के बीच आपसी कारोबार ऊँचाई पर होगा और नए अवसर बेजोड़ होंगे।

इन सबके साथ-साथ इन सबके साथ-साथ 2026 में मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), ऑस्ट्रेलिया और चार यूरोपीय देशों आइसलैंड, स्विट्जरलैंड, नॉर्वे और लिकटेंस्टाइन के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (एफ्टा) के साथ एफटीए के लाभ अधिक मिलते हुए दिखाई देंगे। साथ ही वर्ष 2026 में पेरू,चिली, आसियान, मैक्सिको, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, इजराइल, भारत गल्फ कंट्रीज काउंसिल सहित अन्य प्रमुख देशों के साथ भी नए एफटीए आकार लेते हुए दिखाई देंगे। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि भारत के द्वारा विभिन्न देशों के साथ एफटीए के अधिकतम लाभ उठाने के लिए घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने, एफटीए के लिए जागरूकता बढ़ाने, गैर-टैरिफ बाधाएं दूर करने, सेवा क्षेत्र का लाभ उठाने, निर्यात में विविधता लाने, कृषि और संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा करने, व्यापार संतुलन को भारत के पक्ष में लाने के साथ-साथ, पर्यावरण और श्रम मानकों के परिपालन पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी होगा।

उम्मीद करें कि भारत एफटीए की नई आर्थिक शक्ति से निर्यात, सेवा, निवेश, तकनीकी सहयोग और पेशेवरों की आवाजाही को नई ऊँचाई देते हुए भारत को वर्ष 2028 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने की डगर पर आगे बढ़ते हुए दिखाई देगा।

-डॉ. जयंतीलाल भंडारी

झारखंड की फर्जी कंपनी मनीष इंटरप्राइज ने की 39 करोड़ रू की टैक्स की चोरी , विभाग हुआ सक्रिय

कार्तिक कुमार परिच्छा

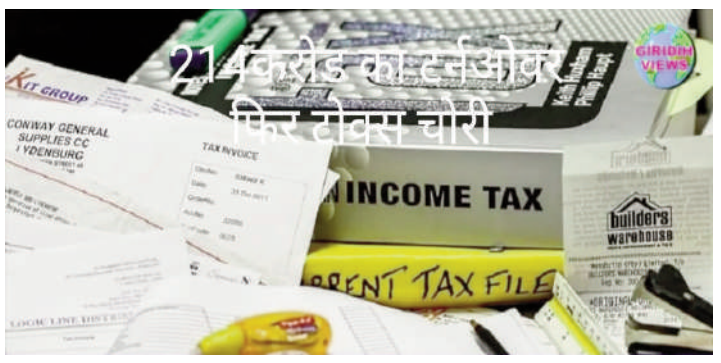

झारखंड। राची, कर वसूली विभाग ने मनीष इंटरप्राइजेज के खिलाफ जांच तेज कर दी है। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि इस फर्जी कंपनी ने महज दो-तीन सप्ताह के भीतर लगभग 214 करोड़ रुपए का टर्नओवर दिखा दिया। इस पर लगभग 39 करोड़ रुपए के टैक्स की चोरी की। मंगलवार को हुई जांच में इसका खुलासा होते ही विभाग ने त्वरित कार्रवाई करते हुए कंपनी के इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) पर तत्काल रोक लगा दी है। अधिकारियों के अनुसार जांच अभी जारी है और आनेवाले दिनों में और भी अहम खुलासे हो सकते हैं।बता दें कि मनीष इंटरप्राइजेज का रजिस्ट्रेशन राजकुमार सिंह नामक व्यक्ति के नाम पर किया गया था। कंपनी का पता तेतुलिया, निरसा दर्शाया गया था। इसके लिए मकान मालिक के रेंट एग्रीमेंट को आधार बनाया गया। जब राज्य कर विभाग को संदिग्ध लेनदेन की जानकारी मिली और अधिकारियों ने बताए गए पते पर जाकर जांच की तो पूरा मामला फर्जी निकला। जांच में सामने आया कि उस पते पर कोई कंपनी मौजूद ही नहीं थी। मकान मालिक ने भी रेंट एग्रीमेंट को फर्जी बताते हुए किसी तरह के किराए या कंपनी संचालन से इनकार किया। इसके बाद विभागीय जांच तेज कर दी गई। इसमें परत-दर-परत फर्जीवाड़े का खुलासा होने लगा है। अधिकारियों ने बताया कि एजेंसी ने जनवरी के कुछ ही दिनों में बड़ी संख्या में ई-वे बिल जेनरेट कर करीब 241 करोड़ रुपए का कारोबार दर्शाया है। इस टर्नओवर पर लगभग 39 करोड़ रुपए का जीएसटी बनता है, जिसे विभाग में जमा नहीं कराया गया। मामला संज्ञान में आते ही विभाग ने त्वरित कार्रवाई शुरू कर दी। इससे बड़े स्तर पर राजस्व नुकसान को रोका जा सका। फिलहाल संबंधित दस्तावेज, बैंक खातों और ई-वे बिल से जुड़े रिकॉर्ड की गहन जांच की जा रही है।

अधिकारियों का यह भी कहना है कि जीएसटी फर्जीवाड़े के इस मामले में विभाग पूरे नेटवर्क की पड़ताल कर रही है। आशंका जताई जा रही है कि इस कंपनी के नाम पर बड़े पैमाने पर फर्जी तरीके से ई-वे बिल जेनरेट किया गया है और उसके आधार पर माल लेन देन कर इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) लेने की तैयारी थी। विभाग यह पता लगाने में जुटी है कि मनीष इंटरप्राइजेज ने माल कहां से खरीदा और उसे कहां कहां बेचा है या सिर्फ कागजों पर टर्नओवर दिखा रही थी।

इस मामले में उन सभी को नोटिस जारी किया जा रहा है, जिन्हें माल डिलीवरी के लिए ई-वे बिल जेनरेट किया गया था। ऐसी सभी कंपनियों का पता लगाकर उसे नोटिस भेजा जा रहा है।

- अन्य औधोगिक जिलों के अधिकारी व पुलिस की कमाई पर भी केंद्रीय एजेंसी की पैनी नजर

धनबाद में 2015 से पदस्थापित डीसी ,एसपी , डीएसपी की संपत्ति अब ईडी जांच के राडार में , मचा हड़कंप

कार्तिक कुमार परिच्छा

झारखंड। सरायकेला, देश का 40% कोयला की आपूर्ति केवल झारखंड करता है । पर इस काले कोयले की काली कमाई जिन तिजोरियों मे बंद है वे सीघ्र ही बेनकाब हने जा रहे हैं ।कोयला तस्करी के सिंडिकेट में शामिल प्रशासनिक व पुलिस अफसरों की भूमिका की जांच शुरू हो गई है। ईडी ने राज्य सरकार के कार्मिक विभाग व पुलिस मुख्यालय से इस संबंध में पत्राचार कर महत्वपूर्ण जानकारियां मांगी हैं। ईडी सूत्रों के मुताबिक, साल 2015 के बाद धनबाद में पोस्टेड रहे सभी डीसी, एसएसपी, सिटी व ग्रामीण एसपी, डीएसपी के विषय में विवरण मांगा गया है। ईडी सूत्रों के मुताबिक ही 2015 से अबतक पोस्टेड रहे सभी अधिकारी जांच के दायरे में हैं।ईडी ने कार्मिक विभाग को पत्र लिखकर डीसी रैंक के अफसरों की जानकारी, उनके द्वारा सालाना दिए जाने वाले आय व अचल संपत्ति के विवरण समेत अन्य जानकारियां मांगी हैं। उसी तरह पुलिस मुख्यालय से पत्राचार कर धनबाद में पोस्टेड रहे एसएसपी, सिटी व ग्रामीण एसपी व डीएसपी रैंक के अफसरों का पैन डिटेल, आय व अचल संपत्तियों से जुड़ी सालाना जानकारी समेत अन्य विवरण मांगे गए हैं। ईडी सूत्रों के मुताबिक, धनबाद में वरिष्ठ प्रशासनिक व पुलिस अफसरों के अलावे उन थानेदारों की भी पूरी सूची व डिटेल्स एसपी कार्यालय से मांगी गई है, जो कोयला खनन व इससे जुड़े रूट के थानों में पोस्टेड रहे हैं

झारखंड व बंगाल में कोयला तस्करी के सिंडिकेट पर ईडी ने 21 नवंबर व 12 दिसंबर को दबिश दी थी। धनबाद में बड़े कोयला कारोबारी अनिल गोयल, बीसीसीएल के आटसोर्सिंग संचालक लालबाबू सिंह और उनके भाई कुंभनाथ सिंह, संजय खेमका, मनोज अग्रवाल, गणेश अग्रवाल, दीपक पोद्दार, हेमंत अग्रवाल, अरविंद सिंह समेत अन्य कारोबारियों के यहां ईडी ने छापेमारी की थी। कोयला तस्करी के अलग-अलग कांडों को जोड़कर चार ईसीआईआर दर्ज की गई थी। इन चार अलग-अलग ईसीआईआर में अनिल गोयल, लालबाबू सिंह, संजय खेमका व अमर मंडल आरोपी हैं।

21 नवंबर को ईडी ने कोयला कारोबारियों के ठिकानों पर छापेमारी की थी। उस दौरान ईडी को राज्य पुलिस के अफसरों व सरकारी पदाधिकारियों के साथ कोयला तस्करी के लिंक मिले थे। ईडी के अधिकारियों के मुताबिक, कई डिजिटल साक्ष्य मिले थे, जिसमें बड़े पैमाने पर रोजाना हो रही कोयला तस्करी के साक्ष्य उपलब्ध हैं। आने वाले दिनों में चैट से बड़ा खुलासा हो सकता है। ईडी अधिकारियों द्वारा कोयला कारोबार से जुड़े अनिल गोयल के सिंडिकेट की गहराई से जांच की जा रही है। अनिल गोयल के पुलिस व प्रशासनिक अफसरों से गहरे रिश्ते रहे हैं। ईडी अधिकारियों के मुताबिक, कोयला का पूरा सिंडिकेट प्रशासनिक व पुलिस अफसरों के संरक्षण में ही चलाया जाता है। यही वजह है कि साल 2015 से अबतक पोस्टेड रहे तमाम अफसरों को जांच के दायरे में आ गये है ।।

आगे की करवाई झारखंड के उन जिलों में भी प्रबल संभावना जान पड़ता है जहां औधोगिक वातावरण के साथ परिवहन आदि विभाग में भ्रष्टाचार में अधिकारी अन्तर लिप्त है । यहां पदस्थापित कुछ अधिकारी माला माल होते रहे हैं । नेता गण भी ईडी के डर से एक पार्टी छोड़ इधर से उधर होने के करण इलाका सुर्खियों में रहता है । इतना सबकुछ होने के बावजूद अधिकारी अपना भ्रष्ट कार्य निर्विरोध जारी रखे हुए हैं ।वैसे फरवरी प्रथम सप्ताह में महामहिम का रायरंगपुर आगमन के मद्देनजर केंद्रीय जांच एजेंसियों का आवाजाही झारखंड के इस इलाके बढ़ रही है।

हेमन्त सोरेन ने यूके की मंत्री सीमा मल्होत्रा से झारखण्ड–यूके के बीच व्यवहारिक सहयोग मांगा

कार्तिक कुमार परिच्छा

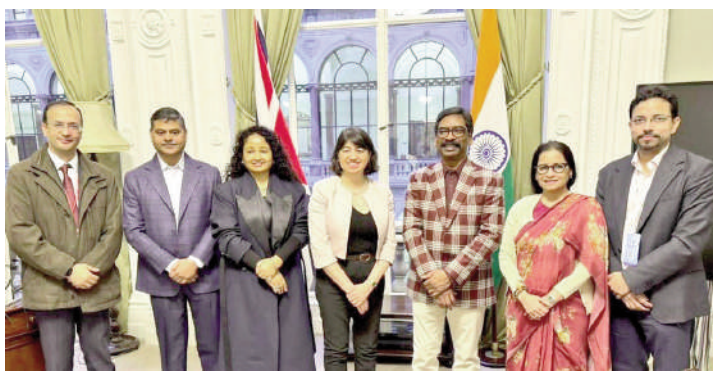

झारखंड। रांची / लंदन, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने यूनाइटेड किंगडम सरकार की संसदीय अवर सचिव (समानता एवं इंडो-पैसिफ़िक मामलों की मंत्री) सीमा मल्होत्रा से भेंट कर शिक्षा, कौशल विकास, उत्तरदायी खनन, क्लाइमेट ट्रांजीशन, संस्कृति एवं विरासत संरक्षण जैसे क्षेत्रों में झारखण्ड यूके के बीच व्यावहारिक सहयोग को सुदृढ़ करने पर चर्चा की।

यूके ने झारखण्ड सरकार की मरांग गोमके जयपाल मुंडा ओवरसीज़ स्कॉलरशिप तथा चेवनिंग मरांग गोमके जयपाल मुंडा ओवरसीज़ स्कॉलरशिप की सराहना करते हुए इन्हें भारत यूके साझेदारी का सशक्त और जीवंत उदाहरण बताया। पिछले चार वर्षों में इन योजनाओं के माध्यम से 100 से अधिक विद्यार्थियों को लाभ मिला है। दोनों पक्षों ने सस्टेनेबिलिटी-लिंक्ड स्कॉलरशिप मार्गों पर कार्य करने तथा विदेश अध्ययन को मेंटोरशिप, इंटर्नशिप, नेतृत्व विकास और सार्वजनिक सेवा अनुभव से जोड़ने के लिए एक एक निश्चित योजना विकसित करने पर रुचि व्यक्त की।

बैठक में यूके के प्रमुख विश्वविद्यालयों, स्किल्स एवं क्वालिफ़िकेशन संस्थानों के साथ संस्थागत साझेदारी की संभावनाओं पर भी चर्चा हुई। इसमें खनन प्रौद्योगिकी, पर्यावरण एवं सततता, डेटा एवं एआई, गवर्नेंस और सार्वजनिक नीति जैसे क्षेत्रों में संयुक्त शैक्षणिक कार्यक्रम, फैकल्टी एक्सचेंज, एप्लाइड रिसर्च तथा टीवीईटी और अप्रेंटिसशिप मार्गों की स्थापना शामिल है।

आर्थिक और जलवायु सहयोग के संदर्भ में मुख्यमंत्री ने उत्तरदायी खनन के क्षेत्र में यूके की क्षमताओं के साथ घनिष्ठ सहयोग का प्रस्ताव रखा, जिसमें ईएसजी सिस्टम, मिनरल ट्रेसबिलिटी, खदान सुरक्षा, स्वच्छ प्रसंस्करण तथा प्रौद्योगिकी प्रदर्शन शामिल हैं। इस अवसर पर उत्तरदायी क्रिटिकल मिनरल्स पर एक झारखण्ड–यूके वर्किंग ट्रैक स्थापित करने पर भी चर्चा हुई, जो मानकों, अनुसंधान एवं विकास, नवाचार और आपूर्ति-श्रृंखला साझेदारी को सुदृढ़ करेगा।

बैठक में यूके की जलवायु एवं वित्तीय संस्थाओं के साथ मिलकर कोयला क्षेत्रों के विविधीकरण, जलवायु अनुकूलन, श्रमिकों एवं समुदायों के समर्थन हेतु ट्रांज़िशन फाइनेंस संरचना विकसित करने की संभावनाओं पर भी विचार किया गया। झारखण्ड को "जस्ट ट्रांज़िशन" कार्यक्रमों के लिए एक पायलट राज्य के रूप में स्थापित करने तथा शहरी गतिशीलता और जलवायु वित्त को सहयोग के पूरक क्षेत्रों के रूप में चिन्हित किया गया।

संस्कृति, खेल और विरासत संरक्षण को जन-जन के बीच संपर्क बढ़ाने के सरल एवं प्रभावी माध्यम के रूप में देखा गया। मुख्यमंत्री ने भारत–यूके विरासत संरक्षण समझौते के अंतर्गत झारखण्ड के मेगालिथ और मोनोलिथ स्थलों के संरक्षण हेतु यूके सहयोग का आग्रह किया। इस संदर्भ में स्टोनहेंज जैसे वैश्विक सर्वोत्तम उदाहरणों का उल्लेख करते हुए दीर्घकाल में यूनेस्को मान्यता की दिशा में कार्य करने की बात कही गई।

मुख्यमंत्री ने मंत्री सीमा मल्होत्रा को झारखण्ड भ्रमण का आमंत्रण दिया, जिसे उन्होंने स्वीकार किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री को फ़ॉरेन, कॉमनवेल्थ एंड डेवलपमेंट ऑफिस (FCDO) मुख्यालय का भी अवलोकन कराया गया। साथ ही मंत्री मल्होत्रा ने मुख्यमंत्री को शनिवार को यूके के प्रतिष्ठित मेगालिथिक एवं मोनोलिथिक विरासत स्थल स्टोनहेंज के भ्रमण का आमंत्रण भी दिया।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस और वीर सुरेंद्र साय की जयंती पर उनकी मूर्तियों पर फूल चढ़ाए गए और उन्हें श्रद्धांजलि दी गई

मनोरंजन शासमल

भुवनेश्वर: यह बहुत बड़ा इत्तेफाक है कि भारत के दो महान सपूतों, नेताजी सुभाष चंद्र बोस और वीर सुरेंद्र साय का जन्म एक ही दिन ओडिशा की धरती पर हुआ था। हम 1857 के आंदोलन को देश का पहला स्वतंत्रता आंदोलन कहते हैं। लेकिन उससे 28 साल पहले, वीर सुरेंद्र साय ने ओडिशा में अंग्रेजों के खिलाफ हथियारबंद लड़ाई शुरू कर दी थी। सुरेंद्र साय को अपनी ज़िंदगी के 37 साल मातृभूमि के लिए लड़ते हुए बिताने पड़े और जेल में ही उनकी मौत हो गई। ऐसे स्वतंत्रता सेनानी का नाम दुनिया के इतिहास में सबसे ऊपर होना चाहिए। इसी तरह, कटक में जन्मे देश के सपूत सुभाष चंद्र बोस ने देश के लिए कई कुर्बानियां दी हैं। इन दोनों महान लोगों ने मातृभूमि की सेवा में जो वीरता और बलिदान दिखाया, वह उनके जीवन का शिखर है। अपनी हिम्मत, पक्के इरादे और मजबूत लीडरशिप से दोनों ने देश को आज़ादी की राह पर आगे बढ़ाया। राष्ट्रपति जी, उनका बलिदान हर भारतीय के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहेगा, ऐसा राज्य अध्यक्ष मनमोहन सामल ने कहा।

ओडिशा के गौरव और गौरव नेताजी सुभाष चंद्र बोस और महान स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी वीर सुरेंद्र साय की जयंती और पुण्यतिथि पर, श्री सामल ने कहा कि वीर सुरेंद्र साय और नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्वतंत्र भारत में स्वतंत्रता संग्राम की रोशनी थे। देश के लिए उनके त्याग, तपस्या, साधना और समर्पण को मापा नहीं जा सकता। दोनों स्वतंत्रता सेनानी हमेशा हमारे मार्गदर्शक रहेंगे।

आज, राज्य अध्यक्ष श्री सामल ने रसूलगढ़ में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मूर्ति और भुवनेश्वर के VSS नगर में वीर सुरेंद्र साय की मूर्ति पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर राज्य महासचिव (संगठन) मानस कुमार मोहंती, राज्य महासचिव शारदा प्रसाद सतपथी, भुवनेश्वर संगठनात्मक जिला अध्यक्ष निरंजन मिश्रा, वरिष्ठ नेता अरविंद तालुक्कु, जगन्नाथ प्रधान, प्रियदर्शी मिश्रा और अन्य नेता मौजूद थे।

ट्राइडेंट ग्रुप द्वारा स्लाइट के 100 छात्रों को प्लेसमेंट एवं 1 करोड़ रुपए की कंसल्टेंसी सहायता की घोषणा

जगसीर सिंह

लोंगोवाल। संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (स्लाइट), लोंगोवाल में एक उद्योग–संस्थान सहभागिता बैठक का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का संयुक्त रूप से आयोजन प्रो. रवि कांत मिश्रा, डीन (एलुमनी एवं औद्योगिक संबंध) तथा प्रो. सुरिंदर सिंह, डीन (अनुसंधान एवं परामर्श) द्वारा किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व प्रो. मणि कांत पासवान, निदेशक, स्लाइट

के सक्षम मार्गदर्शन में हुआ।

इस अवसर पर श्री राजिंदर गुप्ता, माननीय सांसद (राज्यसभा) एवं चेयरमैन एमेरिटस, ट्राइडेंट ग्रुप, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। एक प्रख्यात उद्योगपति एवं मालवा क्षेत्र के गौरवशाली सपूत के रूप में उनकी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष गरिमा एवं प्रेरणा प्रदान की।

मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रो. रवि कांत मिश्रा, डीन (एलुमनी एवं औद्योगिक संबंध) ने कहा कि श्री राजिंदर गुप्ता जी का प्रेरणादायक जीवन यह दर्शाता है कि दूरदर्शी सोच और दृढ़ संकल्प के साथ छोटे कस्बों से भी विश्वस्तरीय संस्थान एवं नेतृत्व विकसित हो सकता है। साधारण शुरुआत से एक वैश्विक प्रतिष्ठित उद्योग समूह की स्थापना तक की उनकी यात्रा छात्रों एवं शिक्षकों के लिए अत्यंत प्रेरक है।

कार्यक्रम में सुश्री पूजा लुथरा, चीफ ह्यूमन रिसोर्सेज ऑफिसर, ट्राइडेंट ग्रुप भी उपस्थित रहीं। उन्होंने बताया कि उनके नेतृत्व में ट्राइडेंट ग्रुप ने प्रतिभा विकास और संगठनात्मक उत्कृष्टता पर केंद्रित सशक्त, मानव-केंद्रित प्रणालियाँ विकसित की हैं। उन्होंने स्लाइट के छात्रों को उद्योग-तैयार बनने का संदेश दिया तथा ट्राइडेंट ग्रुप में व्यापक करियर अवसरों का आश्वासन दिया।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. मणि कांत पासवान, निदेशक, स्लाइट

ने व्यावहारिक प्रशिक्षण, उद्योग संपर्क तथा इन-हाउस कौशल विकास के महत्व पर बल दिया, ताकि देश की युवा शक्ति की पूर्ण क्षमता का उपयोग किया जा सके। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान स्लाइट

में प्रारंभ की गई नई शैक्षणिक, अनुसंधान एवं नवाचार पहलों की भी जानकारी दी। प्रो. पासवान ने श्री राजिंदर गुप्ता जी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने मात्र 14 वर्ष की आयु में अपनी उद्यमिता यात्रा प्रारंभ की और आज लाखों युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान कर रहे हैं—वास्तव में वे "मिट्टी के सच्चे सपूत" हैं। संस्थान के अनुरोध पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए श्री राजिंदर गुप्ता जी ने स्लाइट

के 100 छात्रों की भर्ती की घोषणा की, जिनके लिए 8–12 लाख प्रति वर्ष के पैकेज प्रस्तावित किए गए हैं, जिन्हें एक सप्ताह के भीतर अंतिम रूप दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 1 करोड़ की कंसल्टेंसी सहायता की भी घोषणा की, जो उद्योग–संस्थान सहयोग को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इन घोषणाओं का छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा अत्यंत उत्साह के साथ स्वागत किया गया।

श्री गुप्ता जी ने भारत सरकार द्वारा संत हरचंद सिंह लोंगोवाल जी की स्मृति में स्थापित स्लाइट

के विशिष्ट संस्थागत मॉडल की सराहना की तथा संस्थान के साथ अपने दीर्घकालिक जुड़ाव और निरंतर सहयोग का पुनः आश्वासन दिया।

कार्यक्रम का समापन प्रो. सुरिंदर सिंह, डीन (अनुसंधान एवं परामर्श) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। उन्होंने स्लाइट

में चल रही एवं प्रस्तावित कंसल्टेंसी तथा संयुक्त अनुसंधान गतिविधियों की जानकारी दी और स्लाइट

के छात्रों के लिए ट्राइडेंट ग्रुप द्वारा "ओपन डोर" अवसर प्रदान करने हेतु आभार व्यक्त किया। यह कार्यक्रम उद्योग–शिक्षा सहभागिता को और अधिक सशक्त बनाने तथा स्लाइट

के छात्रों एवं शिक्षकों के लिए रोजगार, कंसल्टेंसी एवं व्यावसायिक विकास के नए मार्ग खोलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ।

7वीं बटालियन राष्ट्रीय आपदा मोचन बल की टीम द्वारा गांव टल्लेवाल जागरूकता शिविर आयोजन

जगसीर सिंह

लोंगोवाल। ग्रामीणों को विभिन्न आपदाओं से बचाव, सुरक्षा उपायों, प्राथमिक उपचार तथा जीवनरक्षक तकनीकों की व्यवहारिक जानकारी प्रदान करना था।कार्यक्रम का नेतृत्व सब-इंस्पेक्टर रेख सिंह मीना द्वारा किया गया। इस दौरान टीम ने ग्रामीणों को भूकंप से बचाव, आग लगने की स्थिति में प्रतिक्रिया, ब्लीडिंग कंट्रोल, बाढ़ के समय उपयोग में आने वाले इंफ्लेटेबल फ्लोटिंग डिवाइस के संबंध में विस्तार से जानकारी दी।टीम द्वारा डेमोंस्ट्रेशन के माध्यम से प्राथमिक उपचार, सुरक्षित निकासी प्रक्रिया एवं आपदा के समय आवश्यक सावधानियों की जानकारी भी प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त ग्रामीणों को के मोबाइल ऐप्स — सचेत, मेघदूत, दामिनी एवं भूकंप — के उपयोग के बारे में जागरूक किया गया, ताकि समय रहते आपदा की चेतावनी प्राप्त कर जन-धन की हानि को न्यूनतम किया जा सके।

गाँव के सरपंच एवं ग्रामीणों ने टीम की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम ग्रामीण समुदाय में आत्मविश्वास बढ़ाने और आपदा प्रबंधन कौशल विकसित करने में अत्यंत उपयोगी हैं।

अपराधियों के खिलाफ कार्यवाही में अग्रणी बर्रा पुलिस ,50 हजार का इनामी विपिन टेड़ी गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। पीड़ितों की हर संभव सहायता के साथ ही अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई में भी अग्रणी बर्रा पुलिस की निरंतर सक्रियता ने बरदान गैलेक्सी में फायरिंग में वांछित अभियुक्त 50,000/- रूपये का इनामिया को एस टी एफ के साथ मिलकर गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार किए गए साथी अपराधी पर बर्रा समेत विभिन्न थानों में संगीन धाराओं के 16 से अधिक मुकदमे भी दर्ज हैं।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक अपराधियों के खिलाफ पुलिस को मिली यह महत्वपूर्ण सफलता पुलिस आयुक्त रघुबीर लाल द्वारा चलाये जा रहे अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध अभियान के क्रम में दक्षिण के पुलिस उपायुक्त दीपेंद्र नाथ चौधरी, अपर पुलिस उपायुक्त एवं नौबस्ता के सहायक पुलिस आयुक्त चित्रांसू गौतम के निर्देशन में कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ सक्रियता और तत्परता का परिणाम है ,जिसमें अग्रणी बर्रा के प्रभारी इंस्पेक्टर रवीन्द्र श्रीवास्तव के नेतृत्व वाली तेज तर्रार टीम में शामिल बर्रा के चौकी इंचार्ज विकास शर्मा, सब इंस्पेक्टर अंकुर विहान, संदीप कुमार सेन, प्रियांशु शुक्ला, विकास सिंह तथा एस टी एफ के प्रभारी सब इंस्पेक्टर राहुल परमार के नेतृत्व में हेड कांस्टेबल पुष्पेन्द्र सोलंकी, अरविन्व सिंह, अशोक राजपूत, चन्द्र प्रकाश, कांस्टेबल सत्यम यादव और चालक धर्मेन्द्र की टीम ने मुखबिर की सटीक सूचना पर कई संगीन धाराओं के संबंधित मुकदमे में थाना बर्रा से काफी समय से वांछित चल रहे 50 हजार के इनामियां अभियुक्त विपिन ठाकुर उर्फ विपिन टेड़ी पुत्र बीरेन्द्र सिंह निवासी ग्राम बाघ थाना मंगलपुर जनपद कानपुर देहात हाल पता एफ ब्लाक 826 बर्रा 8 माली बाली गली थाना गुजैनी को सिद्धी विनायक गेस्ट हाउस अर्रा थाना क्षेत्र हनुमन्त बिहार से गिरफ्तार करने जैसी में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। इस गिरफ्तार शातिर विपिन ठाकुर उर्फ विपिन टेड़ी के विरूद्ध जनपद के अन्य थानों में भी 16 मुकदमें दर्ज है। अब पुलिस उसके फरार साथियों की भी तलाश कर रही है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023